ISSN No 2347-7075
Impact Factor- 7.328
Volume-3 Issue-3

INTERNATIONAL JOURNAL of ADVANCE and APPLIED RESEARCH

Publisher: P. R. Talekar
Secretary,
Young Researcher Association
Kolhapur(M.S), India

Young Researcher Association

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Vol.3 Issue-3 Sept-Oct- 2022

International journal of advance and applied research (IJAAR)

A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal

Volume-3 *Issue-3*

Chief Editor
P. R. Talekar
Secretary,
Young Researcher Association, Kolhapur(M.S), India

Editorial & Advisory Board

Dr. S. D. Shinde	**Dr. M. B. Potdar**	**Dr. P. K. Pandey**
Dr. L. R. Rathod	Mr. V. P. Dhulap	Dr. A. G. Koppad
Dr. S. B. Abhang	Dr. S. P. Mali	Dr. G. B. Kalyanshetti
Dr. M. H. Lohgaonkar	Dr. R. D. Bodare	Dr. D. T. Bornare

Published by: Young Researcher Association, Kolhapur, Maharashtra, India

The Editors shall not be responsible for originality and thought expressed in the papers. The author shall be solely held responsible for the originality and thoughts expressed in their papers.

© All rights reserved with the Editors

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.3 Issue-3 Sept-Oct-2022

CONTENTS

Sr No	Paper Title	Page No.
1	संगीत का दार्शनिक स्वरूप **डॉ० अनुपमा सक्सेना**	1-3
2	कृषि मे रासायनिक उर्वरकों के उपयोग की प्रवृत्ति एवं लागत का अध्ययन **जितेन्द्र कुमार** डॉ **विकास प्रधान**	4-8
3	पंडिती साहित्य आणि समाजजीवन : एक चिकित्सक अभ्यास **Gajanan D. Jangamwar**	9-12
4	स्त्रीभ्रूण हत्येला प्रतिबंध करण्याकरिता राबविण्यात येणाऱ्या शासकीय योजनांचे अध्ययन **संगिता गंगाराम मेश्राम डॉ. लता बा. हिवसे**	13-17
5	दीनदयाळ नागरी सहकारी बँक पुरवित असलेल्या नाविन्यपूर्ण सेवा, आर्थिक व सामाजिक बांधीलकी - एक अभ्यास **डॉ. मनोजकुमार यादवराव सोमवंशी, जोशी गोविंद दिगंबरराव**	18-22
6	'चंद्रपूर जिल्ह्यातील ताडोबा अंधारी व्याघ्र प्रकल्पा शेजारील मानव व प्राणी यांच्यातील संघर्ष **डॉ. ए. आय. खान डॉ. महेश प्रभाकर रत्नपारखी**	23-32
7	आळंदीतील जलप्रदूषणाचा भौगोलिक दृष्टीकोनातून अभ्यास ***डॉ. ओमप्रकाश मुंदे डॉ. दादासाहेब मारकड डॉ. दिलीप मुळूक***	33-39
8	सहकार पंढरीचा युगपुरूष : पद्मश्री डॉ. विठ्ठलराव विखे पाटील. **डॉ.कुंदा बाळासाहेब कवडे.**	40-44
9	राजर्षी शाहू महाराजांचे शिक्षण विषयक विचार व कार्य— एक चिकित्सक अभ्यास **प्रा.डॉ.बिरादार प्रतिभा रंगराव दत्ताराम माधवराव भोसले**	45-49
10	फिनिक्सच्या राखेतून उठला मोर - जयंत पवार यांची जागतिकीकरणाचे प्रखर चित्रण करणारी कथासंग्रह **डॉ. अशोक गौरीशंकर माळगे**	50-53
11	आभासी चलन : वास्तव आणि आव्हाने **डॉ. लिलाधर डी. खरपुरिये**	54-58
12	विधार्थ्यांच्या स्व संकल्पनेचा अभ्यास **प्रा.डॉ प्रकाश जगताप**	59-61
13	पुणे शहराच्या शिवाजीनगर भागातील बांधकाम महिला मजुरांच्या सामाजिक समस्या **डॉ. राजेश्री गोखले , सुधीर रा. भालेराव**	62-75
14	प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना: एक अध्ययन **रघुबर प्रसाद सिंह, प्रो. (डॉ.) विजय कुमार यादव**	76-78

International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.3 No.3 Sept – Oct 2022

संगीत का दार्शनिक स्वरूप

डॉ० अनुपमा सक्सेना
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्षा संगीत विभाग, डीएवी (पीजी) कॉलेज, देहरादून
Corresponding Author- डॉ० अनुपमा सक्सेना
Email id: anupmasaxena77@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.7269229

सारांश

भारतीय संगीत मानव जीवन की शैली में रचा बसा प्राण है । यह कला भारतीय जीवन व दर्शन का मुख्य बिंदु रही है । संगीत आत्मिक शांति प्रदान करने की कला है। भारतीय दर्शन शास्त्र एवं ग्रंथों में मनुष्य के भावों अथवा मनस का विस्तृत वर्णन किया गया है। मानव के समस्त व्यवहार व बदलाव को मन की विभिन्न अवस्थाओं से जोड़ा गया है । भारतीय संगीत में भाव और स्वर के मिश्रण से ही दर्शन का प्रस्फुटन माना गया है। संगीत भावाभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। जिसका अध्यात्म एवं दर्शन से गहरा संबंध है। संगीत का संबंध मानव जीवन के लौकिक तथा आध्यात्मिक दोनों पक्षों से रहा है। यह जनमन रंजन एवं मोक्ष प्राप्ति का अनुकरणीय साधन माना गया है।

मुख्य शब्द: संगीत, दर्शन, योग, आध्यात्म, नाद, मनोविज्ञान, भावाभिव्यक्ति ।

प्रस्तावना

संगीत परंपरा अति प्राचीन है। यह एक कठोर साधना एवं तपस्या का प्रतीक है जिसे ईश्वर द्वारा सुंदर, मधुर अभिव्यक्ति के लिए रचा गया है। मनोवैज्ञानिक आधार पर संगीत को 'म्यूजिकोथेरेपी' का श्रेष्ठ साधन माना गया है। संगीत हृदय के समीप है , एवं भावनाओं से परिपूर्ण है। भावाभिव्यक्ति का माध्यम स्वर माना गया है । भाव और स्वर दोनों मिलकर संगीत का निर्माण करने में सक्षम हैं, इसी कारण प्राचीन संगीत पद्धतियों में स्वर को ही महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। संगीत को किसी भी प्रकार के अवयवों की आवश्यकता नहीं होती है। भारतीय संगीत में भाव और स्वर का संयोजन ही दर्शन के प्रभाव को प्रस्तुत करते हैं, एवं भावाभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है, जिनका अध्यात्म एवं दर्शन से गहरा संबंध है संगीत का संबंध मानव जीवन के लौकिक तथा आध्यात्मिक दोनों पक्षों से रहा है। भौतिक दृष्टि के आधार पर संगीत जन मन रंजन का साधन है। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से संगीत मोक्ष प्राप्ति का साधन माना गया है, जिसे भारतीय संगीतज्ञों ने देसी तथा मार्गी संगीत की उपमा दी गई है। प्राचीन इतिहास के कलेवर से यह ज्ञात होता है कि दर्शन का काल अत्यंत पुराना है जिसके विषय में अनेक भ्रांतियां प्रचलित है। फिर भी हमारे इतिहासकार एवं विद्वानों का या मानना है कि आज हम सब विज्ञान के युग में पदार्पण कर चुके हैं । जहां यह माना जाता है कि सृष्टि की रचना अरबों वर्ष पूर्व हुई थी। जिस समय दर्शन के काल के विषय में आधुनिक विचार या मान्यता थी कि बुद्ध का समय लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व माना जाता है उस समय बौद्ध दर्शन और जैन दर्शन अवैदिक दर्शन माने जाते थे। दर्शन उस विद्या का नाम है जो सत्य एवं ज्ञान की खोज करता है। व्यापक अर्थ

में दर्शन, तर्कपूर्ण विधिपूर्वक एवं क्रमबद्ध विचार ही कला है। इसका जन्म अनुभव और परिस्थिति के अनुसार होता है।[1]

दर्शन के अनेक प्रकारों में 'योग दर्शन' को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है ,क्योंकि उसका प्राणवायु से संबंध है। प्राणवायु का विशेष स्थान होने के कारण 'नाद ब्रह्म' के रूप में संगीत को भी योग के समान स्थान देकर दार्शनिकों ने दोनों को ही मोक्ष प्राप्ति का साधन माना है।[2]

विद्वान शारंगदेव जो योग दर्शन से प्रभावित थे, उन्होंने इडा, पिंगला, सुषुम्ना आदि नाडियों, मूलाधार चक्र आदि को सम्मुख रखकर नाद की विवेचना करते हुए पिंडोत्पत्ति का उल्लेख किया है एवं इसी के आधार पर उन्होंने कहा है कि सुषुम्ना से संलग्न तिरछे आकार की ऐसी 22 नाड़ियां है जिन पर वायु के दबाव से आरोह क्रम से मानक उच्च 22 ध्वनियों का प्रादुर्भाव होता है, किंतु योग, सांख्य या अन्य दर्शन शास्त्रों की ध्वनि के लिए प्रयुक्त इन अवधारणाओं का कोई स्पष्ट सैद्धांतिक प्रमाण नहीं मिलता है।[3]

संगीत मानव को शांति और सुख की अनुभूति प्रदान कराने में सक्षम है । यही ब्रह्म सहोदर के रूप में दर्शन है। संगीत और दर्शन का क्षेत्र विभिन्न होते हुए भी लक्ष्य एक ही है। अलौकिक आनंद प्रदान करना। संगीत के दर्शन का संबंध वैदिक काल से ही माना जाता है। भारतीय संगीत का पारंपरिक रूप वेदों पर आधारित है । वेद मूलतः दर्शन ग्रंथ है। वेदों में सामवेद को सर्वोत्तम माना गया है, जिसमें भारतीय संगीत का दार्शनिक स्वरूप हमें प्राप्त होता है। विभिन्न धर्मों को उच्च शिखर तक पहुंचाने में संगीत का बहुत योगदान माना गया है, इसीलिए भारतीय आचार्य, योगियों, ऋषि-मुनियों तथा मनीषियों ने परमात्मा की प्राप्ति के लिए सर्वोत्तम साधन संगीत को ही माना है। वैदिक संगीत के सामविकार की तरह आज भी बंदिशों का सौंदर्य बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रकारों तथा विकारों का आश्रय लिया जाता है। शब्दों का विकर्षण, विकार विश्लेषण आदि स्वाभाविक रूप से गायकों द्वारा लिया हुआ दीख पड़ता है।[4]

लोक व्यवहार में संगीत के दो रूप माने गए हैं। जन मन रंजन एवं भाव मय रंजन।[5] सांख्य दर्शन भारतीय 6 दर्शनों में से एक है। इसका शाब्दिक अर्थ संख्या से संबंधित है। इस दर्शन के अनुसार दुख को तीन प्रकार से वर्णित किया गया है-- (1) आध्यात्मिक (2) आदि भौतिक (3) आदि दैविक। सांख्य दर्शन के अनुसार इन तीनों से छुटकारा प्राप्त कर व्यक्ति चरम सत्य को पहुंचता है।[6]

निष्कर्ष

संगीत में दार्शनिक स्वरूप रागों द्वारा, ख्याल, ध्रुपद,धमार आदि शैली आध्यात्मिक चिंतन के क्षेत्र से जुड़ा है। संगीत का मुख्य तत्व नाद है, जिसका वर्णन संगीतज्ञों ने दार्शनिक भाषा में किया है। सांख्य दर्शन के यही तीनों यही तीनों रूप संगीत में दार्शनिक आधार पर आध्यात्मिक रूप का रागों में नाद, श्रुति,स्वर, ग्राम, मूर्छना के रूप में हमारे हृदय में संचारित होता है तब रसानुभूति प्राप्त होती है, जिससे चित्त को आनंद की प्राप्ति होती है। यही इसका आध्यात्मिक रूप है। आघिभौतिक के अंतर्गत नाद से वर्ण, वर्ण से शब्द, शब्द से वाक्य का निर्माण होता है। अधिदैविक रूप में संगीत की दृष्टि से इस अंतिम रूप में रागों के देवतामय रूप की सृष्टि होती है, जो आत्मा की अनुभूति कराने में सक्षम है। वास्तविक रूप में संगीत और दर्शन का कोई तालमेल नहीं है। दार्शनिक दर्शन मानसिक व बौद्धिक विषय है। संगीत रंजकता व सौंदर्यानुभूति प्रदान करने का विषय है। वेद

दार्शनिक ग्रंथ होने के कारण उनके मंत्र उन्हें संगीतमय बनाती हैं।

संदर्भ सूची

1. www.exoticindiaart.com
   भारतीय संगीत शास्त्र की दार्शनिक पृष्टभूमि - डा. क्यूटी बठला
2. संगीत-1981(मई) लेखिका डॉ० मधुबाला सक्सेना पृ ० -5
3. संगीत और मनोविज्ञान - डॉ० किरण तिवारी - पृ० -29
4. संगीत निबन्ध माला - डॉ० एम० विजयालक्ष्मी - पृ० - 12
5. संगीत सारांश - डॉ० ज्योति सिन्हा - पृ० - 1
6. शिक्षा के दार्शनिक परिपेक्ष - मदन मोहन श्रीवास्तव - पृ० 124 -134

International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 **Impact Factor – 7.328**
Peer Reviewed **Bi-Monthly**
Vol.3 No.3 **Sept – Oct 2022**

कृषि मे रासायनिक उर्वरकों के उपयोग की प्रवृत्ति एवं लागत का अध्ययन

जितेन्द्र कुमार[1] डॉ **विकास प्रधान**[2]
१-शोधर्थी अर्थशास्त्र विभाग, बरेली कह्लेज बरेली
२-विभागाध्यक्ष एवं सहायक प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, राजकीय महाविद्यायल बीसलपुर पीलीभीत
Corresponding Author- **जितेन्द्र कुमार**
Email id: jkguatam1995@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.7269233

सारांश

कृषि मे रासायनिक उर्वरकों का उपयोग उत्पादन बढ़ाने वाले एक साधन के रूप मे किया जाता है । रासायनिक उर्वरकों मे नाइट्रोजन युक्त, फह्स्फेट युक्त एवं पोटाश युक्त आदि उर्वरकों को शामिल किया जाता है जिसका उपयोग करने से कृषि उत्पादन ही प्रभावित नही हुआ बल्कि कृषि की लागत, भूमि की उर्वराशक्ति एवं पर्यावरण भी प्रभावित हुआ है । आज की सबसे बढ़ी समस्या रासायनिक उर्वरकों का असंतुलित अनुपात से उपयोग मे लाया जाना है । प्रस्तुत लेख मे वर्णनात्मक विधि के आधार पर प्राथमिक एवं द्वातीयक समंकों का विश्लेषण किया गया है। जिसमे रासायनिक उर्वरकों के उपयोग, उत्पादन एवं प्रभाव का अध्ययन किया गया है ।

मुख्य चर- रासायनिक उर्वरक, कृषि लागत

प्रस्तावना

भारत एक कृषि प्रधान देश है । जिसमे लगभग १२१ करोड़ जनसंख्या निवास करती है । भारत की ६५-७०: जनसंख्या कृषि क्षेत्र मे कार्यरत है जिसकी जीविका का मुख्य साधन कृषि है । कृषि भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था की आधारशीला है जिसका ग्रामीण क्षेत्र मे रोजगार और लघु एवं कुटीर उद्धोग धंधो के लिए कच्चा माल उपलब्ध कराने मे महत्वपूर्ण योगदान है । भारत मे अगर कृषि उत्पादन मे कमी आ जाए, तो उधोगों को कच्चा माल कम मिलेगा और खाधान्न आपूर्ति के लिए आयतों पर निर्भर रहना पड़ेगा । आज भारत मे कृषि उत्पादन को बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रकार के रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग किया जा रहा है । भारत मे बर्ष १९६०-६१ मे १२५ लाख टन उर्वरको की खपत हुई थी, जो बर्ष २०१९-२०२० मे बढ़कर २९३ लाख टन हो गयी उर्वरको की खपत लगातार बढ़ रही है आज भारतीय कृषक रासायनिक उर्वरको को भूमि से अधिक महत्व देते क्योकि गाव के कृषक अक्सर कहते है कि जितनी अधिक मात्रा मे रासायनिक उर्वरको का प्रयोग करोगे, उतना ही अधिक उत्पादन होगा । भारत मे कृषि उत्पादन को अधिकतम करने के लिए किसान डीएपी, एनपीके, पोटाश सुपर, यूरिया, जिंक, जाइम, कीटनाशक एवं खरपतवार नाशक आदि रासायनिकों का प्रयोग होता है जिससे अधिक उत्पादन किया जा सके । इन रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग के लिए किसान को अपनी भूमि मे आवश्यक नमी रखनी पड़ती है, यदि नमी न मिली तो रासायनिक उर्वरक फसल पर विपरीत प्रभाव पड़ता है जिसमे कृषि उत्पादन कम हो जाता है और लागत बढ जात्ती है । कृषि उत्पादन को विभिन्न साधनो के समूहिक प्रयासो द्वारा संभव बनाया जाता है । कृषि उत्पादन मे भूमि, श्रम, पूंजी, सिचाई, उर्वरक, उन्न्त किस्म के बीज, कीटनाशक दवाएं, एवं ट्रेक्टर मशीनीकरण, परिवहन, पशुधन आदि सभी साधनो की

आवश्यकता पड़ती है जिसमे रासायनिक उर्वरक एक महत्वपूर्ण कारक है। रसायनिक उर्वरकों का प्रयोग दिन प्रति दिन बढ़ रहा है । इसके साथ ही कृषि उत्पादन तथा लागत दोनों मे वृद्धि हो रही है ।

शोध समस्या

'जारथर एवं वेरी' ने लिखा कि "भारतीय आर्थिक जीवन की सबसे बढ़ी बिशेषता यह की यहहं दूसरे व्यवसायो की अपेक्षा कृषि की अधिक प्रधानता" सन १९६६-६७ की हरित क्रान्ति में जिन रासायनिक उर्वको का प्रयोग आरम्भ किया गया था उनकी कृषि के उत्पादन मे अहम भूमिका रही थी । किन्तु भारत मे रासायनिक उर्वरको का प्रयोग इतना बढ़ गया कि वह किसान की वैसाखी बन गयी, जिसके बिना वह चल नहीं सकता । जिससे उसकी आय मे वृद्धि हो । और खाध्दानों की आपूर्ति हो सके । भारत का किसान एक हेक्टर में ३५-४० कुन्टल अनाज उगा सकता जबकि आस्ट्रेलिया कनाडा एवं अमेरिका आदि देशों का किसान प्रति हेक्टर मे १००-१२० कुन्टल अनाज पैदा करता है । बर्ष २००५-०६ मे यूरिया २२० रू० प्रति बोरी, डी.ए.पी ७०० रू प्रति बोरी एवं एन पी के. का मूल्य ६५० रू प्रति बोरी था । जो बर्ष २०१९-२० मे बढ़कर यूरिया ३५० रू प्रति बोरी, डी ए पी १४०० रू प्रति बोरी तथा एन पी के १२५० रू हो गयी जिससे कृषि लागत मे वृध्दि हुई है। उर्वरकों कीमत बढ़ने से किसानों ने सस्ते दाम पर उपलब्ध नाइट्रोजन युक्त उर्वकों का उपयोग बढ़ा दिया है जिससे एन पी के का अनुपात बिगड़ गया है और भूमि की उर्वराशक्ति का ह्रास होता है जिससे कृषि उत्पादन कम और कृषि लागत बढ़ती है । जिससे कृषक घाटे मे पहुच जाता है और उसके ऊपर ऋण का बोझ बढ़ जाता है । प्रत्येक बर्ष हजारो किसान भुखमरी व आत्महत्या को मजबूर हो जाते है इस प्रकार हमने देखा है कि कृषक अधिक से अधिक उर्वरको एवं कीटनाशको का प्रयोग करने के बाद भी उनके उत्पादन मे वृद्धि नही हो रही है

शोध के उद्देश्य

(१) कृषि मे रासायनिक उर्वरकों के उपयोग एवं उर्वराशक्ति पर प्रभाव का अध्ययन ।

(२) रासायनिक उर्वरकों के उपयोग एवं उत्पादन की प्रवृत्ति का अध्ययन करना ।

शोध की विधि

अनुसन्धान एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य तार्किक एवं क्रमबध्द विधियों के व्दारा नवीन या प्रचीन तथ्यों को ज्ञात करना और इनकी क्रमबध्दताओं और अन्तर सम्बन्धो के कारण की व्याख्या तथा उनको संचालित करने वाले स्वाभाविक नियमो का विश्लेषण करना है । यह शोध प्राथमिक संमक व दितीय संमकों पर आधारित है । प्राथमिक संमकों को एकत्रित करने के लिए प्रश्नाली तैयार कर कृषको से प्रश्न पूछकर उसके उत्तर प्रदत्य आकड़ो का अध्ययन किया गया है । व्दितीय संमको की रिपोर्ट समाचार पत्रिकहँए , पुस्तक आदि से एकत्रित किया गया है।

शोध की परिकल्पनाएँ

शोध मे निम्न परिकल्पनाओ का परिक्षण करने का प्रयास किया गया है

१ रासायनिक उर्वरको के अधिक प्रयोग से भूमि की उर्वराशक्ति प्रभावित नहीं हुआ है ।

२ रासायनिक उर्वरको के प्रयोग से कृषको की कृषि लागत प्रभावित नही हुई

साहित्य पुनर्वलोकन

वर्तमान मे देश मे ५७ बड़े उर्वरक कारखाने है जिसमे सह- उत्पादन के रूप मे अमोनियम सल्फेट का उत्पादन होता है, ६० छोटे कारखाने है जिनमे सुपर फास्फेट का उत्पादन होता है । योजनाकाल मे उर्वरको के उत्पादन मे आसाधारण रूप से वृध्दि हुई सन १९५५-५६ मे नाइट्रोजन का उत्पादन मात्र ११३.४ हजार टन -६४ मे ७३.६ लाख टन तक था और बढ़कर २००४-०५ मे ११३.६ लाख मीट्रिक नाइट्रोजन का उत्पादन हुआ (**आर्थिक समीक्षा, २००५, पेज ३२६**)

भारत मे सन १९५०-५१ मे उर्वरको उपयोग ०.५ किग्रा प्रति हेक्टर था जो बढ़कर सन १९६०-६१ मे १३.१ किग्रा प्रति हेक्टर था और सन

जितेन्द्र कुमार डॉ **विकास प्रधान**

२०२०-२१ मे बढ़ कर १३७.१५० किग्रा प्रति हेक्टर है । जबकि विकसित देशो मे उर्वरक का प्रयोग दक्षिण कोरिया (४००किग्रा प्रति हेक्टर), नीदरलैण्ड (२७५ किग्रा), बेल्जियम (२२५किग्रा) और जापान मे ३४० किग्रा प्रति हेक्टर है (**भारतीय कृषि की स्थिति २०१२-१३**) ”वर्तमान मे रासायनिक उर्वरको के बिना कृषक का उत्पादन कार्य संभव नही है । यदि कृषक उर्वरको को संतुलित मात्रा मे प्रयोग करता है , तो उत्पादन बढ़ता है । ”खाद के यथेष्ट प्रयोग से उत्पादन की मात्रा तीन गुनी की जा सकती है ।“ (**चेस्टर एवं वोल्स**) वैज्ञानिको का मानना है कि नाइट्रोंजन, फास्फेट एवं पोटेशियम का प्रयोग ४ : २ : १ के अनुपात मे किया जाना चाहिए । किन्तु भारत मे सन १९९०-९१ मे यह अनुपात ६ : २.४ : १ था । उर्वरको की कीमतो वृध्दि के साथ दृ साथ इनकी मांग भी बढ़ती गई और एन६पी६के६ प्रयोगो का अनुपात बढ़कर ६.७ : २.६ : १ हो गया है । इस प्रकार से स्पष्ट है कि नाइट्रोजन (यूरिया) का प्रयोग संतुलन से दोगुना से ज्यादा हो रहा है और फास्फेट एवं पोटेशियम का प्रयोग बिल्कुल स्थिर है । लगातार असंतुलित रूप बढ़ रहे उर्वरको के प्रयोग भूमि और कृषक दोनो प्रभावित हो रहे है ।“ (**दत्त एवं सुंदरम**)

प्रसिध्दि वैज्ञानिक डह. ए.म एस. स्वामीनाथन ने उल्लेख किया है कि ”पंजाब में हरित क्रान्ति कोई अचम्भा नही है । इसकी सफलता का कारण यह रहा कि वहां १९६०-७० के दशक के मध्य मे उसकी सफलता के लिए आवश्यक सभी परिस्थियां विधमान थी यथा (१) भूमि की चकबन्दी तथा समतलीकरण, (२) भू-स्वामी द्वारा खेती जिससे भूमि मे लम्बे काल के लिए रुचि उत्पन्न हो, (३) ग्राम-संचार , (४)ग्राम- विधुतीकरण आदि है । यदि ये परिस्थियां विधमान न होती, तो पंजाब के कृषको के लिए गेहूँ तथा चावल की प्रबन्ध-प्रत्युत्तर किस्मों द्वारा उत्पादन क्षमता को वास्तविक उत्पादन मे बदलना कठिन हो जाता । उत्पादकता अन्ततः दो कारण तत्वों की परस्पर क्रिया पर निर्भर करती है I पौधे की आनुवंशिक कुशलता तथा कृषक की प्रबन्ध कुशलता । कृषको की लगन, तन्मयता, कठोर परिश्रम, जागरूकता, उत्साह तथा नवप्रवर्तन आदि भारतीय कृषि के भविष्य को परिवर्तित करने मे उत्प्रेरक का कार्य कर रहे है ।“

मृदा वैज्ञानिक श्री सचिन प्रताप तोमर ने एक संगोष्ठी मे बताया कि फसलों के उत्पादन को बढाने में उर्वरकों का अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण योगदान है, परन्तु उर्वरक के उपयोग का पूरा लाभ तभी मिल सकता है जब मिट्टी जाँच के आधार पर सन्तुलित उर्वरक के प्रयोग पर ध्यान दिया जाये। मिट्टी की उर्वरता के लिए ह्यूमस महत्वपूर्ण है। उस पर विशेष ध्यान देने से ही उर्वरता बढ़ सकती है। पौधों अथवा मिट्टी के विश्लेषण से मिट्टी में पोषक तत्वों के अभाव का पता लगता है। किंतु केवल मिट्टी के विश्लेषण से पोषक तत्वों की कमी का पता नहीं लगता बल्कि संतुलित मात्रा मे उर्वरकों के प्रयोग मे सहायक होता है I

कृषि मे रासायनिक उर्वरकों का उत्पादन, आयात एवं उपभोग की प्रवृत्ति									
वर्ष	उत्पादन			आयात			उपभोग मिलियन टन		
	नाइट्रोजन	फोस्फेटिक	पोटेसिक	नाइट्रोजन	फोस्फेटिक	पोटेसिक	नाइट्रोजन	फोस्फेटिक	पोटेसिक
१९७०.७१	८३०	२२९	०	४७७	३२	१२०	१४८७	४६२	२२८
१९८०.८१	२१६४	८४२	०	१५१०	४५२	७९७	३६७८	१२१४	६२४
१९९०.९१	६९९३	२०५२	०	४१४	१३११	१३२८	७९९७	३२२१	१३२८
२०००.	११००४	३७४८	०	१५४	३९६	१५४१	१०९२०	४२१५	१५६७

जितेन्द्र कुमार डॉ **विकास प्रधान**

०१									
२००४.०५	११३३८	४०६७	०	४११	२६६	२०४५	११७१४	४६२४	२०६०
२०१०.११	१२१५७	४२२३	०	४४६३	३८०२	४०६६	१५५८०	८०५०	३५१४
२०१५.१६	१३४१६	४३६४	०	५०६८	२८८८	२०५३	१७३७२	६०७६	२४०२
२०१६.२०	१३६८५	४७६१	०	५१६१	२४१३	२२८०	१६१००	७६६२	२६०७

Source- Depatment of Chemical and Fertilizer, Economic survey 2020, 2015

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि वर्ष १६७०-७१ मे नाइट्रोजन युक्त उर्वरक का उपयोग १४८७ मिलियन टन था जिसकी आपूर्ति ८३० मिलियन टन घरेलू उत्पादन से तथा ४७७ मिलियन टन विदेशों से आयात करके की गयी थी । जबकि फह्स्फेट युक्त उर्वरक का उपयोग ४६२ मिलियन टन रहा था जिसका घरेलू उत्पादन २२६ मिलियन टन रहा और ३२ मिलियन टन का आयात किया गया था । ये हरित क्रांति का दौर था जिसका प्रभाव भारत के कुछ हिस्सों मे देखा जा सकता था । रासायनिक उर्वरकों का उपयोग कृषि मे काफी तेजी के साथ बढ़ रहा था । वर्ष १६६० तक नाइट्रोजन युक्त उर्वरकों की खपत पिछले दो दशकों की तुलना मे ५ गुना से अधिक बढ़कर ७६६७ मिलियन टन पहुँच गयी और उत्पादन ६६६३ मिलियन टन तथा आयात ४१४ मिलियन टन पहुँच गया था जिससे स्पष्ट होता है कि कृषि मे नाइट्रोजन युक्त उर्वरकों का उपयोग तेजी से बढ़ा है । इसी दौरान फह्स्फेट युक्त व पोटाश युक्त उर्वरकों की खपत क्रमश ३२२१ व १३२८ मिलियन टन थी I जबकि वर्ष २०१६-२० मे नाइट्रोजन का उपभोग १६१०० मिलियन टन, उत्पादन व आयात क्रमशः १३६८५ व ५१६१ मिलियन टन तथा फास्फोरस का उपयोग ७६६२ मिलियन टन और पोटाश का उपयोग २६०७ मिलियन टन रहा है जिससे साफ स्पष्ट होता है कि रासायनिक उर्वरकों का असंतुलित उपयोग बढ़ा है जिससे कृषि उत्पादन मे वृद्धि हुई है । किन्तु उर्वरकों के असंतुलित प्रयोग से भूमि की उर्वशक्ति मे ह्रास हुआ है और किसानों की कृषि लागत मे वृद्धि हुई है **।** कृषि विशेज्ञाओं के अनुसार भारत मे नाइट्रोजन (छ), फास्फेट (च) और पोटाश (ज्ञ) का आदर्श अनुपात ४ : २ : १ उचित है । परन्तु यूरिया की कीमत कम होने के कारण बर्ष २००३-०४ मे यह अनुपात ६.५ : २.५ : १ पाया गया जबकि वर्ष २०१६ मे नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश के उपयोग का अनुपात ८ : ३ : १ हो गया है जिससे स्पष्ट होता है कि नाइट्रोजन का उपभोग पोटाश व फास्फोरस की तुलना ने ज्यादा हो रहा है । जिससे भूमि की उर्वराशक्ति एवं पर्यावरण का ह्रास हो रहा है।

रासायनिक उर्वरकों का प्रभाव : - आज के युग मे रासायनिक खादों का प्रयोग लगातार बढ़ता जा रहा है । इनके प्रयोग से उत्पादन मे कुछ हद तक वृद्धि तो हुई है । किन्तु इसका प्रभाव भूमि एवं वातावरण पर भी पड़ा है । रासायनिक खादों के प्रभाव को हम दो प्रकार से स्पष्ट कर सकते है । (१) सकारात्मक प्रभाव (२) नकारात्मक प्रभाव

सकारात्मक प्रभाव : - रासयानिक खादों का सकारात्मक प्रभाव यह पड़ता है कि रासायनिकों के प्रयोग से भूमि मे अल्पकाल के लिए शक्ति प्राप्त होती है जिससे फसल कुछ समय के लिए सही रहती है । और पुनः आवश्यकतानुसार इनका प्रयोग किया जा सकता है । जिससे कुल उत्पादन मे वृद्धि होती है । रासायनिक उर्वरकों के अन्य सकारात्मक प्रभावों को निम्न प्रकार स्पष्ट किया है ।

(१) भूमि की प्रजजन क्षमता मे वृद्धि करना
(२) आवश्यक पोषक तत्वों को प्रदान करना
(३) फसल को स्वस्थ्य रखना
(४) कुल उपज मे वृद्धि करना
(५) फसल को विभिन्न बीमारियों से बचना

(६) खरपतवार को नष्ट करना
(७) अगली फसल तक शक्ति को बनाए रखना
रासायनिक खादों के प्रयोग से भूमि को अधिक उपजाऊ बनाया जा सकता है । और उत्पादन अधिक किया जा सकता है, जिससे किसानो का जीवन स्तर सुधार सकता है ।

नकारात्मक प्रभाव : - रासायनिक खादों के प्रयोग से न केवल सकारात्मक प्रभाव पड़ता है । बल्कि इनके प्रयोग से नकारात्मक प्रभाव भी पड़ता है । रासायनिक खादों के अंधाधुंध प्रयोग से भूमि की उर्वराशक्ति सर्वाधिक प्रभावित होती है क्योंकि किसान आवश्यकता से अधिक रसायनिकों उर्वरकों का प्रयोग करते है । जिससे वह पूर्ण रूप से नष्ट नहीं हो पाती है और उसका प्रभाव आगे तक बना रहता है । जिसके कारण भूमि की उर्वराशक्ति नष्ट होने लगती है और उत्पादन भी कम होने लगता है । उत्पादन कम होने के कारण किसान रसायनिकों का प्रयोग ओर अधिक करते है जिससे किसान का कुल उत्पादन बढ़ सके किन्तु किसान की लागत बढ़ जाती है । इस चक्र के परिणाम स्वरूप रसायनिक उर्वरकों की खपत बढ़ जाती है और भूमि की उर्वराशक्ति कम हो जाती है । रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से केवल भूमि ही प्रभावित नहीं होती है , बल्कि जल भी प्रदूषित होता है । क्योंकि रासायनिक खादों के प्रयोग करने के बाद नमी की आवश्यकता पड़ती है भूमि मे खादों को डालने के बाद जब पानी लगाया जाता है । तो इसके मध्यम से रासायनिक पदार्थ पानी मे घुलकर जमीन के नीचे चले जाते है और इस प्रकार रसायनिकों के अधिक उपयोग से कृषि लागत बढ़ती है तथा पर्यावरण भी प्रभावित होता है ।

निष्कर्ष

रासायनिक उर्वरोकों का उपयोग, उत्पादन एवं आयात वर्ष १९७०-७१ की अपेक्षा कई गुना बढ़ गया है । जिससे एक ओर कृषि उत्पादन मे देश ने आत्मनिर्भरता प्राप्त की है तथा दूसरी ओर कृषि की लागत मे व्रद्धि हुयी है । एन पी के का संतुलित अनुपात खेती को एक नयी दिशा दे सकता है जिससे भूमि की उर्वराशक्ति बरकरार रहा सकती है । ओर कृषि लागत व पर्यावरण की लागत मे कमी लाई जा सकती है । निष्कर्ष के प्रमुख बिन्दु निम्न प्रकार है ।

१. ६६ प्रतिशत किसान रासायनिक उर्वरकों का उपयोग करते है जिसमे सिर्फ १० प्रतिशत किसानों के द्वारा भूमि का परीक्षण करवाया जाता है ।
२. प्रतिशत किसानों का मत है कि रासायनिक उर्वरकों मे सबसे ज्यादा नाइट्रोजन युक्त उर्वरकों का उपयोग करते है और शेष ३० प्रतिशत किसानो के द्वारा फहस्फेट व पोटाश युक्त उर्वरकों का प्रयोग करते है ।
३. एन पी के का अनुपात असंतुलित है जिससे भूमि की उर्वराशक्ति का क्षरण हो रही है और कृषि लागत मे वृद्धि हो रही है ।

सुझाव

१. रसायनिक उरवारकों का उपयोग करने से पूर्व मिट्टी की जांच आवश्यक है जिससे भूमि की आवश्यकतानुसार रासायनिक उर्वरकों का उपयोग सकता है ।
२. किसानों को एन पी के का उपयोग संतुलित अनुपात मे करना चाहिए ।
३. भूमि की उर्वराशक्ति बनाए रखने के लिए रसायनिक उर्वरकों के विकल्प के रूप मे जैविक खाद, देशी खाद एवं हरित खाद का उपयोग करना चाहिए ।

संदर्भ

1. Prakash J. (2017) “Agriculture Econimics” sahitya bhavan publication Agra pp. 192
2. Economic Survey 2020, 2015,and 2010 department of Chamical and Fertilizer
3. Dutt and Sundaram (2018) “Indian Economy” S. chand publication New Dehli pp. 586
4. Mishra J. P. (2018) “Agriculture Economics” sahitya Bhavan Publication pp. 263
5. Government of India, Department of Fertilisers.Ministry of Chemicals and Fertilisers. URL:http://fert.nic.in

International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 **Impact Factor – 7.328**
Peer Reviewed **Bi-Monthly**
Vol.3 No.3 **Sept – Oct 2022**

पंडिती साहित्य आणि समाजजीवन : एक चिकित्सक अभ्यास

Gajanan D. Jangamwar
S.B. College, Sheti, Dist Gadchiroli 442705
Corresponding Author- **Gajanan D. Jangamwar**
Email id: gjangamwar@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.7269240

सारांश :—

पंडिती साहित्य हे शिवकालिन आणि पेशवेकालिन म्हणजे सतराव्या आणि अठराव्या शतकातच प्रामुख्याने बहरले. आख्यान कवितेला महदाइसा ते मोरोपंत अशी पाच शतकांची परंपरा असली तरी त्या आख्यान कवितेने प्रत्यक्षात पंडिती वळण घेतले ते सतराव्या आणि अठराव्या शतकातच. मुक्तेश्वर ते मोरोपंत असा हा पंडिती कवितेचा महत्वाचा कालखंड आहे.

या कालखंडातील समाजजीवनाचे वैशिष्ट्ये

१) स्थितीशील व पुरूषप्रधान संस्कृती
२) गरजा व अर्थोत्पादनाची साधने मर्यादित
३) समाधानी व संतुष्ट समाज
४) रूढीप्रिय व धर्मनिष्ठ व्यक्ती
५) मनोरंजनाची मर्यादित साधने व कीर्तन व परंपरेचा पगडा.

पंडिती कविता आपल्या भोवतालच्या समाजाशी गरज म्हणूनच जन्माला आली. या कवितेने पौराणिक कथा, व्यक्तींची रसभरीत चरित्रे करून उत्तम जनरूचीसंवाद साधला म्हणून प्राप्त परिस्थितीशी या पंडिती साहित्याची उत्तम सांगड घातली जाऊन जवळीकता निर्माण झाली. पंडिती साहित्याशी समाजाचे दूरत्व काही प्रमाणत जाणवते यांचे कारण संस्कतनिष्टा आणि धर्मनिष्ठा होय. बहुजन समाज या काळापासून दूरच राहिला हे खरेचं. त्याची कारणे म्हणजे ही रचना समाजातील उच्चभ्रू वर्गाला रूचेल अशी अभिजात वळणाची अभिरूचिसंपन्न होती. ती संस्कृत जाणकारासाठीच होती. म्हणूनच ही संस्कृतप्रचुरता व विशिष्ट उच्चभ्रू वर्गासाठी झालेली पंडिती काव्याची निर्मिती समाजापासून दूरावा निर्माण करण्यास कारणीभूत ठरली. सामान्य माणूस या कवितेत सामावला गेला नाही. मध्ययुगीन मराठी साहित्याचे स्थूल मानाने महानुभाव साहित्य, संत साहित्य आणि शाहिरी साहित्य असे प्रमूख प्रवाह मानले जातात. मराठी साहित्यातील काही पद्यवेचे आपल्या अध्ययनात आलेले असतीलच. त्यात मुक्तेश्वर, वामन, रघुनाथ, मोरोपंत ही पंडित कवींची नावे आपल्याला ओळखीचे झाले आहेत. या पंडित कवींनी संस्कृत भाषा पचवून त्यातील संस्कृतचा वारसा आणि वळण मराठी साहित्यात आणण्याचा प्रयत्न आपपल्या कालखंडात केलेला आहे. त्यांच्या या प्रयत्नातूनच एका वेगळया अशा पंडिती साहित्याच्या प्रवाहाचा उगम झाला. संतसाहित्याचे जनसामान्यांची उत्तम पकड घेतली. त्या मानाने पंडिती काव्य वेगळयाच पातळीवर राहिले. पंडिती काव्याचा हा प्रवाह अलग का? ही पंडिती रचना एवढी स्वतंत्र्य वेगळी का राहिले, असा प्रश्न उपस्थित होतो. वरवर पाहता आपल्याला असे वाटते की, या सगळयाच पंडिती कवींनी मिळून स्वत:ला एक वेगळा वर्ग आणि कोष निर्माण केला. या कोषात त्यांनी स्वत:ला गुरफटून घेतले. त्यातच ते अधिकाधि गुंतत गेले, अडकले. समाजातील संस्कृत जाणणाऱ्या संपन्न स्थितीत जीवन जगणाऱ्या सुखवस्तू वर्गासाठीच पंडिती काव्य रूंजी घालण्याची प्रवृत्ती , या एका अर्थाने समाज विन्मुखता या साहित्य प्रवाहात होती. त्यात आपले स्वत:चे अस्तित्व टिकवून ठेवण्याचा प्रयत्न पंडितांनी केलेला दिसतो.

बीजशब्द :– पंडित, समाज, जीवन, प्रवाह, आख्यान, संस्कृती, रस,

प्रस्तावना :

मध्ययुगीन मराठी साहित्यात अनेक प्रवाह एकाच वेळी अस्तित्वात आणि रूढ होते. असे दिसते. पंडिती साहित्याची परंपराही अशीच थेट तेराव्या शतकापासून अठराव्या शतकापर्यंत आहे. तेराव्या शतकातील महदंबेच्या धवळयापासून ते अठराव्या शतकातील मोरोपंताच्या 'कुशलवोपाख्यान' पर्यंत अथवा निरंजन माधवांच्या ' सुभद्राचंपू' पर्यंत मराठी आख्यान कवितेने आपले वेगळेपण आणि स्वतंत्र प्रवाह टिकविला आहे. पंडिती साहित्य म्हणजे मुक्तेश्वर, रघुनाथ पंडित, वामन पंडित, श्रीधर, सामराज, विठ्ठल निरंजन माधव, मोरोपंत इत्यादी कवींनी निर्माण केलेले पांडित्यपूर्ण काव्य या काव्याच्या संदर्भात समाजजीवनाशी त्याची जवळीकता होती की, दुरत्व होते हा प्रश्न महत्वाचा आहे. पंडिती साहित्याचे स्वरूप, प्रेरणा आणि त्याला पडणाऱ्या मर्यादा याचा विचार करणेही आवश्यक आहे. या उपनिर्दिष्ट कवींच्या समकाळातील किती आणि कोणकोणत्या समाजगटापर्यंत यास पंडिती काव्याचे आवाहन जाऊन पोहोचले होते किंवा पोहचले नव्हते, त्यामागची कारणे आणि परिस्थिती कोणती आणि कशी होती याचा विचार करणे आवश्यक आहे. सकृतदर्शनी पंडिती साहित्य समाजजीवनापासून दूर, अलिप्त राहिल्यासारखे वाटते. पण प्रत्यक्षात पंडिती काव्याची समाजजीवनाशी एक जवळीकही तेवढ्याच तिव्रतेने प्रस्थापित झालेला आहे. '' काही तरी तरावया गावे'' असा हेतू पंडिती काव्य निर्मितीचा होता, पण तो वरवरचाच हेतू ठरला. प्रत्यक्ष पंडिती काव्यात संस्कृतमधील पुराण ग्रंथाच्या आधाराने, आपल्या विद्वतेच्या प्रसिद्दीसाठी, विषयनिष्ठ, कथात्मक काव्य लिहावयाची प्रेरणा दिसते. त्यामुळेच पंडिती काव्याचा प्रवाह अन्य सरहित्य प्रवाहून अलग झाला. रामायण, महाभारत, भागवत इत्यादी आर्ष (प्राचीन, ऋषिप्रणित) महाकाव्यातील कथोपकथा पंडिती कवींनी आपल्या काव्यग्रंथाच्या निर्मितीसाठी निवडल्या.

पंडितीसाहित्यांच्या प्रेरणा आणि स्वरूप संस्कृत काव्यग्रंथामध्ये आढळते. अक्षरगणवृत्ते, अलंकार, संस्कृतप्रचुरता यांचाच अवलंब पंडिती काव्यात आहे. या संस्कृतनिष्ठ पंडिती काव्यांच्या मर्यादांचा विचार करताना लक्षात येते की, स्वत:च्या पांडिताच्या अवाजवी प्रदर्शनातून सर्वसामान्यांच्या भावजीवनापासून आणि बोलीभाषेपासून पंडिती काव्य अलगच राहिले. त्यांनी जनरूची संवाद आणि समाजाशी जवळीक साधली नाही. संत ज्ञानेश्वर, रामदासांसारख्या संतकवींना आपापले पंथ किंवा संप्रदाय होते. तसे पंडितकवी कोणालाही एका पंथाला किंवा संप्रदायाला बांधलेले नव्हते. त्यामुळे त्यांनी आपले सारे स्वत्व आणि कवित्व कला विलासासाठीच पणाला लावले. पंडित कवींचे काव्य संत कवींसारखे केवळ उत्स्फूर्त किंवा आत्मपर नाही तर ते कौशल्यपूर्णतेने रचलेलले, अलंकाराच्या हौशीमूळे दुर्बोध व जड शब्दयोजनेमुळे संस्कृतच्या अतिरेकी अवलंबनामुळे सर्वसामान्यांच्या मनाला पंडिती काव्य साद घालू शकले नाही. एका विशिष्ट संस्कृत जाणकार रसिक वर्गापुरतेच त्यांचे काव्य सिमित झाले. पंडिती काव्याच्या आकलन व आस्वादालाही मर्यादा पडली. पंडिती कवींनी आपल्या काव्य लेखनात स्वकाल विशेष नोंदविण्याचा आणि चित्रणाचा मोह आवरला नाही, त्यामुळे कालव्यत्यास आणि कालविपर्यासाचे दोष आढळतात. या काव्यात कालविसंगत तपशिल भरला जातो आणि पंडितांना जाणवणाऱ्याच आदर्शवादाला येथे थारा मिळतो. याचा परिणाम म्हणून पंडितीसाहित्य प्रवाहाच्या कक्षा सिमित झाल्या. त्यांच्या प्रतिभाजनित काव्यगुणांपेक्षा त्यांच्या काव्यदोषांकडे लक्ष एकवटले.

पंडितकवी : कालखंड

पंडिती कवींच्या काव्यलेखनाचा कालावधी प्रामुख्याने यादवकाल, शिवकाल, आणि पेशवेकाल आहे. या कालातील संस्कृत जाणणाऱ्या विद्वान, पंडिती काव्याची निर्मिती केली. ती प्रामुख्याने याच समाजातील उच्चभ्रु ब्राम्हणवर्गासाठी असे म्हणावयाचे कारण संस्कृत जाणणारा सुशिक्षित वर्गाने, अशाच संस्कृत जाणणाऱ्या समाजातील सुसंस्कृत आणि सुशिक्षित वर्गासाठीच लेखन केले. पुढे किर्तन परंपरेतून पंडिती साहित्यातील आख्याने सर्व समाजापर्यंत पोहोचली, त्यांची लोकप्रियता एवढी की, ती आख्याने त्यांच्या चाली, राग त्यातील पद्यप्रकार व वृत्ते आणि अलंकार लोकांच्या लक्षात

राहिली. त्यातील श्लोक लग्नाच्या जेवणावळीत चालीवर म्हटल्या जाते. अशी ही लोकप्रियता वामन, मोरोपंत, श्रीधर कवींच्या वाटयाला अगदी मनसोक्तपणे आलेली आहे. संत ऐकनाथ –तुकाराम– रामदास यांच्यासारख्या संतकवींनी मराठी वाङ्‌मय अध्यात्म आणि भक्तीच्या ओठीनेच निर्माण केले होते.

अ) मुक्तेश्वर :– संस्कृतचा प्रभाव

संत एकनाथांचे नातू मुक्तेश्वर भक्तीच्या आणि अध्यात्माच्या आवर्तातून बाहेर पडून नावाप्रमाणे आपल्या मुक्त प्रतिभेने नवा मार्ग चोखळीत होता. रामायण ग्रंथाचे त्यांना आकर्षण वाटले. रचणेतील सोपेपणा टाळून वृत्तबद्व रामायण लिहण्याचा प्रयत्नही त्यांनी केला. त्यामूळे 'कविता गवता ऐसी उदंड' वाढलेली होती. त्यापेक्षा हे काव्यलेखन वेगळे ठरले. नवरसप्रचुर अशा महाभारतातील '' लोकचरित्र'' त्यांनी सांगीतले. समाजातील समकालिन जीवनाचे चित्रण ाकरण्या इतपत परंपरेचा भंग मुक्तेश्वरांना करता आला नाही, कारण याच परंपरा न त्यजिल्यामुळे मुक्तेश्वर आणि त्यांचे काव्य समाजाशी जवळीता राखू शकले, अन्यथा दुरत्व निर्मितीला अवसर मिळाला असता.

आ) समाजाशी आंतरसंबध :–

मुक्तेश्वरांनंतरच्या काळात रचना करणाऱ्या श्रीधरांचा परामर्श घेतला म्हणजे दुसरी बाजू उलगडते. कारण श्रीधर हे समाजाशी विशेष जवळीक निर्माण केलेले पंडित आहेत. आजही त्यांच्या 'पांडवप्रतापाचे' श्रावण महिन्यात नित्य नियमाने खेडोपाडी वाचन होते. मुक्तेश्वरांसारखेच श्लोकबद्व रचना श्रीधरांनी नंतर स्विकारली. श्लोकापेक्षा ओवी माध्यम अधिक सामांन्यांपर्यंत जाऊन पोहचणारे म्हणून तो छंद योजीला असावा. श्रीधरांनी समाजाशी विशेष जवळीक साधली कारण मुक्तेश्वरांपेक्षा शृंगाररस वर्णनात त्यांनी अधिक संयम राखला. श्रीधरांची भाषाही सोपी, परिचीत आणि अलिकडच्या काळातील होती.

पंडिती साहित्य आणि समाजजीवन यातील जवळीक आणि दुरत्व अभ्यासतांना पंडिती काव्याचा इ.स. १६०८ ते १७७४ हा कालखंड आपल्या समोर येतो. प्रमुख पंडित कवींच्या कालखंडाचा तपशिल खालील प्रमाणे.

१) मुक्तेश्वर – १६०९ ते १६९०
२) वामन पंडित – १६०८ ते १६९५
३) सामराज – १६०८ ते १६८८
४) नागेश – १६१८ ते १६९३
५) विठ्ठल बीडकर – १६२८ ते १६९०
६) निरंजन माधव – १६०३ ते १६९०
७) श्रीधर – १६५८ ते १७२९
८) मोरोपंत – १७२९ ते १७९४

यावरून लक्षात येईल की, प्रामुख्याने सतराव्या आणि अठराव्या शतकात पंडितीसाहित्य जन्मले, वाढले तेव्हा सतराव्या आणि अठराव्या शतकातील समाजजीवन आणि चालीरिती यांचा येथे अभ्यास व या कालखंडाच्या प्रेरणा आणि प्रतिसाद कसे होते ते पाहणे आवश्यक आहे.

१) प्राचीन कथांचा उपयोग :–

रामायण, महाभारतातील व भागवतातील जूनी कथानके, त्यातील भव्यदिव्य व्यक्तिरेखा, शाश्वत चिरंतन मुल्यांचे आविष्कार यांच्या जीवनावरील प्रभाव पिढ्यानपीठ्या चालत आलेल्या आहेत. मानवी मनाचा आणि जीवनाचा सत्व या कथामधून गाढलेला असल्याने या कथा चिरंजीव झाल्या आहेत. म्हणून समाजाशी फटकुन न वागता राम कृष्णासारखे वीर, धीरोदत्त नायक, सीता, द्रोपदी, रूख्मिणी, सुभद्रा, सावित्रीसारख्या सुंदर– सुशील नायीका ही चित्रणे भारतीय संस्कृतीचा वारसा मिरविणारी ठरली म्हणूनच पंडित कवींनी याच कृष्ण–रूख्मिणी, राम– सीता, अर्जुन–द्रोपदी–सुभद्रा यांच्या कथा मनापासून फुलवीत राहाव्याशा वाटल्या. यात त्या काळातील समाजाशी फटकून वागणे नव्हते तर उलट समाजाची ''मागणी तसे पुरवठा'' या न्यायाने या पंडित काव्याचेच पेव फुटले असे म्हणता येईल.

२) पौराणिक कथा पण मांडणीत विविधता :–

आख्यान कविता म्हणजे 'ख्यात' प्रसिद्ध– कविता त्यामधील राम–कृष्ण, सीता–रूख्मीणी या सर्वांच्या परिचयाच्या व्यक्ति आणि सीता– स्वयंवर, रूख्मिणी–सुभद्राहरण, द्रोपदी–स्वयंवर यांच्या सारख्या घटना, प्रसंग त्यातील तपशिलासह पूर्वापार चालत आलेल्या आणि माहित असलेले, त्यामूळे एक तऱ्हेचा जनरूचीसंवाद साधला गेला आणि निवेदन पद्धतीला महत्व आले. कथा तीच पण कथाशैली, रचनेतील कौशल्य, व्युत्पन्नत्ता, व्यासंग,

अभ्यास याला येथे विशेष महत्व आले. विविध वृत्तांचा वापर, यमक—अनुप्रासादीकप्रियता, रचनाशैथिल्य, कालविपर्यास, शृंगाराची रसभरीत वर्णने, विषयातील तोच तोपणा, विषय बदलला तरी लेखनपद्धतीची धारणा तीच ठरली.

३) रसोत्कट आविष्कार :—

पंडित कवींनी आपल्या काव्याचे विषय कोणत्यातरी प्राचीन महाकाव्यातून, दंतकथातून पूर्वागत वाङ्मयातुन बीजरूपाने त्या त्या ठिकाणाहून घेतलेले असले तरी त्याची घडण आणि रसोत्कट भावपूर्ण, स्वकालोचित रचना त्यांची स्वत:ची आहे. बीजाचा वृक्ष निर्माण करण्याचे सामर्थ्य या मुक्त मयूरांच्या प्रतिभाशक्तीत आणि मानवी स्वभावाचे बहूविध अंगानी दर्शन घडविणे यात त्यांनी आपले सामर्थ्य आणि कलाकौशल्य, समाजनिष्ठ राहूनच पणाला लावले आहे. पूर्वकवींचे आणि आपल्या भोवतालच्या समाजाचे संस्कार घेऊनच आपल्या प्रतिभेच्या उन्मेषांनी ही काव्यनिर्मिती पंडित कवींनी केली आहे.

४) आख्यान काव्य व परंपरा :—

मराठी आख्यान काव्याची, कवितेची परंपरा महदाइसा ते मोरोपंत अशी ५०० वर्षाची असुन या परंपरेला समृद्ध करण्यात मराठी पंडित कवींनी काळ आणि समाजाच्या अनूरोधाने व उद्देशाने आणि रचनेत बदल वा फेरफार करून जी नवी गती दिली ती महत्वाची आहे. पूराणातील कथा घेऊन, संस्कृत महाकाव्याच्या शब्दाची रचना करून मुळ कथेला रंग चढविला त्याचप्रमाणे ना कथा ना काव्य अशी स्थितीही प्राप्त करून दिली. कालमानानूसारच हे घडत गेले.

शोध :—

१) पंडित काव्याची परंपरा समाजापासून वेगळी, स्वतंत्र, विशिष्ट वर्गापूरती मर्यादित राहीली का? याचा शोध घेता येईल.

२) श्रोतूसापेक्ष, कथात्मकता, आध्यात्मिकता, नवरसाचा जाणीवपूर्वक वापर, रसिकता ही पंडित काव्याची वैशिष्ट्ये तपासता येतील.

३) पंडिती काव्य समाजापासून दूरावण्याची कारणे शोधता येईल.

४) पंडित साहित्याचा कालखंड शोधता येईल.

५) पंडित काव्याचे समाजाशी असलेले अनुकूल व प्रतिकूल संबंध शोधता येईल.

उद्देश :—

१) पंडित कवींच्या सभोवतालचे समाजजीवन जाणून घेता येईल.

२) समाजजीवनाशी असलेले पंडिती साहित्याचे नाते तपासता येईल.

३) समाजजीवनापासून पंडिती साहित्य दूर राहिल्याची कारणमीमांसा करता येईल.

४) पंडित साहित्याच्या समाजजीवनाशी असलेला जवळीकतेची कारणमीमांसा ध्यानात येईल.

निष्कर्ष :—

सतराव्या आणि अठराव्या शतकात पंडित साहित्य जन्मले, वाढले, तेव्हा सतराव्या आणि अठराव्या शतकातील समाजजीवन आणि चालिरीती यांचा येथे अभ्यास करणे व या कालखंडाच्या प्रेरणा व प्रतिसाद समजून घेणे आवश्यक आहे. तसेच संस्कृतदर्शनी पंडित साहित्य समाजजीवनापासून दूर अलिप्त राहिले का? किंवा प्रत्यक्षात पंडित काव्याची समाजजीवनाशी जवळीकता होती हे स्पष्ट करता येईल.

संदर्भग्रंथ :—

१) नांदापूरकर ना. गो. — मराठी महाभारताचे स्वातंज्य.

२) जोग रा. श्री. — मराठी वाङ्मयाभिरूचीचे विहङ्गमावलोकन

३) मालशे श. ग. (संपादक) मराठी वाङ्मयाचा इतिहास

४) संपादक : बनहट्टी श्री. ना. नलदमयंती स्वयंवराख्यान

International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 **Impact Factor – 7.328**
Peer Reviewed **Bi-Monthly**
Vol.3 No.3 **Sept – Oct 2022**

स्त्रीभ्रूण हत्येला प्रतिबंध करण्याकरिता राबविण्यात येणाऱ्या शासकीय योजनांचे अध्ययन

संगिता गंगाराम मेश्राम [१] **डॉ. लता बा. हिवसे** [२]
(संशोधन विद्यार्थीनी)
आर.डी.आय.के. महाविद्यालय, बडनेरा—अमरावती
Corresponding Author- **संगिता गंगाराम मेश्राम**
Email id: sangitameshram233@gmail.com

DOI- 10.5281/zenodo.7269242

गोषवारा :

स्त्रीभ्रूण हत्या हा विषय अतिशय गंभिर असून यामुळे स्त्रीयांच्या अस्तित्वाला धोका निर्माण झाला आहे. अशा या स्त्रीयांचे प्राणहरण करणाऱ्या समस्येची तीव्रता कमी करण्याकरिता किंवा ही समस्या समुळ नष्ट करण्याकरिता भारत सरकारने मुलींच्या कल्याणाकरिता काही शासकीय योजना कार्यान्वित केल्या. त्यामध्ये, सुकन्या, समृध्दी योजना, माझी कन्या भाग्यश्री, बेटी बचाओ, बेटी पढाओ, महाराष्ट्र राज्याची सुकन्या योजना, सबला योजना, किशोरी शक्ती योजना, धनलक्ष्मी योजना, बालिका समृध्दी योजना, लाडली योजना, बालसंगोपन योजना, एकात्मिक बालविकास योजना, पोषण कार्यक्रम, इंदिरा गांधी मातृत्व सहयोग योजना, उडानं योजना या सारख्या योजना सुरु करुन स्त्रीपुरुषातील भेदभाव दूर करण्याचा प्रयत्न केला आहे. स्त्रीपुरुष समानता समाजात प्रस्थापित करणे, लिंग गुणोत्तरात वाढ करणे, तसेच स्त्रियांचे समाजातील अस्तित्व टिकविणे हे या योजनेमागील प्रमुख हेतू आहेत.

प्रस्तावना :

मानव जातीची उत्पत्ती जेथून आहे, ती जी आपल्याला या जगात आणते, जिच्यामुळे या सुंदर सृष्टीत आपलं आगमन होत. ती अतिशय सुंदर, प्रेमळ, व्यक्ति म्हणजे स्त्री. स्त्री शिवाय या सुंदर विश्वाची कल्पना करणे अशक्य आहे. समाजाचे सातत्य टिकविण्याकरिता स्त्रीचे अस्तित्व असणे, अतिशय आवश्यक आहे. परंतु पुरुषप्रधान संस्कृती, पुरुषांना प्रथम स्थान, कुटुंबात व समाजात पुरुषांना अधिक महत्त्व, मुलगा वंशाचा दिवा, संपत्तीचा वारसदार, हुंडा पध्दती, विवाहाचा भरमसाठ खर्च या सर्व कारणांमुळे स्त्रीचे महत्त्व हळूहळू कमी केले, आता तिच्या अस्तित्वाला धोका निर्माण झाला आहे. या समाजात जेवढा पुरुष महत्त्वाचा आहे तेवढीच स्त्री देखील महत्वाची आहे. त्यामुळे तिच्या अस्तित्वाचे रक्षण करणे हे जागृत समाज, सामाजिक संघटना तसेच शासनाचे प्रमुख कर्तव्य आहे. देशातील स्त्री—पुरुष प्रमाणात समानता आणणे. कारण पुरुषांच्या प्रमाणात स्त्रीयांचे प्रमाण कमी आहे.

उद्दिष्टे :

१. एकूण लोकसंख्येमध्ये स्त्रीयांचे प्रमाण अभ्यासणे.
२. समाजातील स्त्रीयांचे स्थान अभ्यासणे.
३. स्त्रीभ्रूण हत्येची कारणे अभ्यासणे.

४. स्त्रीभ्रूण हत्येचे समाजावर होणाऱ्या परिणामांचे अध्ययन करणे.

गृहितके :

१. एकूण लोकसंख्येमध्ये पुरुषांच्या तुलनेत स्त्रीयांचे प्रमाण कमी आहे.
२. समाजात स्त्रीयांना पुरुषांच्या तुलनेत दुय्यम स्थान आहे.
३. स्त्रीभ्रूण हत्येची कौटुंबिक, सामाजिक तसेच मानसिक कारणे आहे.
४. स्त्रीभ्रूण हत्येचे समाजावर प्रतिकूल परिणाम दिसतात.

'ईश्वराला प्रत्येक व्यक्तिच्या घरी जाता येत नाही म्हणून त्याने अतिशय सुंदर अशा आईची रचना केली.' जिच्यामुळे या विश्वाला सौंदर्य प्राप्त झालं. अशी 'आई' या शब्दात संपूर्ण विश्वाचे सत्य दडले आहे. त्या आईलाच आज संपवलं जात आहे. 'आई विश्वाची निर्मिती' या वाक्यातच स्त्रीत्वाची महिमा आहे.

स्त्रीभ्रूण हत्या समाजाला लागलेली घातक किड आहे. पुरुष प्रधान संस्कृती आणि पुरुष वर्चस्वी समाज अशा प्रकारची मानसिकता समाज आणि कुटूंबात असल्यामुळे मूलांच्या जन्माला प्राधान्य देवून मुलींच्या जन्मास विरोध केला जातो. अशा प्रसंगी आईच्या पोटातील गर्भाचे लिंग निदान करुन तो गर्भ स्त्रीचा असल्यास गर्भपात करुन तिला नष्ट करण्यात येते. यालाच स्त्रीभ्रूण हत्या असे म्हणतात.

'Prenatal disclosure of sex of foetus is prohibited under law.'

''स्त्री गर्भलिंग निदान करुन गर्भपात करणे, याला स्त्रीभ्रूण हत्या संबोधले जाते.''

भारतातील लिंग गुणोत्तर

वर्ष	पुरुष	स्त्री
२००१	१०००	९३३
२०११	१०००	९४३
२०११ (० ते ६ वर्षे)	१०००	९१९

महाराष्ट्रातील लिंग गुणोत्तर

वर्ष	पुरुष	स्त्री
२००१	१०००	९१३
२०११	१०००	८८३
२०११ (० ते ६ वर्षे)	१०००	८९४

२०११ च्या जनगणनेनुसार स्त्री—पुरुष प्रमाण १००० पुरुषांमागे फक्त ८८३ स्त्रींया आहे. आपल्या वंशाला दिवा मिळाला पाहिजे म्हणून नवस करण्यासाठी अनेक जोडपी परळीला येतात. परळी हे गर्भपात केंद्राचे गाव म्हणून कुख्यात आहे. नवसाच्या बरोबरीने ही गर्भलिंग चाचणी करुन घेण्यात येते व खुलेआम गर्भपात केले जातात. याचाच परिणाम म्हणून नाल्यामध्ये नऊ (९) स्त्री अर्भके आढळली. महाराष्ट्रातील सहा वर्षाखालील बालिकांचे दरहजारी प्रमाण ८९४ इतके कमी झाले आहे. सर्वसाधारणपणे लिंग गुणोत्तर १०००:९५२ असावे. हा निकष गृहित धरला तर गेल्या एक दशकामध्ये महाराष्ट्र राज्यात ४ लाख, ६८ हजार, ६८० स्त्रीभ्रूण हत्या झालेल्या आहे. देशात वाढत्या स्त्रीभ्रूण हत्येला आळा घालण्याच्या उपायांतर्गत केंद्र सरकारने मुलींसाठी त्यांच्या विकासाकरिता काही कल्याणकारी योजना सुरु केल्या आहे. स्त्रीभ्रूण हत्येला प्रतिबंध घालण्याकरिता राबविण्यात येणाऱ्या शासकीय योजना पुढीलप्रमाणे —

- **सुकन्या समृद्धी योजना :**

केंद्र सरकारने मुलींसाठी दि. २२ जानेवारी, २०१५ रोजी हरियाणातील पाणिपत येथे ‘सुकन्या समृद्धी’ ही स्वतंत्र बचत योजना सुरु केली आहे. राष्ट्रीय बचत संस्थेमार्फत या योजनेचा आराखडा नागपूर येथे तयार केला. देशभरातील मुलींचे प्रमाण कमी असलेल्या जिल्ह्यासाठी ही योजना सुरु करण्यात आली. या योजनेमध्ये महाराष्ट्र आणि उत्तर प्रदेशातील सर्वाधिक १० जिल्ह्यांचा समावेश करण्यात आला. महाराष्ट्रातील बीड, जळगाव, नगर, बुलढाणा, औरंगाबाद, वाशिम, कोल्हापूर, उस्मानाबाद, सांगली आणि जालना या जिल्ह्याचा या योजनेत समावेश करण्यात आला. मुलींचा घटता जन्मदर लक्षात घेवून समाजातील लिंग गुणोत्तराचे विषम प्रमाण दूर करण्याच्या उद्देशाने ही योजना सुरु करण्यात आली. या योजने अंतर्गत मुलींचे पालक तिच्या जन्मानंतर ती दहा वर्षाची होईपर्यंत कोणत्याही टपाल कार्यालयात किंवा कोणत्याही वाणिज्यिक बॅकाच्या अधिकृत शाखेत तिचे जन्म प्रमाणात सादर करुन केवळ एक हजार रुपयाच्या ठेवीवर खाते उघडून एका वित्तीय वर्षात जास्तीत जास्त १ लाख ५० हजार रुपयापर्यंतची गुंतवणुक या खात्यात करता येईल. मुलगी १० वर्षाची झाल्यावर तिचे खाते व्यवहार करण्यास पात्र असेल. खात्याची मुदत २१ वर्षाची राहिल. बालविवाह टाळण्याच्या उद्देशाने हा निर्णय घेण्यात आला आहे. मुलींच्या उच्च शिक्षणाची गरज पूर्ण होण्याकरीता १८ वर्षाची झाल्यावर ५०टक्के रक्कम खात्यातून काढता येईल. या योजनेच्या ब्रॅड ॲम्बेसिडर माधूरी दिक्षित आहेत. सामान्य जनतेला प्रोत्साहित करुन ही योजना यशस्वी करण्याच्या हेतूने त्या सतत कार्यरत आहे.

- **माझी कन्या भाग्यश्री :**

जागतिक महिला दिनाचे औचित्य साधून राज्याच्या महिला आणि बालविकास खात्याने ‘बेटी बचाओ, बेटी पढाओ’ अंतर्गत भाग्यश्री योजनेचा शुभारंभ दिनांक ८ मार्च, २०१५ रोजी मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस यांच्या हस्ते झाला. या योजनेत फक्त एकाच मुलीच्या जन्माचे स्वागत करण्यासाठी सरकार तर्फे ५ हजार रु. दिले जाणार आहे. मुलगी ५ वर्षाची होईपर्यत प्रतिवर्षी २हजार रुपया पर्यंत म्हणजे १० हजार रुपये प्राथमिक शिक्षणासाठी प्रति वर्ष २५०० रु. प्रमाणे ४ वर्षे करीता १० हजार रुपये, मुलीच्या माध्यमिक व उच्च माध्यमिक शिक्षणासाठी प्रतिवर्षी ३ हजार रु प्रमाणे ८ वर्षासाठी २४ हजार रुपये अशा स्वरुपाची तरतूद केली आहे. जन्मक्रम दुसऱ्या मुलीसाठी २५००, ५०००, १६०० रुपये अशी तरतूद आहे. या योजनेच्या माध्यमातून ज्या गावामध्ये वर्षभरात मुलींचा जन्मदर मुलांच्या जन्मदरापेक्षा जास्त असेल त्या गावांना प्रत्येक वर्षी ५ लाख रुपये बक्षिस देण्यात येणार आहे.

- **बेटी बचाओ, बेटी पढाओ :**

माननिय पंतप्रधान श्री नरेंद्र मोदी यांनी २२ जानेवारी, २०१५ रोजी हरीयाणा राज्यातील पाणिपत या जिल्ह्यामध्ये ‘बेटी बचाओ, बेटी पढाओ’ या केंद्र सरकार नियोजित योजनेचे उद्घाटन केले. लिंग गुणोत्तरात देशातील सर्व राज्यांच्या क्रमवारीत हरीयाणा राज्याचा क्रम सर्वात खालचा लागतो. या पार्श्वभूमिवर देशाचे पंतप्रधान तुमच्याकडे हात पसरवून उभा आहे आणि देशातील मुलींच्या दीर्घ आयुष्याची भीक मागतो आहे असे भावनात्मक आव्हान श्री नरेंद्र मोदी यांनी या ठिकाणी केले. यावेळी पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांनी ‘स्त्रीभ्रूण’ हत्या करणार नाही आणि स्त्री व पुरुष असा कोणताही लिंग भेदभाव करणार नाही. अशी शपथ सर्व उपस्थितांना दिली. या योजनेच्या

उद्‌घाटनाला प्रसिध्द अभिनेत्री आणि मध्य प्रदेशच्या 'लाडली लक्ष्मी' योजनेच्या सदिच्छा दूत माधूरी दिक्षित उपस्थित होत्या. ही योजना प्राथमिक तत्त्वावर देशतील शंभर जिल्ह्यामध्ये लागू करण्यात आली. दहा वर्षाखालील मुलींसाठी अधिकतर व्याज दर असणाऱ्या तसेच आयकरात सवलत असणाऱ्या बॅंक खात्यासंदर्भातील 'सुकन्या समृध्दी योजनेचे' उद्‌घाटनही नरेंद्र मोदी यांनी केले. देशातील दर हजारी मुलांमागे मुलींच्या जन्म संख्येत वाढ व्हावी हे या मोहिमेचे प्रमुख उद्‌दिष्टे आहे.

- **किशोरी शक्ती योजना :**

ही योजना केंद्रिय महिला व बालविकास मंत्रालयामार्फत चालविली जाते. यामध्ये आत्मविश्वास, पोषण, आरोग्य देखभाल, साक्षरता, अंकज्ञान, व्यावसायिक कौशल्य ही ध्येय समोर ठेवून ही योजना सुरु केली आहे. यामध्ये ११ ते १८ वयोगटातील किशोरी मुलींचा समावेश करण्यात आला आहे.

- **धनलक्ष्मी योजना :**

केंद्रिय महिला आणि कुटुंब कल्याण मंत्रालयाद्वारे ३ मार्च, २००८ रोजी ही योजना सुरु करण्यात आली आहे. यामध्ये बालकांना सशर्त धन दिले जाते. त्याबरोबरच विमाही दिला जातो. या योजनेची सुरुवात आंध्रप्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ, झारखंड, ओडिसा, उत्तरप्रदेश आणि पंजाब या सात राज्यामध्ये करण्यात आली.

- **बालिका समृध्दी योजना :**

या योजने अंतर्गत मुलींना रोख पैसे जन्माच्या वेळी आणि त्यानंतर प्रत्येक वर्षी शाळेत शिक्षण चालू असतांना १० वीच्या वर्गापर्यंत हे पैसे प्रदान केले जातात. या योजनेची सुरुवात १९९७ मध्ये करण्यात आली.

- **लाडली योजना :**

ही योजना दिल्ली आणि हरियाणा या दोन राज्यांनी सुरु केली असून यामध्ये मुलींच्या जन्माच्या वेळी आणि त्यानंतर विविध पातळीवर शिक्षण पूर्ण झाल्यानंतर रोख पैसे त्यांच्या खात्यावर जमा केले जाणार आहे. दहावीपर्यतचे शिक्षण पूर्ण झाल्यावर त्यांना १ लाख रुपये दिले जाणार आहे.

- **एकात्मिक बालविकास सेवा योजना :**

ग्रामिण आदिवासी व झोपडपट्‌टी भागातील पूर्व शालेय बालकांची योग्य वाढ व विकास साधण्यासाठी एकात्मिक सेवा पुरविणे हे या योजनेचे मुख्य उद्‌दिष्ट आहे. या योजने अंतर्गत ० ते ६ वर्षे वयोगटातील बालके, गर्भवती महिला, व स्तनदा मांताचे आरोग्य व पोषण स्थिती सुधारण्यासाठी लसीकरण, पोषण आहार, आरोग्य तपासणी, संदर्भसेवा, पोषण व आरोग्य शिक्षण आणि पूर्वशालेय शिक्षण अशा मुलभूत सेवा पुरविल्या जातात. हा कार्यक्रम ९७,४६२ अंगणवाड्या, १०,९०१ मिनी अंगणवाड्या आणि ५५३ बालविकास प्रकल्पामार्फत राबविला जातो.

- **उडाणं योजना :**

अभियांत्रिकी क्षेत्रातील मुलींचा सहभाग वाढविण्यासाठी केंद्रिय माध्यमिक शिक्षण मंडळाकडून उडाण ही योजना सुरु करण्यात आली आहे. आय.आय.टी. सारख्या महाविद्यालयामध्ये मुलींचे प्रमाण वाढविणे हे या योजनेचे मुख्य उद्‌दिष्ट आहे. या योजने अंतर्गत आर्थिक दृष्ट्या दुर्बल घटकातील मुलींना प्राधान्य दिले जाणार आहे.

निष्कर्ष :

स्त्री मानव जातीची निर्मिती करणारी एक अद्‌भूत शक्ती आहे. पुरुषांप्रमाणे स्त्रियांना देखिल समाजात समान अधिकार व स्थान मिळायला हवे. स्त्री भ्रूण हत्या होण्यामागे प्रमख कारणे म्हणजे मुलगा वंशाचा दिवा, वारसदार, हुंडा पध्दती, स्त्रियांवर होणारे पाशवी अत्याचार या सर्वांचा परिणाम स्त्रीयांना गर्भातच मारले जाते. या

समस्येचे गांभिर्य लक्षात घेवून शासनाने मुलींच्या संख्येत वाढ करण्याच्या हेतूने काही कल्याणकारी योजना सुरु केल्या यामध्ये सुकन्या योजना, माझी कन्या भाग्यश्री, बेटी बचाओ, बेटी पढाओ, सबला योजना, धनलक्ष्मी योजना, लाडली योजना आणि उडाण या योजना राबवून मुलींच्या संख्येत वाढ करणे तसेच त्यांचा विकास घडवून आणणे हे कार्य या माध्यमातून केले जाते.

संदर्भ :

१. महिला व बालविकास विभाग मार्गदर्शक –चंद्रकांत मिसळ
२. बाल्यावस्था पूर्व संगोपन शिक्षण – विकीपिडीया
३. आमची अंगणवाडी जुलै २०११, महिला व बालविकास, महाराष्ट्र राज्य.
४. महिला व बालविकास आयूक्तालय भरती मार्गदर्शक – व्ही. एन. स्वामी
५. पोरी जरा जपून – डॉ.सौ. अश्विनी गोडबोले, डॉ. सुनिल गोडबोले.

संगिता गंगाराम मेश्राम डॉ. लता बा. हिवसे

International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.3 No.3 Sept – Oct 2022

दीनदयाळ नागरी सहकारी बँक पुरवित असलेल्या नाविन्यपूर्ण सेवा, आर्थिक व सामाजिक बांधीलकी - एक अभ्यास

डॉ. मनोजकुमार यादवराव सोमवंशी[1] जोशी गोविंद दिगंबरराव [2]
[1]अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख, संशोधन मार्गदर्शक, शिवनेरी महाविद्यालय,शिरूर अनंतपाळ जि. लातूर
[2]संशोधक विद्यार्थी, सामाजिक शाखे संकुल, स्वा.रा.ति.म विद्यापीठ नांदेड.
Corresponding Author- **डॉ. मनोजकुमार यादवराव सोमवंशी**
: Email id: govindjoshi9405@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.7269244

प्रस्तावना :-

कोणत्याही देशाच्या आर्थिक विकासाचे स्वरूप हे त्या देशातील व्यवसायिक वर्गावर अवलंबून असते. व्यवसायाला मदत करणा-या इतर व्यापारी संस्था लाभासाठी कार्यरत असतात. परंतु सहकारी संस्था मात्र समानतेच्या तत्त्वावर सभासदांच्या आर्थिक व सामाजिक विकासासाठी कार्यरत असतात. या सहकारी संस्थांनी भारताच्या आर्थिक विकासात व समाजातील दुर्बल घटकांच्या आर्थिक समस्या सोडविण्यात महत्त्वाची भूमिका बजावलेली आहे. आजच्या युगात खाजगीकरण आणि जागतिकीकरणामुळे बँक व्यवसायात मोठी स्पर्धा निर्माण झालेली दिसून येते. उदारीकरणामुळे नवीन बँका स्थापन करणे सोपे झाले व त्यामुळे बँक व्यवसायामध्ये स्पर्धात्मक वातावरण निर्माण झाले. त्यामुळे नागरी सहकारी बँकांची व्यवहार्यता धोक्यात आली आहे. प्रस्तुत शोधनिबंधासाठी बदलती परिस्थिती गृहीत धरली आहे. नागरी सहकारी बँकांना आपली वित्तीय सुलभता आणि कार्यक्षमतेसाठी वित्तीय माहिती सुलभ रीतीने मिळविने अवश्यक आहे. ताळेबंद आणि नफा-तोटा पत्रक ही पारंपरिक वित्तीय पत्रके आता पुरेशी वित्तीय पत्रके दर्शविण्यात मदत करीत नाहीत. सध्या नागरी सहकारी बँकेच्या वित्तीय सुलभतेकरिता नवीन प्रतिमाने ज्यांच्यामुळे शास्त्रीय संबंध प्रस्थापित होतात ते स्वीकारणे आवश्यक आहे. आधुनिक वित्तीय साधने नागरी सहकारी बँकांचे आर्थिक विश्लेषण करण्यासाठी आवश्यक बनली आहेत. देशातील व राज्यातील नागरी सहकारी बँकाचा इतिहास पहाता अंबाजोगाई येथे दीनदयाळ नागरी सहकारी बँकेची स्थापना 2 जून 1997 रोजी झाली. बीड जिल्हा हा औद्योगिक दृष्ट्या अविकसीत जिल्हा आहे परंतु तरी देखील येथे बँकाचा विकास झालेला आहे. दीनदयाळ नागरी सहकारी बँकेच्या एकूण मुख्य शाखेसह 17 शाखा असून या पूर्ण मराठवाड्यामध्ये पसरलेल्या आहेत. या सर्व शाखांच्या माध्यमातून येथील लोकांचा आर्थिक स्तर उंचावण्याचे कार्य दीनदयाळ नागरी सहकारी बँक करीत असल्याचे दिसून येते. दीनदयाळ नागरी सहकारी बँकेच्या शाखा कमी असल्या तरी देखील या शाखांची कार्यपध्दती समाधानकारक आहे. या सर्व शाखांच्या माध्यमातून व्यापारी बँका प्रमाणे ग्राहकाला नाविन्यपूर्ण सेवांचा पूरवठा करुन आर्थिक व सामाजिक बांधिलकी जोपासण्याचा प्रयत्न बँक करीत असल्याचे दिसून येते.

उद्दिष्ट्ये :-

1) दीनदयाळ नागरी सहकारी बँकेच्या नाविन्यपूर्ण सेवांचा अभ्यास करणे.

2) दीनदयाळ नागरी सहकारी बँकेच्या आर्थिक व सामाजिक बांधिलकीचे अध्ययन करणे.

गृहितके :-

1) दीनदयाळ नागरी सहकारी बँक ग्राहकांना नविन आर्थिक सेवा पुरविते.

2) दीनदयाळ नागरी सहकारी बँक आर्थिक व सामाजिक बांधिलकी जोपासते.

संशोधन पध्दती :-

सदरील संशोधनामध्ये वर्णनात्मक व विश्लेषणात्मक पध्दतीचा वापर करण्यात आलेला आहे. सदर

शोधनिबंधाचे कार्य पूर्णत्वास नेण्यासाठी दीनदयाळ नागरी सहकारी बँकेच्या अहवालाचा, संदर्भग्रंथाचा, विविध पुस्तकांचा वापर करण्यात आलेला आहे. प्रस्तुत शोधनिबंधामध्ये दुय्यम साधनसामुग्रीचा वापर करण्यात आलेला आहे.

दीनदयाळ नागरी सहकारी बँक पुरवित असलेलया नाविण्यपूर्ण सेवा :-

आजच्या युगामध्ये बँकिंग क्षेत्रातही आमुलाग्र प्रकारचे सातत्याने बदल घडून येत आहेत. इतर क्षेत्राप्रमाणे बँकिंग क्षेत्रातील नवनवीन तंत्रज्ञानाचा अवलंब केला जात आहे. आधुनिक तंत्रज्ञानाच्या सहाय्याने ग्राहकांना नवनवीन सेवा सुविधा उपलब्ध करुन देण्यात येत आहेत. ग्राहकांना दिल्या जाणा-या या नवनवीन सेवा सुविधांच्या दर्जा मध्ये वाढ करण्याचा प्रयत्न प्रत्येक बँका करीत आहेत. आजच्या या स्पर्धेच्या युगात टिकून राहण्यासाठी प्रत्येक बँका आधुनिक तंत्रज्ञानाचा अत्यंत प्रभावीपणे वापर करुन ग्राहकांना आकर्षित करण्याचा प्रयत्न करीत आहेत.

बँक क्षेत्रातील अशा नवनवीन आधुनिक तंत्रज्ञानाच्या प्रवृत्ती आपणास पुढील प्रमाणे पाहता येतील.

1) ई बँकिंग :-

आपल्या देशामध्ये माहिती आणि तंत्रज्ञानाच्या क्षेत्रात मोठ्या प्रमाणामध्ये प्रगती झालेली आपणास पहावयास मिळते. सार्वत्रीक याचा उपयोग मोठ्या प्रमाणावर केला जात आहे त्यामुळे ई-कॉमर्स, ई-मेल, ई-माहिती, ई-डाटा इंटरचेंज इत्यादी अनेक घटकांचे भारतभर मोठ्या प्रमाणावर जाळे निर्माण झाले आहे. उद्योग, व्यापार, वाहतूक, सरकारी कार्यालये इत्यादी अनेक ठिकाणी या आधुनिक तंत्रज्ञानाचा वापर मोठ्या प्रमाणावर होत असताना दिसून येतो. बँकांनी सुद्धा ग्राहकांना मूलभूत आणि अनुषंागीक सेवा पुरविण्यासाठी इलेक्ट्रॉनिक माध्यमाचा उपयोग केला आहे.

ई-बँकिंग मधील 'ई' हा शब्द इलेक्ट्रॉनिक साठी वापरण्यात येतो. ई बँकिंगचे स्वरुप इलेक्ट्रॉनिक बँकिंग असे सांगण्यात येते. म्हणजेच इलेक्ट्रॉनिक च्या माध्यमातून दिल्या जाणा-या सोयी सुविधांना ई-बँकिंग असे म्हणतात. बँकिंगमध्ये बँक आपल्या सर्व प्रकारच्या व्यवहारांची पुर्तता करतात. यामध्ये दीनदयाळ नागरी सहकारी बँक सुद्धा ई-बँकिंग सेवा सुविधा ग्राहकांना पुरविण्यामध्ये यशस्वी झाली आहे. दीनदयाळ नागरी सहकारी बँकेने ग्राहकांना सेवा सुविधा पुरविण्यासाठी संगणकीकरणाची सुरुवात 2001-2002 या वर्षी केली इतर बँकांप्रमाणे व तत्पर सेवा देण्यासाठी दीनदयाळ बँकेने संगणकीकरणाची सेवा सुरु केली. यामुळे वाढत्या ग्राहकाला सक्षम सेवा देण्यास बँक आग्रही असल्याचे दिसून येते. अत्याधुनिक तंत्रज्ञानाचा वापर करुन संगणकीकरणाचे फायदे मिळविण्याच्या दृष्टीने बँक सदैव प्रयत्नशील असल्याचे दिसून येते. ई बँकिंग सेवेमुळे पैसा वेळ व श्रमाची बचत झाली आहे. व यामुळे बँकेला ही खूप मोठ्या प्रमाणात फायदा झाला आहे. याच प्रकारामुळे आज सर्व शाखा एकत्रित जोडल्या गेल्या आहेत. यामुळे आज पैसे भरणे काढणे इतर शाखांशी प्रत्यक्ष संबंध, पैशाचे हस्तांतरण यासारखे बँकिंग क्षेत्रातील व्यवहार सहज व सुलभ झाले आहेत.

2) कोर बँकिंग :-

आजच्या युगामध्ये आधुनिक तंत्रज्ञानाचा बँकिंग क्षेत्रामध्ये फार मोठ्या प्रमाणावर वापर होत आहे. यामध्ये वेगवेगळया स्वरुपाच्या दर्जेदार व आकर्षक सेवा देण्यासाठी सर्व क्षेत्रातील बँका पुढाकार घेत आहेत ग्राहकांना आकर्षित करणे ग्राहकांची संख्या वाढणे व आपण आपला व्यवसाय मोठ्या प्रमाणावर वाढवून नफा प्राप्ती करणे. हाच यामागचा हेतू आहे यामध्ये अनेक सेवा सुविधा मधील कोअर बँकींग ही एक सेवा तंत्रज्ञानाच्या माध्यमातून ग्राहकांपर्यंत पोहोचविण्याचे काम सर्वच बँका करीत असल्याचे दिसून येते.

'कोअर बँकिंग म्हणजे बँकेच्या कुठल्याही शाखेमध्ये पैसे भरणे व कुठल्याही शाखेमधून पैसे उचलने होय.' म्हणजेच एखाद्या बँकेच्या एका शाखेत पैसे भरले असता त्याच बँकेच्या दुस-या कुठल्याही शाखेमधून ग्राहकांना पैसे काढता येतात. या कोअर बँकिंग सेवेमध्ये दीनदयाळ नागरी सहकारी बँकेने उत्कृष्ट काम केले आहे. या बँकेने कोअर बँकिंग ची सुरुवात प्रत्यक्षात 2012-13 या वर्षी केली संगणकीकरणाच्या नंतर खूप दिवसांनी या सेवेस प्रारंभ केल्याचे दिसून येते. आज या बँकेच्या कुठल्याही शाखेत पैसे भरुन दुस-या शाखेत पैसे उचलण्याची सेवा सुरु आहे. यामुळे ग्राहकांची खूप मोठ्या प्रमाणावर होणारी कसरत थांबते कारण अचानक उद्भवलेल्या परिस्थितीला सामोरे जाण्यासाठी ही सेवा अत्यंत महत्त्वाची आहे.

या सेवेमुळे ग्राहकासह बँकेचाही मोठ्या प्रमाणावर फायदा होत आहे. यामुळे श्रम, पैसा व वेळेची बचत होत आहे. कोर बँकिंग सेवा ही

तंत्रज्ञानाचा एक भाग आहे. याचे अत्यंत चांगल्या प्रकारचे फायदे बँकेला होत आहेत.

3) **एटीएम :-**

आधुनिक काळामध्ये बँका या मानवी श्रमशक्तीचा वापर कमी करुन स्वयंचलित यंत्राचाच जास्त प्रमाणात वापर करीत आहेत. आपल्या ग्राहकांना नवनवीन सेवा उपलब्ध करुन देत आहेत. अशा नवनवीन सेवा उपलब्ध करुन देऊन ग्राहकांना आकर्षित करण्याचा प्रयत्न केला जात आहे. बँकांनी सुरु केलेले एटीएम हा सुद्धा त्याचाच भाग आहे. एटीएम म्हणजे ऑटोमॅटिक ट्रेलर मशीन याला मराठीमध्ये “स्वयंचलित गणक यंत्र” असे म्हणतात. थोडक्यात ग्राहकांना त्यांच्या मागणीप्रमाणे पैसे देणे आणि त्यांची रक्कम जमा करुन घेणे ही प्रक्रिया करणारे स्वयंचलित यंत्र म्हणजे एटीएम होय किंवा ग्राहकाशी आर्थिक व्यवहार करण्यासाठी बँकेने निर्माण केलेली स्वयंचलित यंत्रणा म्हणजे एटीएम होय.

एटीएमची सुविधा उपलब्ध करुन घेण्यासाठी कुठल्याही ग्राहकाला संबंधित बँकेकडे अर्ज करावा लागतो. तेव्हाच बँक ग्राहकाला एटीएम चे सभासदत्व देते यासाठी एक कार्ड दिले जाते. यावर बँकेचे नाव, क्रमांक, कार्डधारकांचे नाव, वापरण्याची अंतिम तारीख व कार्डच्या मागील बाजूस सभासदाची सही व काही सूचना दिलेल्या असतात. यानंतर त्याच्या वापरासाठी सांकेतांक दिला जातो. हा सांकेतांक क्रमांक केवळ बँकेला व सभासदालाच माहिती असतो. या आधुनिक यंत्रणेची सुरुवात दीनदयाळ नागरी सहकारी बँकेने 2014-15 साली केली. ग्राहकांना आकर्षित करण्यासाठी ही सेवा अत्यंत महत्त्वाची आहे कारण यामुळे कुठल्याही बँकेच्या एटीएम मशीन द्वारे देशभरात कुठेही व्यवहार केला जातो.

दीनदयाळ नागरी सहकारी बँकेने चालू केलेल्या या सेवेमुळे बँकेच्या श्रम, पैसा, वेळे मध्ये खूप बचत झाली. त्यामुळे बँकेला खूप मोठ्या प्रमाणावर फायदा झाला आहे. या एटीएम कार्ड साठी व वापरासाठी बँक शुल्क आकारते. यामुळे बँकेच्या आर्थिक व्यवहारांमध्ये वाढ होत असताना दिसून येते. एकंदरीत एटीएम सेवा चालू केल्यामुळे बँकेला मोठ्या प्रमाणावर फायदा होतो ही सेवा उपलब्ध करुन देऊन बँकेने यशाकडे वाटचाल केल्याची दिसून येते.

4) एस.एम.एस सेवा/ भ्रमणध्वनी सेवा :-

आजच्या काळामध्ये खाजगीकरण उदारीकरण व जागतिकीकरण यामुळे जग जवळ आले आहे. त्याचा अनुकूल परिणाम शहरी भागासह ग्रामीण भागावर सुद्धा झाल्याचे पहायला मिळतील. आज आपल्या देशामध्ये बँकिंग व्यवसायामध्ये भ्रमणध्वनी चा उपयोग झपाट्याने होत असलेला पहावयास मिळतो. बँकिंग व्यवसायातील वाढत्या स्पर्धेमध्ये ग्राहकांना आपल्याकडे आकर्षित करण्यासाठी बँकिंग क्षेत्रामध्ये चढाओढ निर्माण झाल्याचे चित्र पाहावयास मिळते. याचेच एक फलित म्हणजे एस.एम.एस किंवा भ्रमणध्वनी बँकिंग सेवा आहे. आपल्या देशात जवळपास 75 ते 80 टक्के लोकांकडे भ्रमणध्वनी असल्यामुळे बँका याच्या माध्यमातून ग्राहकांना सेवा देताना दिसून येत आहेत.

दीनदयाळ नागरी सहकारी बँकेने ग्राहकांना आकर्षित करण्यासाठी एस.एम.एस सेवा उपलब्ध करुन दिली आहे. यामुळे बँकेला मोठ्या प्रमाणावर फायदा होत आहे कारण यामुळे जलद गतीने व्यवहार पार पाडले जातात. यामुळे विजेचे बिल भरणा, भ्रमणध्वनीचे रिचार्ज, गॅस सिलेंडर, मुलांची शैक्षणिक फिस भरणे असे अनेक कामे बँकेच्या माध्यमातून होत असताना दिसून येत आहेत. तसेच एका खात्यातून दुस-या खात्यामध्ये पैसे भरणे हे याच्या माध्यमातून केले जात असल्यामुळे हा बँकेला फायदाच ठरला आहे. या एस.एम.एस सेवेची सुरुवात बँकेने 2014-15 साली केली असून आजपर्यंत ही सेवा चालू असल्याचे दिसून येते. या सेवेवर सुद्धा बँक अल्पश: शुल्क आकारते परंतु जलद किंवा तत्पर सेवा देते हे महत्त्वाचे आहे.

5) एन.ई.एफ.टी :

आजच्या आधुनिक युगामध्ये खाजगीकरण, उदारीकरण व जागतिकीकरण यामुळे बँकिंग क्षेत्र, विमा क्षेत्र, व्यापार क्षेत्र, उद्योग क्षेत्र, विदेशातील व्यक्ती, विदेशातील व्यावसायिक कंपन्या यांना भारतामध्ये व्यवसाय विस्ताराच्या संधी निर्माण झाल्यामुळे कुठल्याही बँकेमार्फत निधीचे हस्तांतरण होऊ लागले. हेच निधीचे हस्तांतरण या माध्यमातून करण्यात येऊ लागले. जागतिक स्तरावर याची सुरुवात इसवी सन 1969 साली झाली. इलेक्ट्रॉनिक निधी हस्तांतरण ही एक प्रक्रिया आहे. एका ठिकाणाहून दुस-या ठिकाणी पैशाचे, निधीचे हस्तांतरण करण्यासाठी बँकिंग क्षेत्रामध्ये याला महत्त्वाचे स्थान आहे.

दीनदयाळ नागरी सहकारी बँकेने सुद्धा किरकोळ व्यापारी उद्योजक व व्यावसायिकांसाठी ऱकक्रत्र् या

योजनेची सुरुवात केली या योजनेची सुरुवात सन 2013-14 साली केली. याच्या माध्यमातून ग्राहक मोठ्या प्रमाणावर पैशाचे हस्तांतरण करताना दिसून येतात. दीनदयाळ नागरी सहकारी बँक या निधीचे किंवा पैशाचे हस्तांतरण करण्यासाठी हस्तांतरित रकमेच्या मोबदल्यात अल्पशा प्रमाणात शुल्क आकारते. यामुळे बँकेच्या व्यवसायात व नफ्यात मोठ्या प्रमाणावर वाढ झाल्याची दिसून येते. एकंदरीत ही महत्त्वाची योजना दीनदयाळ नागरी सहकारी बँकेसाठी महत्वाची व लाभदायक ठरली असल्याचे दिसून येते.

6) आर.टी.जी.एस:-

या योजनेच्या माध्यमातून ऽकक्ञ् प्रमाणेच निधीचे किंवा पैशाचे हस्तांतरण केले जाते. आर.टी.जी.एस ही पैशाच्या हस्तांतरणाची आधुनिक आणि महत्त्वाची पद्धती आहे. दीनदयाळ नागरी सहकारी बँकेच्या प्रत्येक शाखेमध्ये या पद्धतीचा अवलंब केला जातो. या योजनेची सुरुवात बँकेने 2013-14 साली केली. ही सुविधा अत्यंत जलद व सुरक्षीत अशी सुविधा आहे. या सुविधेमध्ये धनादेशाचा वापर न करता बँक खातेदार इंटरनेटच्या माध्यमातून कोणत्याही अन्य बँकेला किंवा खात्याला पैसे पाठवू शकतात. या सुविधेमुळे बँकेला मोठ्या प्रमाणावर फायदा झाला आहे. या सुविधेसाठी बँक खातेदारांच्या रकमेनुसार शुल्क आकारते या सुविधेमुळे सुद्धा वेळेची, श्रमाची बचत होते. म्हणून ही एक सुविधा बँकेच्या यशाचे गमक ठरल्याचे दिसून येते.

7) जीवन विमा /जीवनज्योती योजना:-

प्रधानमंत्री जीवनज्योती विमा या योजनेची भारत सरकारने 2015 साली सुरुवात केली. यामध्ये गुंतवणूक केल्यानंतर जर ग्राहकाचा मृत्यू झाला तर संबंधित व्यक्तीच्या कुटुंबाला दोन लाख रुपये मिळतात. देशातील प्रत्येक व्यक्तीच्या कुटुंबाला याचा लाभ मिळावा म्हणून केंद्र सरकारने याची सुरुवात केली. या योजनेचा लाभ घेणा-या ग्राहकासाठी किंवा गुंतवणूकदारांसाठी दीनदयाळ नागरी सहकारी बँकेने या योजनेची सुरुवात 2014-15 या वर्षी केली. या योजनेअंतर्गत ब-याच लोकांनी गुंतवणूक केल्याचे दिसून येते.

8) एल.पी.जी गॅस सबसिडी:-

केंद्र सरकारच्या योजनेतील गॅस सिलेंडर सबसिडी योजना आहे. एखाद्या ग्राहकाने कुठल्याही कंपनीचा गॅस सिलेंडर खरेदी केला. तर त्याला सबसिडी दिली जाते ही सबसिडी त्या ग्राहकाच्या बँकेतील खात्यावर जमा होते. यासाठी बँकेचे खाते असणे आवश्यक असते अशी सबसिडी मिळवून देण्यासाठी दीनदयाळ बँक कटिबद्ध आहे. या बँकेने याची सुरुवात 2014-15 या वर्षी केली. याच्या अंतर्गत मोठ्या प्रमाणावर ग्राहकाला व बँकेला याचा लाभ होत असल्याचे दिसून येते.

9) निराधार पेन्शन योजना:-

केंद्र सरकारच्या निराधार पेन्शन योजनेचा लाभ घेणा-या निराधारांसाठी बँकेने 2014-15 या वर्षी निराधार पेन्शन योजनेची केंद्र सरकारद्वारा सुरुवात केली. दीनदयाळ नागरी सहकारी बँकेच्या मार्फत ही पेन्शन योजना ग्राहक उचलू शकतो ही एक अत्यंत महत्त्वाची सेवा बँक पुरविताना दिसून येते.

10) अटल पेन्शन योजना:-

दिवंगत नेते अटलबिहारी वाजपेयी यांच्या नावावरुन चालू केलेली ही केंद्र सरकारची योजना आहे. या योजनेची सुरुवात निराधार पेन्शन योजना सोबतच 2014-15 यावर्षी दीनदयाळ बँकेने चालू केली. याच्या मार्फत सुद्धा ग्राहकांना मोठ्या प्रमाणावर फायदा होत असल्याचे दिसून येते.

11) प्रधानमंत्री जनधन योजना :

प्रधानमंत्री जनधन योजना ही भारत सरकारची आर्थिक क्षेत्राची वित्तीय समावेशन योजना आहे. याद्वारे बँक बचत खाते, प्रदान, जमा करणे विमा व पेन्शन या आर्थिक सेवा एकाच परवडणा-या रीतीने हाताळता येतात. याची सुरुवात भारत सरकारने 2014 साली केली. याच धर्तीवर लाभधारकांसाठी दीनदयाळ नागरी सहकारी बँकेने 2014-15 या आर्थिक वर्षामध्ये या योजनेची सुरुवात केली. याचा लाभ ग्राहकांना होत असताना दिसून येतो.

12) मागणी धनाकर्ष :-

एखाद्या प्रसंगी शुल्क भरण्यासाठी किमान दोन व्यक्ती किंवा संस्थांना एकमेकांशी व्यवहार करण्यासाठी काळजी घ्यावयाची असते. अशावेळी डी.डी चा वापर केला जातो. म्हणजेच व्यक्ती व संस्था यांना व्यवहार करण्यासाठी कुठल्याही प्रकारची जोखीम न घेता व्यवहार करण्यासाठी याचा वापर केला जातो. कंत्राटदाराला टेंडर भरण्यासाठी एखाद्या शैक्षणिक संस्थेची शुल्क भरण्यासाठी, अर्ज भरण्यासाठी अशा अनेक गोष्टींसाठी याचा वापर मोठ्या प्रमाणावर होतो. डिमांड ड्राफ्ट हे एक प्रीपेड

निगोसिएबल इन्स्ट्रुमेंट असून हे फक्त बँकेच्या मार्फतच मिळते. यासाठी अगोदर पैसे किंवा चेक द्यावा लागतो. यासाठी शुल्क आकारणी केली जाते. यावरुन असे लक्षात येते की पैसे पाठविण्यासाठी सुरक्षीत व पारदर्शी व्यवहारात डिमांड ड्राफ्ट चे विशेष स्थान आहे. परंतु आजच्या आधुनिक काळामध्ये एन. ई. एफ.टी, आर टी जी. एस, यु. पी. आय.एम.पी.एस., भीम सारख्या सुविधेमुळे याकडे दुर्लक्ष होत आहे. परंतु अजूनही याचा वापर करणा-यांची संख्या लक्षणीय आहे यामुळे डीडीची गरज निश्चितच आहे.

अशा डीडी ची सुरुवात दीनदयाळ नागरी सहकारी बँकेने 2002-03 यावर्षी माजलगाव शाखेमधून आय.सी.आय.सी.आय बँकेच्या मार्फत हज यात्रेकरुंसाठी मोफत दिली व या वर्षीच बँकेने डीडी ची सेवा चालू केली. याच्याद्वारे बँकेला मोठ्या प्रमाणावर लाभ होतो व ग्राहकांना जलद व तातडीची सेवा प्रदान करण्यात बँकेने यशप्राप्ती केली आहे.

दीनदयाळ नागरी सहकारी बँकेची आर्थिक व सामाजिक बांधिलकी :

आर्थिक बांधिलकी :

1) पगारी नोकरदारांच्या जीवनमानात वाढ

2) लघुउद्योगांचा विकास

3) घरबांधणी योजना

4) वहान उद्योग व वहातुक व्यवसायाला चालना

5) बांधकाम व्यावसायिक व कंत्राटदारांना सहाय्य

6) आकस्मीक गरजेच्या पूतर्तसाठी अर्थसहाय्य

7) आग्रक्रम क्षेत्राचा विकास

8) दुर्बल घटकांचा विकास

9) गरिब/ होतकरु विद्यार्थ्यांना शैक्षणिक कार्य

10) विशेष कर्ज योजनाद्वारे कर्जपूरवठा

11) छोटे व्यावसायिक व किरकोळ व्यापारांना चालना

12) सर्वसामान्यांना व्यक्तीगत अडचणीमध्ये सहाय्य

13) शहरी सावकारापासून मुक्तता

14) विविध शाखांच्या माध्यमातून शहरी भागातील लोकांना बँकींग व्यवस्था

सामाजिक बांधीलकी :-

1) रोजगार निर्मिती

2) सभासदांच्या रहाणीमानात वाढ

3) सामाजिक प्रतिष्ठेत वाढ

4) अपघात विमा अंतर्गत विमा संरक्षण

5) प्रलयग्रस्थ लोकांना आर्थिक मदत

6) ग्राहकासाठी विविध सेवा

7) सामाजिक क्षेत्रात सहभाग

8) बचतीची सवय

9) विविध व्याख्यानमालेचे आयोगजन (प्रतिवर्षी)

10) गुणवंत विद्यार्थ्यांचा सत्कार

11) पुस्तक प्रकाशन सोहळयाचे आयोजन

12) रक्तदान शिबीराचे आयोजन

13) संगीतरजनी कार्यक्रमाचे आयोजन

14) महिला बचतगट प्रोत्साहनपर आयोजन

15) पर्यावरण संवर्धन उद्देशाने वृक्षारोपन कार्यक्रम

संदर्भग्रंथ :-

1) डॉ.बी.एम.क-हाडे- 'शास्त्रीय संशोधन पध्दती', पिंपळापूरे पब्लीकेशन, नागपूर (जून-2011)

2) धारिया मोहन : 'ऐकविसावे शतक आणि सहकार चळवळीचे भवितव्य', सहकारी मराठवाडा विशेषांक, मराठवाडा

विभागीय सहकार परिषद, औरंगाबाद. 17 सप्टें.2003

3) गोडबोले वी.ज. : 'बँकीग व फायनान्स-1' यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ, नाशिक (ऑक्टो.2002)

4) दीनदयाळ नागरी सहकारी बँक मर्या. अंबाजोगाईचे वार्षिक अहवाल 1996-97 ते 2020-21.

International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.3 No.3 Sept – Oct 2022

'चंद्रपूर जिल्ह्यातील ताडोबा अंधारी व्याघ्र प्रकल्पा शेजारील मानव व प्राणी यांच्यातील संघर्ष

डॉ. ए. आय. खान[१] डॉ. महेश प्रभाकर रत्नपारखी[२]

[१] भूगोल विभाग प्रमुख, शासकिय ज्ञान विज्ञान महाविद्यालय, औरंगाबाद
[२] भूगोल विभाग कला वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय बदनापुर, जिल्हा जालना
Corresponding Author- **डॉ. ए. आय. खान**
Email id: maheshgeo27@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.7271349

सारांश:

आजच्या युगास औद्योगिक युग म्हणून संबोधल्या जाते. कारण निरनिराळ्या उद्योगांचा विकास होय, व हे उद्योगधंदे चालण्या करिता विजेची गरज असते. जागतीक विज निर्मीतीच्या वाट्याात सर्वात जास्त वाटा औश्णीक विद्युत केंद्रांचा आहे. भारतात एकुण उत्पादणाच्या ७० टक्के उर्जा ही औश्णीक म्हणजेच कोळषा पासुन तयार केली जाते. चंद्रपूर जिल्हयातीलच नाही तर संपुर्ण भारतातील खाणी या अतिषय घनदाट वणांच्या सानिध्यात जंगले नष्ट करून राष्ट्रीय उद्यानाच्या समिप निर्माण करण्यात आली आहेत. जिल्ह्यातील खाण व्यवसाय वर्धा नदीच्या खोऱ्यात विकसित झाला आहे. चंद्रपूर जिल्हा प्राचिन काळापासुनच येथिल वनांकरिता प्रसिध्द आहे, परंतु या जंगलातील वाघ हा प्राणी अत्यंत महत्वपुर्ण असुन फार मोठया प्रमाणात पर्यटक या ठिकाणी भेटी देत असतात. येथिल खाणींच्या संखेत होणारी वाढ व जंगलाच्या प्रमाणात झालेली घट यामुळे वन्यप्रानी व येथिल वास्तव्यास असलेले लोक यांच्यात संघर्षाची स्तिथी निर्माण झाली आहे. या स्थितीचा आढावा या शोधनिबंधा मध्ये घेण्याचा प्रयत्न आहे.

बीज संज्ञा: मानव व प्राणी यांच्यातील संघर्ष, वन्यप्राण्यांचे निवास, आर्थिक कार्य.

प्रस्तावना:

राष्ट्रीय उद्याने ही वन्यप्राण्यांची सुरक्षित निवास क्षेत्र असल्याने येथे वन्य प्राणी व मानव यात नेहमीच संघर्श पहावयास मिळतो. त्यातही बफर झोन मध्ये याचे प्रमाण आधिक आहे. खाणकाम व्यवसायामुळे येथिल जंगले नश्ट झाल्याने वन्यप्राणी गांवामध्ये प्रवेश करून मानसांवर हल्ले करतात असे आपण नेहमीच दैनिकांच्या माध्यमातुन वाचत असतो. वाघांचा अधिवास संकुचीत होतोय हे खरे आहे. डेहराडुनची 'फॉरेस्ट रीसर्च इन्स्टिट्यूट' दर दोन वर्षांनी वनांच्या एकुण प्रमाण संबधीचा सद्यस्थिती अहवालानुसार असे असे लक्षात येते की, दिवसेंदीवस नैसर्गीक जंगल कमी होत आहे. आंध्रप्रदेश व उत्तरेकडील भाग, ओडिसा आणि झारखंडमध्ये वाघांची संख्या घटलेली दिसते. बेंबंद खाणकामामुळे नष्ट झालेली जंगले याला कारणीभूत आहेत, यामुळेच अषा ठिकाणच्या प्राण्यांनी आता गांवाकडे मोर्चा वळविला आहे. त्यातही काही प्राणी उभ्या पिकांचे नासधुस करतात त्यामुळे शेतकरी आर्थिक दृष्ट्या दुबळा झाला आहे. परंतु येथिल शेतकरी आर्थिक भरपाईच्या उद्येशाने प्राण्यांची शिकार करून ती पुर्ण करण्याचा प्रयत्न करतो. माणव व प्राणी संघर्ष हा अतिशय प्राचीन आहे ४५०० वर्षा पुर्वी हडप्पा संस्कृतीत पहावयास मिळतो येथिल काही शिल्पांवरून हे लक्षात येते कारण या शिल्पावर मनुष्य झाडावर तर वाघ त्याच्या खाली बसलेला

असे चित्र कोरलेले आहे. जगातील सर्वच देश माणव व प्राणी यांच्यातील संघर्ष कमी करण्याकरिता प्रयत्नशिल आहेत, त्यातही वन्यजीव संस्था वनविभाग यांचा विशेष सहभाग आहे परंतु यांचे संपुर्ण प्रयत्न फसलेले आहे. मानव व प्राणी यांच्यामधिल संघर्ष विकोपाला गेला आहे. जंगलाचे प्रमाणच कमी झाल्याने ही परिस्थिती उद्‌भवली आहे. त्यामुळेच माणव व प्राणी यांच्यात संघर्ष निर्माण झाला आहे. ताडोबा अंधारी व्याघ्र प्रकल्पातील परिस्थीती नेमकी अषीच आहे म्हणजेच या ठिकाणी सुध्दा वन्य प्राणी व मानव यांच्यात संघर्षाची स्थिती तयार झाली आहे त्यातही वाघाचे मानसांवरील हल्ले याचेच द्योतक आहे. जिल्ह्यातील फार मोठे उद्योग हे वनांवर आधारीत आहेत तसेच येथील खाणींच्या संखेत होणारी प्रचंड वाढ यामुळे जंगले कमी होण्यास कारनीभूत ठरली आहेत. याचा परिणाम येथिल वास्तव्यास असलेल्या जंगली प्राण्यांवर झाला आहे. हल्ली वाघ, बिबटया जंगला बाहेर येत आहेत. कारण जंगलात त्यांच्या भूकेचा, पिण्याच्या पाण्याचा प्रश्न निर्माण झाला आहे. जंगलात त्यांची भूक व तहान भागत नाही तेव्हाच ते शोधार्थ जंगलाबाहेर पडतात, जंगलाबाहेरच्या वस्तीत घुसतात वा जंगलाच्या वाटेत दिसलेल्या कुणा मणुष्यावर हल्ला करतात. भूक-तहान न भागल्याने ते संतापलेले असतात. श्वापदांची ही माणसीकता समजने गरजेचे आहे. हरण, चितळ, रानडुकर, अस्वल यांच्या सारखे प्राणी जंगला लगतच्या शेतात पिके नष्ट करतांना पहावयास मिळते त्यामुळे शेतीचे नुकसान झाल्याने शेतकरी अत्यंत चिंतीत आहेत.

अभ्यास क्षेत्रः

आकृती क्र.

महाराष्ट्रातील राज्यातील चंद्रपूर हा एक मुख्य जिल्हा असुन वनांच्या बाबतीत गडचिरोली जिल्ह्याच्या नंतर या जिल्ह्याचा क्रमांक लागतो. जिल्ह्याचा एकुण भौगोलीक क्षेत्र ११४४३ वर्ग कि.मी. आहे. पैकी ५०१० वर्ग कि.मी. क्षेत्र जंगलव्याप्त असुन १८ अंश २४ मिनीट ते २० अंश ०३ मिनीट उत्तर अक्षांस ते ७८ अंश ३० मिनीट ते ८० अंश ३६ मिनीट पूर्व अंक्षांशाच्या

पट्ट्यात येतो. जिल्हयातील वनांची देखरेख व रक्षणा करिता चंद्रपूर मध्य, चंद्रपूर, ब्रम्हपूरी असे तीन विभाग निर्माण केले गेली आहेत. महाराष्ट्रातील इतर अभयारण्यापेक्षा जिल्हयातील ताडोबा अंधारी व्याघ्रप्रकल्पात वाघांची संख्या अधिक आहे. येथिल १७४५ खेडयांपैकी ८३५ खेडी ही वनांच्या प्रदेशात बसलेली आहेत व यात ६६८२६ कुटूंबाचा समावेश होतो.

पूर्वाभ्यासः

१) ताडोबा अंधारी व्याघ्र प्रकल्प परिसरातील वास्तव्यात असलेले वाघ तसेच इतर प्राणी यांच्यातील संघर्ष म्हणजेच वाघांनी येथिल मानसांवर केलेले प्राणघातक हल्ले व बळी यांच्यातील संघर्षा समंधातील प्रस्तुत शोध निबंधाचा विषय आहे. यांच्यातील संघार्ष कमी करण्याकरिता किंबहुना यावर आळा घालण्या करिता जिल्हयातीलच नाही तर भारतातील प्राणी अभ्यासक, विविध स्वंयंसेवीसंस्था इत्यांदिनी प्रयत्न केले आहेत. तसेच २) विद्या अत्रे व अनिरूध्द बेलसरे यांनी सुध्दा महाराष्ट्रपातळीवर मानव व प्राणी यांच्यातील संघर्षाचा अभ्यास केला व त्या सबंधीचा शोध अहवाल ष्वदसिपबज उपजपहंजपवद हनपकमसपदमेष या नावानी प्रसिध्द केला आहे.३) इ.ए.जेसन यांनी 'पापारा प्राणी संग्रहालय व उद्यान' येथिल अभ्यास करून प्राणी व मानव यांच्यातील संघर्षा संदर्भातील अभ्यास केला आहे. ४) भारतातील 'वाईल्ड लाईफ इन्स्टीट्युटचे' अभ्यासक गोविंद सागर भारद्वाज यांनी मध्य भारतातील उद्यानातील प्राणी व मनुष्य यांच्यातील संघर्षावर प्रकाश टाकलेला आहे. ५) 'रहीम अली अहमद' व सहकारी यांनी कान्हा प्राणी संग्रहालयातील मांस भक्षक प्राणी व येथिल मानसांमधील संघर्ष यातील सबंधाचा अभ्यास केला आहे. ६) महाराष्ट्रातील गोंदिया-भंडारा जिल्ह्याचे वनाधिकारी यशविरसिंग यांनी गोंदिया-भंडारा जिल्ह्याच्या अगदी शेजारी असलेल्या चंद्रपूर जिल्हयातील बिबटे व मानसातील संघर्ष यांचा अभ्यास करून त्यावर अभ्यासपुर्ण लेख लिहले आहेत. ७) त्याचप्रमाणे विद्या अत्रे, संजय ठाकुर, सुजोय चौधरी, अनिरूध्द बेलसरे सुदुरचित्रवाणीच्या सहाय्याने वाघांच्या अस्तीत्वा सबंधी बीट नुसार अभ्यास केला आहे.

उद्येषः

प्रस्तुत शोधनिबंध ताडोबा अंधारी व्याघ्रप्रकल्पातील खाणी व मानवी क्रीया यामुळे मानव व वन्य प्राणी यांच्यातील संघर्षासबंधातील अभ्यासा करिता निवडण्यात आला आहे. वन्यप्राणी व मनुष्य यांच्यातील संघर्षावर आळा घालण्या करिता सबंधित संस्थेला उपाययोजणे करिता याचा उपयोग व्हावा हा उद्येश समोर ठेवून निवडण्यात आलेला आहे.

संषोधन पध्दत व साहित्यः

मानव व प्राणी यांच्यातील संघर्ष या विषया संदर्भातील शोध निबंध पुर्णत्वास नेण्यास वनविभागाची आकडेवारी तसेच दैनिक वृत्तपत्रे यातील लेखांचा उपयो करण्यात आला, तसेच वन्यप्राण्यांच्या हल्ल्यात जखमी झालेले व मृत्युमुखी पडलेले व्यक्तीची माहीती स्थानीक वर्तमानपत्र यातील माहीती, वन्यप्राण्यासंबंधी वृत्तांकन करणारे देवनाथ गंडाटे यांचे लेख डॉ. दुधपचारे यांच्या लेखांचा सुध्दा अभ्यास करण्यात आला आहे. अशा प्रकारे दुय्यम व प्राथमीक साहीत्यांचा अभ्यास करण्यात आला आहे.

चंद्रपूर परिसरामध्ये वन्यप्राण्यांनी केलेले हल्लेः

चंद्रपूर जिल्हयात २०१३-२०१४ या वर्षात मोठया प्रमाणात वाघ व इतर वन्यप्राण्यानी मानसांवर हल्ले केलेले आहेत काही हल्ले किरकोळ स्वरूपाची तर काही प्राणघातक सुध्दा आहेत यात कार्हीना आपला प्राण सुध्दा गमवावा लागला आहे व त्यांची सुख्या १७ आहे. तक्ता क्रमांक १ मध्ये २००२ ते २०१४ या १३ वर्षातील वन्यप्राण्यांनी केलेले हल्ले व यात मृतझालेल्यांची आकडेवारी दिलेली आहे.

तक्ता १: वन्यप्राण्यांच्या हल्ल्यात जखमीची व मृतांची संख्या दर्शवीनारा तक्ता

वर्ष	वाघ	बीबटे	राणडुकर	अस्वल	गवा	अज्ञातप्राणी	एकुण
२००२	३	२	०	०	०	०	५
२००३	४	०	०	०	०	०	४
२००४	४	०	२	१	१	०	८
२००५	३	०	०	०	०	०	३
२००६	८	०	०	०	०	०	८
२००७	११	१	२	०	०	२	१६
२००८	१०	६	२	२	०	२	२२
२००९	२	०	४	०	०	०	६
२०१०	६	२	२	१	१	२	१७
२०११	४	६	०	०	०	१	११
२०१२	०	०	२	०	०	२	४
२०१३	१	४	०	०	०	६	१४
२०१४	४	०	३	१	०	६	१७
एकुण	६३	२१	१७	५	२	२७	१३५

तक्ता २. ताडोबा अंधारी व्याघ्र परिसरातील मानसांवर वाघानी केलेले हल्ले

(२०१३)

अनु क्र.	जखमी/मृतांची नावे	ठिकाण	दिनांक	कुठे व कार्य
१	अनुसया शेंडे (५०)	उसेरपाकचेक	२४ मार्च १३	अति घनदाट जंगलात मोहफुल वेचण्यास गेले असता
२	धृपदाबाई मडावी(६०)	सदागड सावली वनविभाग	६ एप्रि. १३	वनविभाग बिट क्र. १७१६. मोहफुल गोळाक करण्यास गेले असता
३	ललीताबाई पेंदाम(५०)	पार्थ्रिगांव	९ एप्रि. १३	कंपा.१६२ मध्ये मोहफुल गोळा करण्यास गेले असता
४	तुकाराम धारणे(६५)	अडेगांव	१० एप्रि. १३	मोहफुल गोळा करण्यास गेले असता
५	मालनबाई मुनघाट(४५)	आगरझरी	१० एप्रि. १३	मोहफुल गोळा करण्यास गेले असता
६	निलीमा कोटरांगे(१६)	चोरगांव	१२ एप्रि. १३	मोहफुल गोळा करण्यास गेले असता
७	किर्ती काटकर(१२)	पायली	१७ प्रप्रि १३	मोहफुल गोळा करण्यास गेले असता
८	गेपिका कालसर्पे(५०)	किटाळी	१७ प्रप्रि १३	रस्त्याने जातांना बिबटयाने हल्ला केला
९	अज्ञात व्यक्ती(४५)	लालपेठ	८ मे १३	बिबट्ययाने हल्ला केलेले मृत शरीर रस्त्याच्या

				कडेला सापडला
१०	राजु अलकंटिवार(३५)	लालपेठ	१० मे १३	घरात झोपला असतांना बिबट्याने हल्ला केला व मृत शरिर जंगलात फरकडत नेले
११	चरनदास वाकडे	बाबानगर चंद्रपर	१६ मे १३	महिती उपलब्ध्द नाही
१२	रेखा सोनटक्के(३५)	पानोली ब्रम्हपूरी	२३ मे १३	बिट नं. ११८ मध्ये तेंदुपाने तोडण्यास गेले असता.
१३	अर्चना तितरे	चंद्रपूर	७ डिसे १३	महिती उपलब्ध्द नाही
१४	सविता अवराडे	टॉवरहिल चंद्रपूर	१६ डिसे १३	महिती उपलब्ध्द नाही

तक्ता ३. ताडोबा अंधारी व्याघ्र परिसरातील मानसांवर वाघानी केलेले हल्ले

(२०१४)

अनु क्र.	जखमी/मृतांची नावे	ठिकाण	दिनांक	कुठे व कार्य
१	पुनम शेंडे (४३)	लोहारा	८ जाने १४	चंद्रपूर मधिल राखीव जंगलामध्ये
२	विठोबा नागोसे	कोलारा	८ जाने १४	ताडोबा अंधारी व्याघ्रप्रकल्पात वाघणी संपुर्ण षरीर खालेले आढळले.
३	सतिष कोद्रुपवार	धाबा	१२ जाने १४	सकाळी फेरफटका मारण्यास निघाला तेव्हा अस्वलाने हल्ला केला
४	सुनिता चित्रलवार(३०)	चिंतलधाबा	१७ फेब्रु १४	सरपन गोळा करण्यास गेले असता
५	मोहनसिंग ठाकुर(४५)	चेक बरडी	१३ मार्च १४	बिट क्र १२० मध्ये लाकडे आणण्यास गेले असता
६	कविता चौधरी(४५)	चिमुर	६ एप्रिल १४	काजळसर च्या जंगलात सर्पनाकरिता गेले असता
७	प्रकाश पेंदोर(४५)	भटाळी पोंभुर्णा	२० प्रप्रि १४	वनविभागातील कर्मचारी रोज प्रमाने कामावर गेले असता बिट क्र ११७
८	वारलु राउत(६०)	हळदा ब्रम्हपूरी	२१ प्रप्रि १४	मोहफुल गोळाक करण्यास गेले असता वाघाने हल्ला केला
९	देवराव गावंडे(३५)	मुगेरमेंढा सिंदेवाही	१८ मे १४	घनदाट जंगलात तेंदुपाने गोळा करण्यास गेले असता.
१०	जुबेदा शेख(३५)	मनोरा बल्हारपुर	२० जुन १४	कंपार्टमेंट ४४७ मध्ये सरपन साठी गेले असता
११	वत्सला सेडमाके(४८)	देवई जरना	२० जुलै १४	प्रातविधी करिता गेले

				असता.
१२	पांडुरंग आत्राम(६७)	गनोती तुकुम	२० जुलै १४	बीटगार्डचा चौकिदार कामा करिता गेले असता.
१३	दत्तु धोळे(३५)	देवाडा पोभुर्णा	१७ ऑग. १४	हरवलेली गाय शोधण्यास गेले असता वाघाने हल्ला केला
१४	पद्मा मडावी(३०)	चिंतलढाबा	२० नोव्हे १४	कंपारमेंट ६७ मध्ये चार पाच महिला सोबत गेले असता वाघाने हल्ला केला.
१५	सुरेखा शेंडे	मोठा निंबाळा	२६ नोव्हे १४	झाडु बनविण्याचे गवत आनन्या करिता अन्य दहा महिला सोबत गेले असता वाघाने हल्ला केला
१६	सन्याशी नैताम	मामला	१० डिसे १४	गेविंद मल्लारपवार यांचे बैल जंगलात चरण्या करिता घेवुन गेले असता

वरील दोन्ही तक्त्यांचे निरीक्षण केल्यास लक्षात येते की, मानसांवरील प्राण्यांचे हल्ले हे मार्च ते मे महिण्यांत झालेले आहेत या वेळेस वनातील प्राणी षिकार व पाण्याच्या षोधात असतात. काही अपवाद वगळता सर्वच्या सर्व वाघांचे हल्ले अथवा दुसऱ्या प्राण्यांचे हल्ले मोहफुल वेचण्याकरिता गेले असता झाले आहेत. व ते सर्व ताडोबा अंधारी व्याघ्र प्रकल्पाच्या जंगलातील आहेत. २०१३ मध्ये १४ लोकांचा अषा हल्ल्यात मृत्यु झाला आहे. तर २०१४ मध्ये १६ लाकांना आपला जिव गमवावा लागला आहे.

तक्ता ४: २०१० ते २०१३ मध्ये वन्य प्राण्यानी केलेले हल्ले

वर्ष	मानसांचा मृत्यु	हमल्यात जखमी	पाळीवप्राण्याचा मृत्यु	पिकांचे नुकसान	एकुण
२०१०	१७	१६५	१४६०	२२२६	३८६८
२०११	११	१३८	१२०६	३६३२	५२८७
२०१२	०४	१००	१२४८	१७११	३०६३
२०१३	१४	४०	३८८	२६५८	३१००

संदर्भ http://www.mahaforest.nic.in

ताडोबा अंधारी व्याघ्रप्रकल्पातील वन्यप्राणी व येथिल वास्तव्यात असलेल्या लोकांमध्ये अतिशय तिव्र स्वरूपाचा संघर्ष निर्माण झाला आहे. त्या तुलनेत महाराष्ट्रातील इतर प्रकल्पामध्येइतका तिव्र स्वरूपाचा संघर्ष नाही. या अभयारण्याच्या जवळच नागझिरा अभयारण्यातील प्राण्याच्या हल्ल्यांचे प्रमाण अतीशय कमी आहे.

ताडोबा अंधारी व्याघ्रप्रकल्पातील वन्यप्राण्यानीच येथील लोकांवर हल्ले करून जखमी किंवा ठार केले असे नाही किंबहुना मानसांनी सुध्दा वाघ किंवा अन्य वन्यप्राण्याची शिकार केले आहे. २०१० ते २०१६ या कालावधीत मानवी कृत्य व अन्य कारणाने वाघांचा मृत्यु सुध्दा झाला आहे. २०१० पासुन तर २०१६ या वर्षात ५४ वाघ व बिबट्यांचा मृत्यु झाला आहे. यातील ३२ वाघांचा मृत्यु रस्ते व रेल्वे अपघातात झाला आहे. आणि हे सर्व प्राण्यांचे भ्रमण क्षेत्र आक्रसल्याने झाले आहेत. २३ जानेवारी २०१२ रोजी मध्य चांदा वनवृतातील बीट क्रमांक १२१ मध्ये वाघ मृतावस्तेत आढळला आश्चर्याची गोष्ट म्हणजे याची चारही पाय नसल्याने याची शिकार केली असावी असा वनविभागाच्या कर्मचाऱ्यांनी अंदाज वर्तवीला होता. १६ फेब्रुवारी २०१२ मध्ये चद्रपूर शहराच्या अगदी जवळ असलेल्या लोहारा जंगलात रस्त्यांच्या कडेला वाघ मृतावस्थेत आढळला, तर २६ एप्रिल २०१२ ला पद्मापूरच्या जंगलात बिट क्रमांक ५६६ मध्ये लोखंडी ट्राप लावून वाघाची शिकार करण्यात आली. घंटाचौकीच्या जंगलात १८ मे २०१२ रोजी वाघाची वेगवेगळी दहा तुकडे करून रस्त्याच्या कडेला फेकली होती. २७ आक्टोबर २०१२ ला याच जंगलात विष टाकुण वाघाला ठार करण्यात आले होते. २६ जुलै २०१४ पोंभुर्णा तालुक्यातील डोंगरहळदी गांवात शार्पशुटर करवी वाघाची शिकार करण्यात आली या वाघांनी परिसरातील ८ लोकांवर हल्ले करून त्यांना ठार केले होते. एकंदरीत २०१२ या वर्षात मोठया प्रमाणात वाघांची शिकार केल्या गेली अथवा रस्त्यांच्या अपघातामध्ये त्यांचा मृत्यू झाला.

अ) मानव व प्राणी यांच्या संघर्षाची कारणेः

या परिसरात वाघांनीच मानसांवर हल्ला करून त्यांना ठार केले असे नाही, तर वनातील अन्य प्राण्यानी सुध्दा हल्ला करून गतप्राण केले आहे. जसे बिबट, अस्वल, रानगवा, तडस, लांडगे, रानटी कुत्रे, निलगाय इत्यादी राणटी मानवा व प्राण्यामध्ये मध्ये संघर्षाची स्थिती निर्माण झाली आहे. अनेकदा या प्राण्यांनी मानसांवर हल्ले केले आहेत. येथिल जंगलाच्या अगदी कडेला लागुन काही शेतकऱ्यांची शेती आहे. त्यामुळे या शेतीमधे चरण्या करिता येतात व पिकांचे नुकसान करतात, ही बाब अत्यंत चिंतनीय आहे. अलिकडील दषका पासुन वनकर्मच्याऱ्यांच्या व्दारा शेतकऱ्यांना समोपदेष देण्यात येत आहे व त्यांच्या पिक पध्दतीमध्ये बदल करण्यास वारंवार सांगण्यात येत आहे. त्यामुळे अशा शेतीमध्ये पिके बदलवून पिक घेण्यात येत आहेत. शेतकऱ्यांनी आपले गुरेढोरे अतीशय घनदाट जंगला मध्ये चरण्यास न जावु देता त्यांच्या करिता परीसरामध्येच व्यवस्था करावे. याचे पालन केल्याने २०१२-१३ मध्ये हि संख्या १८८४६ होती यात बदल होवुन ३६५२ पर्यंत आली. चंद्रपूर जिल्हयात मोठया प्रमाणात तेंदुपत्ता उद्योग चालतो याची एकुन उलाढाल ८० करोड रूपयात आहे. या व्यवसायात येथिल अनेक कुटूंब गुंतलेली आहेत. कारण या व्यवसायात रोख पैसे दिल्या जाते. त्यामुळे

गरिब लोक कोणताही विचार न करता अत्यंत दाट जंगलात प्रवेष करतात व वनातील हिस्त्र पशुला बळी पडतात.

ब) जिल्ह्यातील वनांवर आधारीत उद्योगः

चंद्रपूर जिल्हयातील कोळसा खाण व्यवसायाचा सरळ प्रभाव येथिल वन्य प्राण्यावर झाला आहे यामुळे प्राणी व खाण व्यवसाय असा व्दंद या परीसरात निर्माण झाला आहे. ताडोबा अंधारी व्याघ्र प्रकल्प वाघां करिता भारतामध्ये प्रसिध्द आहे. भारतातील एकमेव जिल्हा आहे ज्या ठिकाणी १५० पेक्षा जास्त वाघ वास्तव्यास आहेत. त्या मुळे काही स्वंयसेवी संघटनांची अशी मागणी आहे की चंद्रपूर जिल्हा वाघांचा जिल्हा म्हणुन घोषीत करावा. हे जरी सत्य असले तरी जिल्हयात मोठया प्रमाणात कोळशाचा साठा अस्तित्वात असल्याने खाणव्यवसाय अग्रेसर आहे. येथिल फार मोठया खाणी या जंगलाच्या सानिध्यात आहेत किंबहुना या खाणींच्या निर्मीतीच्या वेळेस जंगले उध्दवस्त करून खाणी निर्माण केल्या गेली आहेत. या खाणीनी एकुण ३७०२द हेक्टर जंगले नष्टकरून हा व्यवसाय सुरूकरण्यात आला आहे.

क) जंगलाच्या कडेला केल्या जाणारी शेतीः

जिल्हयातील अनेक शेतकऱ्यांची शेती जंगलाच्या शेजारी आहे, अलिकडे त्यात पुन्हा भर पडली आहे. कारण अश्या प्रकारची शेती पुन्हा निर्माण करण्याकरिता जंगले तोडली जात आहेत. त्या मुळे ती नष्ट होवुन नैसर्गीक व जैवीक बदल या ठिकाणी झाले आहे. एवढेच नाही तर शेतकरी शेतांमध्ये तुर, उस, या प्रकारचे पिके घेतात व ही पिके प्राण्यांना आकृष्ट करतात जेव्हा प्राणी या चरण्यासाठी शेतात जातात अशा वेळेस रस्ता ओलांडतांना प्राण्याचा अपघात होणे नैसर्गीक आहे.

ड) वनविभाग वनिकरणाची पध्दतीः

वनविभागाव्दारे विविध कंपार्टमेंटमध्ये वृक्षारोपन केल्या गेले आहे. व या मध्ये फक्त साग व बांबु इत्यादींची रोपे महत्वपुर्ण आहेत. कारण या दोन प्रकारच्या वृक्षांची मागनी जास्त आहे यावर आधारीत उद्योग जिल्हयात चालतात त्यात प्लायवुड व कागद उद्योग व इमारती लाकुड हे महत्वपुर्ण आहेत. येथिल साग वृक्षाची संपुर्ण जगात मांगणी आहे कारण हा अत्यंत टिकावु असा आहे. परंतु हे प्राण्यांच्या दृष्टीने उपयोगी नाही.

ताडोबा क्षेत्रातील बफर क्षेत्र वाढविले गेले पाहिजे सोबतच या क्षेत्रात चाऱ्याचे क्षेत्रवाढविले गेले पाहिजे. तहाण भागविण्याकरिता पाणवठ्यांची संख्या वाढविली गेली पाहीजे.

इ) वनांवर आधारीत व्यवसायः

फेब्रुवारी ते मे उन्हाळयातील महिण्यात मणुष्य जाळण्याकरिता सर्पन, मोहफुल, तेंदुपान इत्यादी उदरनिर्वाहाच्या साधनांकरिता घनदाट जंगलामध्ये प्रवेश करतो. त्याच वेळेस पाळीव प्राणी सुध्दा पाण्याच्या शोधात व चरण्याकरिता प्रवेश करतात. शेतकरी प्राण्यांची औषधी व शेतीला लागाणारे अवजारां करीता जंगलात जातात. तसेच वन्यप्राणी सुध्दा पाण्याच्या शोधात व शिकारीच्या शोधात बाहेर पडतात व याचा सबंध येवुन प्राणी हल्ले करतात. जंगलातील पाण्याचे स्त्रोत एकच असल्याने

अशा ठिकाणी मानव व प्राणी समोरासमोर येवुन प्राणी हल्ले करतात.

ई) ग्रामीण लोकांमध्ये प्राण्याच्या आचरणाच्या माहितीचा अभावः

प्राण्यांचे काही हल्ले ग्रामिण भागातील लोकांच्या चुकीमुळे झालेली आहेत. कारण प्राण्यांच्या हालचाली संदर्भात त्यांच्यात माहितीचा अभाव असल्याने असे हल्ले होतात. काही वेळेस ग्रामिन भागातील लोक प्रातविधी, सर्पन आनण्याकरिता, तेंदुपता गोळा करण्याकरिता, मोहफुल इत्यादी कार्या करिता कारण नसतांना अत्यंत घनदाट जंगलात प्रवेश करतात व वन्यप्राण्याचे शिकार होतात. महत्वपुर्ण बाब म्हणजे सर्वात जास्त हल्ले मोहफुल वचण्यास गेलेल्यांवर झालेली आहेत.

उ) पर्यटकांचा वाढता ओघः

ताडोबा अंधारी व्याघ्र प्रकल्पात पर्यटकांची गर्दी फार जास्त असते, कारण हा अभयारण्य आंतरराष्ट्रीय दर्जाचा असल्याने हमखास या ठिकाणी वाघ दर्षनाची नामी संधी असते त्यामुळे पर्यटकामध्ये जास्त आकर्षन आहे. पर्यटकांच्या गर्दीमुळे वन्य प्राण्यांच्या मानसिकतेत बदल होत असते. प्राण्यांना मनुष्यांचा सहवास नको असतो त्यामुळे हे प्राणी इतरठीकाणी किंवा गावामध्ये शिरतात. त्यात पुन्हा भर, आलिकडे विकसित झालेली इको टुरीझम पध्दत होय. पर्यटनाच्या माध्यमातुन रोज या राष्ट्रीय अभयारण्यात १३६ स्वयंचलीत वाहणे चालतात आणि हे प्रमाण अत्यंत जास्त आहे. तसेच १ लाख पेक्षा जास्त पर्यटक व १० हजार पेक्षा जास्त वाहणे दरवर्षी येथे भेटी देत असतात, वाघांची संख्या वाढत आहेत तसेच व्याघ्र पर्यटनही वाढत आहे. शिवाय नवनवीन ठिकाणी वाघांचे अस्तीत्व आढळल्याने तिकडेही पर्यटक आकर्षीत होत आहेत आणि हे पर्यटक बेशीस्त पर्यटन करतात त्यामुळे येथिल प्राण्यांना अळथळा होवुन माणसांवर हल्ले करतात.

उपायः

माणव व प्राणी यांच्यातील संघार्ष व यातुन होणारे प्राण्यांचे हल्ले या करिता शत प्रतीशत उपाय करणे अवघड बाब आहे व तसे होणारही नाही परंतु हे प्रमाण कमी करण्या करिता खालील प्रमाणे उपाय सुचविण्यात येत आहेत.

१) खाणी करिता जंगलाचा विनाष होत आहे तो थांबवीला पाहीजे.

२) स्वयंपाकाकरिता सर्पनावर विसंबुन न राहता याला पर्याय म्हणून दुसरी व्यवस्थ स्वंयपाकाचा गॅस यासारख्या साधनांचा उपयोग करणे गरजेचे आहे.

३) वनरक्षक, वनपाल, क्षेत्राधिकारी, चौकिदार इत्यादी वनविभागाचे कर्मचाऱ्या मार्फत गावातील लोकांना जागृती करणे गरजेचे आहे. तसेच वनाधिकारी व स्वंयसेवी संस्थांच्या माध्यमातुन सुध्दा मार्गदर्शन करणे गरजेचे आहे.

४) विद्यापिठीय, माध्यमीक व उच्च माध्यमीक या वर्गांच्या पाठ्यक्रमांध्ये वाघांच्या हल्ल्याच्या जागृती संदर्भातील नियमांचा समावेष करणे गरजेचे आहे.

५) जंगलाच्या सानिध्यातील शेतीतील पिक पध्दतीत अमूलाग्र बदल करणे गरजेचे आहे अशा शेतीमध्ये तुर, उस, बटाटे यांची

लागवड थांबवुन बागायती शेती करणे गरजेचे आहे.

६) वनविभागा तर्फे ज्या व्यक्तीचा बळी गेला अशा व्यक्तीच्या घरातील एकाला नौकरी किंवा जास्तीत जास्त आर्थिक मदत देणे गरजेचे आहे.

७) ताडोबा अंधारी व्याघ्र प्रकल्पातील लोकांचे पुर्नरवसन शहराच्या ठिकाणी केल्या गेले पाहीजे.

८) प्राण्यांच्या हल्ल्यात जखमिंवर त्वरीत उपचाराकरिता वनविभागातर्फे दवाखाण्यांची व्यवस्था उपलब्ध्द करून देण्यासाठी पथक निर्माण करणे आवष्यक आहे. जेनेकरून जखमीवर वेळेवर उचार होईल.

९) अडीकडे पर्यटन व्यवसायात वाढ झाल्याने पर्यटकांची संख्या वाढत आहे, त्यामुळे साहजिकच याचा प्रभाव येथिल प्राण्यांवर झाला आहे, त्यामुळे पर्यटकांचा ओघ कमी करणे आवश्यक आहे.

१०) शासनाने प्राण्यांचे भटकंती क्षेत्र, दाट वने असलेली प्रदेश, वनिकरणाची पध्दत या मध्ये अमुलाग्र बदल करून असे वने खाणी करीता देण्याचे टाळावे

११) अभयारण्याच्या ठिकाणातील झुडपी जंगलाचे क्षेत्र कमी करून तिथे चांगल्या प्रतीचे गवत लावायला पाहीजे त्यामुळे चारा म्हणून हरणांसह अनेक वन्यजीवांच्या खाद्याचा प्रश्न सुटेल हरण जंगलाबाहेर न गेल्याने वाघ बिबट यांच्या सारख्या श्वापदांचाही शिकारींचा प्रश्न सुटेल.

निष्कर्ष

अलिकडे कोणतेही वर्तमान पत्रे असोत त्यात प्राण्यांचे मानसांवरील हल्ले मानव व प्राणी यांच्यातील संघार्षाची बातमी ही सर्वसाधारन बाब आहे. ताडोबा अंधारी व्याघ्र प्रकल्पातील प्राण्यांचे सानिध्य व यांची एकुणच संख्येच्या बाबतीत प्रसीध्द आहे. त्यांची एकुण संख्या १५० पेक्षा जास्त आहे. महाराश्ट्रातील इतर अभयारण्यापेक्षा या ठिकाणी प्राण्यांचे वास्तव्य व जैव विवीधता जास्त आहे. त्यामुळेच वाघ हल्ल्यातील बळींची संख्या व जखमींच्या संख्येतसुध्दा महत्वपुर्ण वाढ झाली आहे. आणि हे सर्व खाणी मुळे व अन्य उद्योगांमुळे येथिल जंगलाचे प्रमाण किंवा जंगले आक्रसल्यागेल्याने प्राण्यांचे भटकंती क्षेत्र कमी झाले आहे. प्राण्यांचे हल्ले साधारनतः फेब्रुवारी ते मे या उन्हाळयातील महिण्यांत झाले आहेत. कारण या वेळेस गावातील ग्रामस्थ उदरनिर्वाहाच्या साधनांकरिता घनदाट जंगालामध्ये प्रवेष करतात यावेळेसच वाघांचे पाळीवप्राण्यावर व माणसांवर हल्ले झाले आहेत हे कमी करण्याकरिता काही उपाया सुचविले आहेत.

संदर्भः

1. Yash Vir Sing, 'Man animal conflict' A study of human-wildlife conflict Estern Vidharbha region of Maharashtra.
2. Dudhapachare, Y.Y., 'Man animal conflict in Chandrapur District of Maharashtra, and its Relation with Anthropojenic Activities.
3. Wttp://www.mahaforest.nic.in
4. Human-leopard conflict and management guidelines, 2007-NGO's Report.

International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.3 No.3 Sept – Oct 2022

आळंदीतील जलप्रदूषणाचा भौगोलिक दृष्टीकोनातून अभ्यास

डॉ. ओमप्रकाश मुंदे[1] *डॉ. दादासाहेब मारकड*[2] *डॉ. दिलीप मुळूक*[3]

१. भूगोल विभागप्रमुख, नारायणराव राणा महाविद्यालय बडनेरा, अमरावती

२. सहयोगी प्राध्यापक भूगोल विभाग, हुतात्मा राजगुरू महाविद्यालय, राजगुरूनगर

३ प्राध्यापक, भूगोल विभागप्रमुख हुतात्मा राजगुरू महाविद्यालय, राजगुरूगर

Corresponding Author- ***डॉ. ओमप्रकाश मुंदे***
Email id: dmmarkad@gmail.com
DOI-10.5281/zenodo.7271356

सारांश :

आळंदीतील सर्वात महत्ताचे जलप्रदृषण हे प्रामुख्याने इंद्रायणी नदीचे जलप्रदूषण आहे. इंद्रायणी नदीमध्ये अनेक कारखाने आणि शहरांचे सांडपाणी सोडले जाते. त्यामुळे इंद्रायणी नदीचे मोठ्या प्रमाणावर प्रदूषण होते. वारीच्या काळात तर लाखो भाविक इंद्रायणीमध्ये स्नान करतात. त्यामुळे आणखी पद्रूषण वाढते. मात्र यात्रेच्या काळात वरच्या धरणांमधून इंद्रायणी नदीमध्ये मोठ्या प्रमाणात पाणी सोडले जाते. यामुळे प्रदूषणाची तीव्रता कमी होते. तरीही इंद्रायणी नदीच्या पाण्यामध्ये इ कोली आणि कोलीफॉर्म हे घातक जीवाणू आढळत असल्यामुळे हे पाणी पिण्यासाठी दूषित आहे.

बीजसंज्ञा : इंद्रायणी, जलप्रदूषण, इ कोली, कोलिफॉर्म, टर्बिडिटी.

प्रस्तावना :

पृथ्वीवर पाण्याचा साठा भरपूर असला तरी त्यातील ९७ टक्के पाणी समुद्रजल आहे. ते खारट असल्यामुळे दैनंदिन वापरासाठी, शेतीसाठी, औद्योगिक वापरासाठी ते निरूपयोगी आहे. उरलेल्या ३ टक्के गोड्या पाण्यापैकी जवळपास २ टक्के पाणी हे बर्फ आणि अतिशय खोल अशा भूगर्भात आहे. त्यामुळे केवळ १ टक्के गोडे पाणी वापरण्यासाठी उपयुक्त आहे. हे पाणी नद्या, सरोवरे, तलाव, विहिरी या जलाशयांमधून प्राप्त होते.

ज्या पाण्यामध्ये बाह्य अपायकारक घटक मिसळलेला नसतो त्या पाण्याला शुद्ध पाणी म्हणतात. हे वापरण्यासाठी उपयुक्त आणि सुरक्षित असते. ज्या पाण्यात सूक्ष्म जीवाणू किंवा मृत जैविक घटक मिसळलेले असतात, त्याला दूषित पाणी असे म्हणतात. ते वापरण्यासाठी अयोग्य असते. प्रदूषित पाणी यापेक्षाही खराब आणि दुर्गंधीयुक्त असते. त्या पाण्याची चव बिघडलेली, रंग गढूळ व गुणवत्ता खालावलेली असते. ते वापरण्यासाठी विषारी व हानीकारक बनलेले असते. ज्या क्रियेमुळे स्वच्छ व शुद्ध पाण्यात बाह्य घटक मिसळले असता त्याची नैसर्गिक गुणवत्ता नाहीशी होऊन ते वापरण्यास अयोग्य बनते, त्या क्रियेला जल प्रदूषण असे म्हणतात. (पंडित - बापट २००९)

इंद्रायणी नदी ही भीमा नदीची एक महत्वाची उपनदी आहे. इंद्रायणी नदी लोणावळ्याजवळ कुरवंडे येथे उगम पावते. यानंतर ती देवघर, पठारगाव, कामशेत, पारवाडी, नानोली, राजपुरी, अंबी, इंदोरी, कान्हेवाडी, देहू, चिखली, मोशी, डुडुळगाव, केळगाव, आळंदी, चऱ्होली, गोलेगाव, मरकळ या मार्गे वाहत जाऊन तुळापूरजवळ भीमा नदीस मिळते. इंद्रायणी नदी ही मावळ तालुक्यात उगम पावून नंतर ती खेड व हवेली पिंपरी चिंचवड महानगरपालिका हद्द या दरम्यान वाहत जाते. या नदीची एकूण लांबी ९३ कि.मी. आहे आंध्रा ही इंद्रायणीची प्रमुख उपनदी आहे. आंध्रा, कुंडलिका, राम, कुबेरगंगा या इंद्रायणीच्या उपनद्या आहेत. इंद्रायणीवर

आणि इतर उपनद्यांवर लोणावळे, वळवण, शिरवट आणि आंध्र अशी चार धरणे बांधलेली आहेत. या धरणांपासून वीजनिर्मिती केली जाते.

इंद्रायणी नदी ही पवित्र नदी मानली गेली असली तरी तिचे भयानक प्रदूषण झालेले आहे. ज्या नदीच्या काठी मानवी वसाहतींचे, शहरांचे आणि कारखान्यांचे प्रमाण अधिक आहे. अशा नद्यांचे प्रायः मोठ्या प्रमाणावर प्रदूषण होत असते. इंद्रायणी नदीचा ४ कि.मी.चा प्रवाह हा लोणावळा या शहरातून वाहतो. या शहरातील सर्व सांडपाणी इंद्रायणी नदीमध्ये सोडले जाते. त्यामुळे उगमापासूनच इंद्रायणी नदीचे प्रदूषण सुरू होते. या बाबतीत सह्याद्री पर्वतात उगम पावणाऱ्या इतर नद्यांचे सुरूवातीचे प्रवाह स्वच्छ आणि प्रदूषणमुक्त असतात. मात्र इंद्रायणीच्या नशिबी हे नाही. तिचे जन्मतःच प्रदूषण सुरू होते. नंतर ती पुढे वाहत जात असताना कामशेत, वडिवळे, पाथरगाव, नाणे, नानोली, पारवडी, इंदोरी, देहू वगैरे गावांचे सांडपाणी इंद्रायणीमध्येच सोडून दिले जाते. त्यामुळे इंद्रायणी आणखी प्रदूषित होते. देहू हे तीर्थक्षेत्र आहे. त्यामुळे इंद्रायणी नदीत अनेक वारकरी आणि भाविक स्नान करतात. तसेच कपडे धुणे, पोहणे, निर्माल्य फेकणे, खराब किंवा जादा झालेले अन्न नदीत फेकून देणे, यामुळे इंद्रायणी नदीचे प्रदूषण झालेले आहे. देहूजवळ आल्यानंतर इंद्रायणी नदी ही पिंपरी-चिंचवड महानगरपालिकेच्या हद्दीत प्रवेश करते. तेथून पुढे ती कमालीची प्रदूषित होत जाते. पिंपरी-चिंचवड महानगरपालिकेतील चिखली, मोशी, डुडुळगाव, येथील नागरिकांचे सर्व सांडपाणी इंद्रायणी नदीमध्ये सोडून दिले जाते.

रामझरा नावाचा एक ओढा चिखलीजवळ इंद्रायणी नदीला येऊन मिळतो. हा ओढा चिखलीजवळील हरगुडे वस्ती येथे उगम पावून कुदळवाडीतून पुढे वाहत जातो. नंतरच्या काळात या ओढ्याला गटाराचे स्वरूप आलेले आहे. कारण चिखली, कुदळवस्ती, जाधववाडी, हरगुडे वस्ती येथील व्यापारी बंदिस्त गोदामात रसायने साठवितात. नंतर त्या रसायनांचे डबे, पोती, कंटेनर्स, बॅगा वगैरे भंगारवाल्या लोकांना विकतात. हे भंगारवाले तेथेच त्या रसायनांच्या डबे, पोती, बॅगा, कंटेनर्स धुतात. त्याचे प्रदूषित सांडपाणी तसेच राम ओढ्यात सोडले जाते. हे पाणी इंद्रायणी नदीत जाऊन मिसळते. त्यामुळे इंद्रायणी प्रदूषित होते.

इंद्रायणी नदीच्या प्रदूषणाने उग्र रूप धारण केलेले आहे. देहू हे एक महत्वाचे तीर्थक्षेत्र इंद्रायणी नदीच्या काठी आहे. देहू तीर्थक्षेत्र विकास आराखडा अंतर्गत सांडपाणी प्रक्रिया प्रकल्प एस.टी.पी. सुरू आहे. या प्रकल्पांतर्गत देहू गावातील सांडपाण्यावर प्रक्रिया करून नंतर ते इंद्रायणी नदीत सोडण्यात येणार आहे. मात्र या प्रकल्पाला दिरंगाई होत असल्याने नदीमध्ये प्रदूषित पाणी सोडले जात आहे. यामुळे नदीपात्रातील पाणी अत्यंत दूषित झालेले आहे.

८ जून २०१९ च्या दरम्यान इंद्रायणी नदीमध्ये कुठले तरी विषारी द्रव्य सोडले गेले. त्यामुळे ९ जून रोजी देहू गावाजवळ इंद्रायणी नदीमध्ये हजारो मासे मृत झाले आणि इंद्रायणी नदीच्या पाण्यावर तरंगू लागले. नागरिकांनी आणि फ्रेंडस् ऑफ नेचर संस्थेच्या लोकांनी २००० मृत मासे इंद्रायणीतून बाहेर काढले. इंद्रायणी नदीच्या या प्रदूषणाबाबत पिंपरी चिंचवड महानगरपालिकेवर गुन्हा नोंदविण्यात आलेला आहे. तसेच देहू ग्रामपंचायतीला नोटिस बजावण्यात आलेली आहे.

इंद्रायणी नदीच्या प्रदूषणाची समस्या कायम आहे. पिंपरी-चिंचवड महानगर पालिकेच्या हद्दीतील सांडपाणी तसेच रसायनमिश्रित पाणी तसेच नदीत सोडण्यात येते. यामुळे इंद्रायणी नदी प्रदूषित झालेली आहे.

इंद्रायणी नदी ही गटारगंगा झाली असल्याचे आपले मत दै. प्रभातने २२ जानेवारी २०२० च्या पत्रकात म्हटलेले आहे. त्यांच्या मते, 'पवित्र इंद्रायणी नदी आता गटारगंगा बनत आहे. शहरातील उपनगरातून मोठ्या प्रमाणात सांडपाणी व मैलामिश्रित पाणी थेट इंद्रायणी नदीपात्रात सोडले जात आहे. तसेच काही ठिकाणी सांडपाणी वाहिनी फुटल्याने पाणी थेट नदीत मिसळत असल्याने जलप्रदूषण होते त्यामुळे जलचरांचे, स्थानिक नागरिक,

तीर्थक्षेत्राला येणाऱ्या भाविकांचे आरोग्य धोक्यात आलेले आहे. सांडपाणी, मैलापाणी, भंगार धुणे, गाड्या धुणे, कारखान्याचे रसायनमिश्रित पाणी या सर्व कारणांनी इंद्रायणी नदी प्रदूषित होत आहे.

अभ्यासाचे उद्दिष्ट :

आळंदीतील इंद्रायणी नदीच्या पाण्याच्या प्रदूषणाचा अभ्यास करणे.

अभ्यासपद्धती :

या अभ्यासासाठी अभ्यासकाने इंद्रायणी नदीच्या जल प्रदूषणाचा अभ्यास करण्यासाठी २०२१ यावर्षी कार्तिकी यात्रेच्या अगोदर आणि यात्रेदिवशी आळंदीतील इंद्रायणी नदीचे तीन ठिकाणचे पाण्याचे नमुने घेतले. यात्रे अगोदर चाकण चौकाजवळील नवा पूल, पुंडलिक मंदिराजवळ सिद्धबेटाजवळील नवा पूल या ठिकाणचे पाण्याचे नमुने घेतले आणि यात्रेच्या दिवशी चाकण चौकाजवळील नवा पूल, पुंडलिक मंदिराजवळ सिद्धबेटाजवळील नवा पूल याठिकाणचे नमुने घेतले. त्या नमुन्यांची प्रयोगशाळेत तपासणी केली. तपासणी केल्यानंतर पुढीलप्रमाणे निष्कर्ष मिळालेले आहेत.

विषय विवेचन :

इंद्रायणी नदीच्या पाण्याची तपासणी करताना त्या पाण्याचा रंग, पी.एच. टर्बिडिटी, कॅल्शियम, मॅग्नेशियम, इत्यादि घटकांची तपासणी केली. तसेच त्या पाण्यातील जीवाणूंचीही तपासणी केली. या तपासणीचे निष्कर्ष पुढीलप्रमाणे आलेले आहे.

टेबल क्र.१ इंद्रायणी जल प्रदूषण नमुना क्र. १. चाकण चौकाजवळील नवा पूल (यात्रेपूर्वी)

S.N.	Parameter	Observed Value	IS 10500: 2012 Required Standards	Units
Physical Parameters				
1	Colour	1 Hazen	Max.5	Hazen
2	Odour	Agreeable	Agreeable	--
3	pH	7.2	6.5-8.5	--
4	Turbidity	0.4	Max. 1.0	NTU
5	Total Dissolved Solids	366	Max.500	Mg/lit
Chemical Parameters				
6	Alkalinity as CaCO3	180.00	Max.200	Mg/lit
7	Total Hardness as CaCO3	208.00	Max.200	Mg/lit
8	Calcium as Ca	53.00	Max.75	Mg/lit
9	Magnesium as Mg	18.00	Max.30	Mg/lit
10	Chlorides ac CI	46.00	Max.250	Mg/lit
Microbiological Parameters				
11	E. coli	Present	Absent	/100ml
12	Coliform	Present	Absent	/100ml

(स्रोत : इंद्रायणी पाणी चाचणी अहवाल क्र.१)

हा इंद्रायणी नदीच्या पाण्याचा नमुना यात्रेपूर्वी घेतलेला आहे. या पाण्यामध्ये इ कोली आणि कोली फॉर्म या दोन्ही प्रकारचे बॅक्टेरिया सापडलेले आहेत. तसेच या पाण्याचा सामू ७.२ आढळून आलेला आहे. तसेच या पाण्याचा हार्डनेस २०८ इतका आहे. त्यामुळे हे पाणी घेतलेल्या नमुन्यांपैकी पिण्यासाठी सर्वात दूषित असल्याचे दिसून आलेले आहे.

टेबल क्र.२. इंद्रायणी जल प्रदूषण नमुना क्र.२. पुंडलिक मंदिराजवळ (यात्रेपूर्वी)

S.N.	Parameter	Observed Value	IS 10500: 2012 Required Standards	Units
Physical Parameters				
1	Colour	1 Hazen	Max.5	Hazen

2	Odour	Agreeable	Agreeable	--
3	pH	7.18	6.5-8.5	--
4	Turbidity	0.4	Max. 1.0	NTU
5	Total Dissolved Solids	330	Max.500	Mg/lit
Chemical Parameters				
6	Alkalinity as CaCO3	170.00	Max.200	Mg/lit
7	Total Hardness as CaCO3	186.00	Max.200	Mg/lit
8	Calcium as Ca	48.00	Max.75	Mg/lit
9	Magnesium as Mg	16.00	Max.30	Mg/lit
10	Chlorides ac CI	38.00	Max.250	Mg/lit
Microbiological Parameters				
11	E. coli	Present	Absent	/100ml
12	Coliform	Present	Absent	/100ml

(स्रोत : इंद्रायणी पाणी चाचणी अहवाल, क्र. २)

वरील टेबलवरून असे लक्षात येते की, पुंडलिकाच्या पुलाजवळील इंद्रायणी नदीचे पाणीही पिण्याच्या दृष्टीने दूषित आहे. त्यामध्ये इ कोली आणि कोलीफॉर्म या दोन्ही प्रकारचे घातक जीवाणू आढळून आलेले आहेत. या पाण्याचा हार्डनेस १८६ इतका आहे. यामध्ये कॅल्शियमचे प्रमाण ४८.०० तसेच मॅग्नेशियमचे प्रमाण १६.०० इतके आहे. क्लोराईडचे प्रमाण ३८.०० इतके असून ते घातक नाही. या पाण्यात मिसळलेले घन पदार्थाचे प्रमाण ३३० तर टर्बिडीटी ०.४ आहे. हे पाणी देखील दूषित आहे. मात्र ते चाकण चौकाजवळील नव्या पुलाजवळील पाण्याइतके घातक नाही.

टेबल क्र. ६.५. इंद्रायणी जल प्रदूषण

नमुना क्र. ३. सिद्धबेटाजवळील नवा पूल (यात्रेपूर्वी)

S.N.	Parameter	Observed Value	IS 10500: 2012 Required Standards	Units
Physical Parameters				
1	Colour	1 Hazen	Max.5	Hazen
2	Odour	Agreeable	Agreeable	--
3	pH	7.18	6.5-8.5	--
4	Turbidity	0.2	Max. 1.0	NTU
5	Total Dissolved Solids	340	Max.500	Mg/lit

Chemical Parameters				
6	Alkalinity as CaCO3	170.00	Max.200	Mg/lit
7	Total Hardness as CaCO3	198.00	Max.200	Mg/lit
8	Calcium as Ca	47.00	Max.75	Mg/lit
9	Magnesium as Mg	19.00	Max.30	Mg/lit
10	Chlorides ac CI	37.00	Max.250	Mg/lit
Microbiological Parameters				
11	E. coli	Present	Absent	/100ml
12	Coliform	Present	Absent	/100ml

(स्रोत : इंद्रायणी पाणी चाचणी अहवाल क. ३)

वरील टेबलवरून असे लक्षात येते की, सिद्धबेटाजवळील नव्या पुलाजवळ यात्रेपूर्वीच्या काळात इंद्रायणी नदीचे प्रदूषण जास्त आहे. या पाण्यामध्येही जीवाणूचें प्रमाण आहे. तसेच या पाण्याचा हार्डनेस जास्त म्हणजे १९८ इतका आहे. या पाण्याचे पी.एच.मूल्य ७.१८ आहे. या पाण्याचा हार्डनेस १९८ इतका आहे. या पाण्यात मिसळलेले घन पदार्थाचे प्रमाण ३४०, तर टर्बिडीटी ०.२ आहे. यामध्ये कॅल्शियमचे प्रमाण ४७.०० तसेच मॅग्नेशियमचे प्रमाण १९.०० इतके आहे. क्लोराईडचे प्रमाण ३७.०० इतके असून ते घातक नाही. हे पाणी देखील पिण्याच्या योग्यतेचे अजिबात नाही.

टेबल क्र. ६.६ इंद्रायणी जलप्रदूषण

नमुना क्र.४ चाकण चौकाजवळ नवा पूल (यात्राकाळी)

S.N.	Parameter	Observed Value	IS 10500: 2012 Required Standards	Units
Physical Parameters				
1	Colour	1 Hazen	Max.5	Hazen
2	Odour	Agreeable	Agreeable	--
3	pH	7.22	6.5-8.5	--
4	Turbidity	5.4	Max. 1.0	NTU
5	Total Dissolved Solids	320	Max.500	Mg/lit
Chemical Parameters				
6	Alkalinity as CaCO3	172.00	Max.200	Mg/lit
7	Total Hardness as CaCO3	180.00	Max.200	Mg/lit
8	Calcium as Ca	41.00	Max.75	Mg/lit

9	Magnesium as Mg	18.00	Max.30	Mg/lit
10	Chlorides ac CI	36.00	Max.250	Mg/lit
Microbiological Parameters				
11	E. coli	Present	Absent	/100ml
12	Coliform	Present	Absent	/100ml

(स्रोत : इंद्रायणी पाणी चाचणी अहवाल क्र. ४)

वरील टेबल हा यात्राकाळामध्ये घेतलेल्या पाण्याच्या नमुन्याच्या चाचणीचा आहे. यात्रा काळात चाकण चौकाजवळ वरीलप्रमाणे पाण्याचे प्रदूषण असलेले दिसून आलेले आहे. या पाण्यातही जीवाणूंचे प्रमाण दिसून आलेले आहे. त्यामध्ये इ कोली आणि कोलीफॉर्म या दोन्ही प्रकारचे घातक जीवाणू आढळून आलेले आहेत. तसेच या पाण्याचा हार्डनेस १८० इतका आहे. या पाण्यात मिसळलेले घन पदार्थाचे प्रमाण ३२०, तर टर्बिडीटी ०.४ आहे. यामध्ये कॅल्शियमचे प्रमाण ४१.००, तसेच मॅग्नेशियमचे प्रमाण १८.०० इतके आहे. क्लोराईडचे प्रमाण ३६.०० हे पाणी यात्रा काळातील पाण्यापेक्षा किंचित कमी दूषित आहे.

टेबल क्र. ६.७ इंद्रायणी जलप्रदूषण

नमुना क्र. ५. पुंडलिकाच्या मंदिराजवळ (यात्राकाळी)

S.N.	Parameter	Observed Value	IS 10500: 2012 Required Standards	Units
Physical Parameters				
1	Colour	1 Hazen	Max.5	Hazen
2	Odour	Agreeable	Agreeable	--
3	pH	7.08	6.5-8.5	--
4	Turbidity	0.2	Max. 1.0	NTU
5	Total Dissolved Solids	262	Max.500	Mg/lit
Chemical Parameters				
6	Alkalinity as CaCO3	138.00	Max.200	Mg/lit
7	Total Hardness as CaCO3	151.00	Max.200	Mg/lit
8	Calcium as Ca	36.00	Max.75	Mg/lit
9	Magnesium as Mg	14.00	Max.30	Mg/lit
10	Chlorides ac CI	28.00	Max.250	Mg/lit
Microbiological Parameters				
11	E. coli	Present	Absent	/100ml
12	Coliform	Present	Absent	/100ml

(स्रोत : इंद्रायणी पाणी चाचणी अहवाल क्र. ५)

वरील टेबलमध्ये पुंडलिकाच्या मंदिराजवळील इंद्रायणी नदीच्या पाण्याच्या नमुन्याची चाचणी दर्शविलेली आहे. या नमुन्यातील पाणी हे यात्रा काळात घेतलेले आहे.या पाण्यामध्येही जीवाणू

आहेत. तसेच या पाण्याचा हार्डनेस इतर नमुन्यांच्या तुलनेत १५१ इतका आहे. हा नमुना इतर नमुन्यांच्या मानाने कमी प्रदूषित आहे.

निष्कर्ष :

वरील विवेचनावरून एक बाब लक्षात येते, ती म्हणजे यात्रेपूर्वीच्या काळी इंद्रायणी नदीचे प्रदूषण हे यात्रा काळातील प्रदूषणापेक्षा जास्त आहे. कारण यात्रा काळामध्ये इंद्रायणी नदीमध्ये वरच्या धरणांमधून पाणी सोडले जाते. त्यामुळे इंद्रायणी नदीचे यात्रा काळात कमी प्रदूषण झालेले दिसून येते.

सर्वच पाण्याच्या नमुन्यांमध्ये इ कोली आणि कोलीफॉर्म या घातक जीवाणूंचे अस्तित्व असल्यामुळे हे पाणी पिण्यासाठी उपयुक्त नाही.

संदर्भ सूची :

१. पंडित बापट सुरेखा, २००९, 'पर्यावरणशास्त्र,' श्री साईनाथ प्रकाशन, नागपूर, पृ. १९४, १९८, २१३, २१४, २२०.

2- Jadhav S.D., Jadhav M.S. Jawale R.W. (2013), 'Physico – Chemical and Bacteriological analysis of Indrayani River Water at Alandi, Pune District (Maharashtra) India,' Internation Journal of Scientific & Engineering Research Volume4, Issue 11, November 2013 Pp. 1942.

डॉ. ओमप्रकाश मुंदे डॉ. दादासाहेब मारकड डॉ. दिलीप मुळूक

International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.3 No.3 Sept – Oct 2022

सहकार पंढरीचा युगपुरूष : पद्मश्री डॉ. विठ्ठलराव विखे पाटील.

डॉ.कुंदा बाळासाहेब कवडे.
(मराठी विभागप्रमुख) कला , वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय अळकुटी.
ता . पारनेर जि. अहमदनगर
Corresponding Author- **डॉ.कुंदा बाळासाहेब कवडे.**
Email id: kavadekunda@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.7271372

पद्मश्रीच्या नावाशिवाय सहकार चळवळीचा इतिहासच लिहिता येणार नाही ."सहकार चळवळीच्या इतिहासातील सोनेरी पान म्हणजे पद्मश्री डॉ. विठ्ठलराव विखे पाटील होय" .पद्मश्री डॉ, विठ्ठलराव विखे पाटील यांचा जन्म 12 ऑगस्ट 1997 रोजी झाला .त्यांचे पूर्ण नाव एकनाथराव विठ्ठलराव विखे पाटील महाराष्ट्रातील सहकार चळवळीचे आद्यप्रवर्तक होय .अहमदनगर जिल्ह्यातील लोणी ब्रुद्रक ता.श्रीरामपुर या खेडयात एका शेतकरी कुटुंबात झाला. लोणी खुर्दच्या प्राथमिक शाळेत चौथी पर्यंतचे शिक्षण पूर्ण केले .लहान वयात शेतीला सुरुवात केली. पद्मश्री जन्माला आले,तेव्हा त्या काळी शेतकऱ्याच्या जमीनी कर्जबाजारीपणामुळे सावकाराच्या घशात गेल्यामुळे ते कंगाल बनले होते. हे नेमके पद्मश्री हेरले. व्यवहार, बुद्धी, चातुर्य व काटकसरीने शेती केली. 1923 मध्ये त्यांनी लोणी ब्रुद्रुक येथे सहकारी पतपेढीची स्थापना करून सहकारी संस्थांचे जाळे निर्माण केले .

पद्मश्री विठठलराव विखे पाटील सहकाराचे प्रणेते म्हणून ओळखले जातात, म्हणून त्यांचा जन्मदिवस 2014 पासून 'शेतकरी दिन' म्हणून महाराष्ट्रात ओळखला जातो. कृषी औद्योगिक सहकार साखर कारखान्याचे आद्यप्रवर्तक म्हणून ओळखले जातात. त्यांनी शेतकऱ्यांच्या भरीव आणि उल्लखणीय कार्याची दखल घेऊन महाराष्ट्र शासनाने त्यांचा जन्मदिवस मराठी तिथी प्रमाणे 'नारळी पौर्णिमा' या दिवशी 'शेतकरी दिन' म्हणून साजरा करण्याचा निर्णय घेतला. विठ्ठलराव विखे पाटील हे महाराष्ट्राच्या सहकार चळवळीचे आघाडीचे कार्यकर्ते म्हणून परिचित आहेत .आज महाराष्ट्रात सहकार चळवळीचा बराच प्रसार झाला आहे .सहाजिकच सहकार महर्षी म्हणून मिरवणारे अनेक पुढारी जागोजागी अढळुन येत आहे .परंतु सहकारमहर्षी या किताबाचे महाराष्ट्रातील सहकाराचे खरे मानकरी कोण असतील तर ते म्हणजे पद्मश्री विठ्ठलराव विखे पाटील होय .पद्मश्रीने 23 जानेवारी 1923 रोजी आपले जन्मगाव 'लोणी बुद्रुक' येथे लोणीबुद्रुक सहकारी पतपेढी स्थापन केली .ही पतपेढी भारतातीलच नव्हे, तर आशियातील सहकारी तत्त्वावर स्थापन होणारी

पहिलीच पतपेढी ठरली .त्यानंतर त्यांनी गावोगावी सहकारी पतपेढी स्थापन करण्याची मोहीमच हाती घेतली .या सहकारी पतपेढ्याच्या माध्यमातुन गरीब व शेतकर्यांना आवश्यक ती मदत उपलब्द करून देण्याचा प्रयत्न त्यांनी केला .10 डिसेंबर 1929 रोजी 'राजुरी' या गावी विठठलरावांनी आदिवासी समाजासाठी सहकारी सोसायटीची स्थापना केली . १९४४ मध्ये त्यांनी सहकारी तत्वावर शेतीसंस्था स्थापन केली.विखे पाटील यांचा काही काळापुरता राजकारणाशी संबध आला. ब्राहमणेतर चळवळ व सत्यशोधक चळवळ या चळवळीतही त्यांनी भाग घेतला .या चळवळीतुन बहुजन समाजाला उन्नतीचा मार्ग निघु शकेल.असे त्यांना वाटत होते.तथापी मात्र त्यांनी राजकारणापेक्षा सहकारी क्षेत्राकडे आपले लक्ष केंद्रित केले . ब्रिटिश राजवट व सावकारशाहीच्या घट्ट विळख्यात ध्येयाने पद्मश्री डॉ. विठ्ठलराव विखे पाटील यांनी १९५० ला सहकारी साखर कारखानदारी जन्माला घातली. त्यातून राज्यात देशात आणि जगातील अनेक राष्ट्रात परीवर्तनाचे नवे पर्व सुरू झाले.महाराष्ट्रतील सहकारी साखर कारखानदारीचे आद्यप्रवर्तक अहमदनगर जिल्ह्यातील 'लोणी ब्रुद्रक' या खेड्यात एका शेतकरी कुटुंबात जन्म. लोणी खुर्दच्या प्राथमिक शाळेत चौथीपर्यंत शिक्षण, नंतर त्यांनी लहान वयातच शेतीला सुरुवात केली. त्याकाळी शेतकऱ्याच्या जमिनी कर्जबाजारीपणामुळे सावकारांच्या घशात गेल्यामुळे ते कंगाल बनले होते, हे नेमके हेरून त्यांनी व्हवहारी, चातुर्य व काटकसरीने शेती केली. १९२३ मध्ये 'लोणीबुदुक' सहकारी पतपेढीची स्थापना करून ते सार्वजनिक जीवनातील सहकारी क्षेत्राकडे वळले. त्यांनी जिल्ह्यात सहकारी संस्थांचे जाळे निर्माण केले, तसेच गावातील पाथरवट-बहार मंडळींना एकत्र आणून हामजूर सहकारी सोसायटीची स्थापना केली.

इंग्रज सरकारने मुंबई कौन्सिलमध्ये तुकडेबंदी आणि तुकडे जोड हे विधेयक आणले, या विधेयकामुळे शेतकऱ्यांच्या जमिनीचे तुकडे यांच्या घशात जाऊन ते जमिनीला मुकणार होते. अशावेळी इस्लामपूर येथे शाहू महाराजांनी घेतलेल्या शेतकरी परिषदेला विखे-पाटील नगर जिल्ातील अनेक शेतक-यासह गेले व तेथे हजारो शेतक-यापुढे भाषण देऊन शेतक-यांच्या प्रश्नांना वाचा फोडली. त्यातूनच त्यांच्या शेतकरी नेतृत्वाचा जन्म झाला, पुढे महाराष्ट्राच्या एक लाख शेतकऱ्यांनी याच प्रश्नासाठी पुण्याच्या कौन्सिल हॉलला वेढा घातला, त्यात विखे-पाटील आघाडीवर होते. त्यांनी शेतकऱ्यांना त्याच्या दैन्यावस्थेची जाणीव करून देऊन संघटित होण्याचे त्यातून व्यक्तिगत व सामुदायिक विकास साधण्याचे महत्व पटवून दिले. विखे-पाटील यांच्यावर सत्यशोधक चळवळीचा व डाव्या विचारसरणीचा प्रभाव होता.

सहकारी चळवळीत देशात महाराष्ट्र अग्रेसर असून अहमदनगर जिल्हा राज्यात अग्रेसर आहे. भारतातील पहिला सहकारी साखर कारखाना श्री विठ्ठलराव विखे पाटील यांच्या प्रयत्नामुळे प्रवरानगर, लोणी येथे उभा राहिला. हा कारखाना आता पद्मश्री विठ्ठलराव विखे पाटील सहकारी साखर कारखाना म्हणून ओळखला जातो. सहकारी तत्वावरील सर्वाधिक साखर कारखाने राज्यात याच जिल्ह्यात आहेत. आशिया खंडातील पहिल्या सहकारी साखर कारखान्याची मुहूर्तमेढ पद्मश्री डॉ. विठ्ठलराव विखे पाटील यांनी नगर जिल्ह्यातील प्रवरानगर येथे 1950 मध्ये रोवली. या वेळी देशाला नुकतेच स्वातंत्र्य मिळाले होते, म्हणून शेतकऱ्यांच्या मालकीचा साखर कारखाना निर्माण होणे ही घटना भारतीय शेती, शेतकरी आणि उद्योग जगताला नवी प्रेरणा देणारी ठरली. कै. धनंजयराव गाडगीळ के. कुठभाई मेहता यांच्या बहुमोल मदतीने पद्मश्री विखे पाटील यांनी खऱ्या अर्थाने कष्टकरी शेतकऱ्याला आर्थिक स्वायतता मिळवून दिली. नंतरच्या काळात या सहकारी साखर कारखान्याच्या माध्यमातून शेतकऱ्यांच्या मुलांसाठी शिक्षण संस्था, आरोग्यासाठी रुग्णालय, बँका संस्थांची स्थापना केली.

सहकाराच्या माध्यमातून राज्य आणि देशाच्या विकासास मोठा हातभार लागला. देशातील सहकारी चळवळीसाठी मोलाचे योगदान देणाऱ्या मान्यवरांच्या चरित्रातून ग्रामीण शेतकरी समाजाला नवी दृष्टी मिळत असते. सहकारमहर्षी पद्मश्री डॉ. विठ्ठलराव विखे पाटील यांनी सहकाराच्या माध्यमातून नवचैतन्य फुलविले. त्यांच्या कायाची प्रेरणा पुढच्या पिढीला मिळत राहील, यात शंका नाही.शेती, सहकार आणि उद्योग या क्षेत्रात नवनवीन परंपरा निर्माण करणाऱ्या पद्मश्री विठ्ठलराव विखे पाटलांनी सहकारी साखर कारखान्याच्या

माध्यमातून अनेक नवनवीन योजना राबविल्या. या योजनांद्वारा कारखाना कार्यक्षेत्रातील लोकांच्या आर्थिक व सामाजिक जीवनात लक्षणीय सुधारणा झाली. उपसा सिंचन योजना, पाझर तलाव, नदीवरील बंधारे याशिवाय अनेक छोट्या सिंचनाचा लाभ शेतकऱ्यांना मिळवून दिला. परिसरात फिरताना विखे पाटील शेतकऱ्यांच्या शेतावर किंवा घरी जाऊन शेतीसंबंधी सूचना करीत. चोपण जमिनीतून चर काढले तर पाण्याचा निचरा होईल, जमीन सुपीक बनेल आणि उसाचे एकरी उत्पादन वाढेल, यासाठी ते शेतकऱ्यांमध्ये सतत जागृती करीत. ऊस पिकविणाऱ्या शेतकन्यांची आर्थिक प्रगती साधायची असेल तर त्याच्या उत्पादनात वाढ होणे गरजेचे आहे. **'शुद्ध बीजापोटी । फळे रसाळ गोमटी**.'ह्या उक्तीप्रमाणे ज्या उसाची लागवड करायची, त्याचे देणे सकस आणि उत्तम असले पाहिजे. पद्मश्री विखे पाटील कारखाना सदस्यापासून गट कमिटीच्या सदस्यांच्या बैठकी घेऊन चांगल्या बेण्याचा पुरवठा करता यावा यासाठी कारखान्याच्या मालकीचे सीड फार्म तयार केले.

प्रत्येक शेतकरी हा स्वतःच एक विद्यापीठ बनू शकेल, मात्र त्याला गरज आहे ती योग्य मार्गदर्शनाची आणि त्यांच्या परिसरातच सर्व पायाभूत सुविधा उपलब्ध होण्याची. ही गरज ओळखून पद्मश्री डॉ. विठ्ठलराव विखे पाटील यांनी अतिशय दूरदृष्टीतून शेतकऱ्यांना सहकार चळवळीतून मिळणाऱ्या आर्थिक लाभापुरतेच मर्यादित न ठेवता सहकार चळवळीला आवश्यक असणाऱ्या पायाभूत सुविधा आणि साधनांची उपलब्धता होण्याच्या दृष्टीने अनेक प्रकल्प प्रवरा परिसरात राबविले. त्यामुळेच परिसराचा सर्वांगीण विकास साधला गेला. शेतकऱ्यांच्या सहकारी साखर कारखान्यांची योजना विखे पाटील यांनी यशस्वीरीत्या राबविल्यामुळे भारत सरकारने त्याचा लाभ आणि माहिती भारतातील विविध प्रतिनिधी आणि अभ्यासू शेतकरी यांना व्हावी, म्हणून अखिल भारतीय सहकारी साखर कारखान्याची पहिली परिषद १९५६ साली प्रवरानगर येथे भरविली. प्रवरानगरचा सहकारी साखर कारखाना व विखे-पाटील हे भारतातील सहकारी चळवळीतील कार्यकर्त्यांचे प्रेरणास्थान बनले. अशा प्रकारचे आणखी कारखाने उभे राहण्यासाठी विखे पाटील यांनी अनेक शेतकरी नेत्यांनी प्रोत्साहन दिले. उदा.सांगलीचे वसंतदादा पाटील, वारणानगरचे तात्यासाहेब कोरे, पोहेगावचे गणपतराव औताडे, राहुरीचे बाबूराव तनपुरे, अकलूजचे शंकरराव मोहिते, पंचगंगेचे रत्नाप्पा कुंभार, परभणीचे शिवाजीराव देशमुख, इत्यादी. भारताचे पहिले पंतप्रधान पं. जवाहरलाल नेहरू यांनी स्वतः प्रवरानगरला येऊन विखे-पाटील यांच्या कार्याची प्रशंसा केली (१५ मे (१९६१). विखे-पाटील यांनी शेतकऱ्यांना बचतीचे महत्त्वही पटवून दिले. शासनाची अल्पबचत योजना यशस्वीरीत्या राबविल्याबद्दल १९६५ मधे भारताचे तत्कालीन अर्थमंत्री टी. टी. कृष्णम्माचारी यांनी खास मानपत्र देऊन गौरविले. त्याचप्रमाणे कुटुंबनियोजनाची योजनाही १९५९ पासून त्यांनी परिसरात राबविली. या योजनेचे फलित म्हणजे, १९७६ साली ऑक्टोबर महिन्यात प्रवरा हॉस्पिटलमध्ये चार दिवस भरविलेल्या कुटुंबनियोजन शिबिरात ६,२३१ शस्त्रक्रिया यशस्वीरीत्या पूर्ण करण्यात आल्या व त्यातून शस्त्रक्रियांचा जागतिक विक्रम प्रस्थापित झाला. विखे पाटील यांनी पुढील सामाजिक, शैक्षणिक संस्थांवर विविध नात्यांनी काम केले. प्रवरा शिक्षणोत्तेजक सहकारी पतपेढीचे संस्थापक व अध्यक्ष (१९५३), अहमदनगर जिल्हा मराठा विद्याप्रसारक समाजाचे अध्यक्ष (१९५३-५६) कोपरगाव व कारेगाव सह. साखर कारख्यान्यांचे सन्मानीय संचालक (१९५४). प्रवरा ग्रामीण शिक्षणसंस्थेचे आद्यप्रवर्तक (१९६४), साखर कामगार हॉस्पिटलचे (श्रीरामपूर) अध्यक्ष (१९६८). अहमदनगर जिल्हा सहकारी बँकेचे संचालक (१९५८) व अध्यक्ष (१९६८), गोदावरी विकास मंडळाचे सदस्य (१९७१)

कर्मवीर भाऊराव पाटील यांच्या शैक्षणिक कायानें ते प्रभावित झाले व त्यांनी कर्मवीरांना नगर जिल्ह्यात शैक्षणिक संस्था उभारण्यास पाचारण केले. तसेच सर्वतोपरीने साहाय्य केले. विखे-पाटील हे रयत शिक्षण संस्थेचे संचालक व उपाध्यक्ष (१९७८) होते. ग्रामीण भागातील आरोग्याचे प्रश्न सुटावेत म्हणून त्यांनी प्रवरा मेडिकल ट्रस्ट ची स्थापना (१९७४) करून अत्याधुनिक

सुविधा असलेले भव्य इस्पितळ लोणीत सुरू केले. त्यांच्या पश्चात् त्यांनी स्थापन केलेल्या विविध संस्थांच्या माध्यमांतून अनेक शिक्षणसंस्था - उदा., वैद्यकीय दंत, परिचालिका, अभियांत्रिकी, तंत्रनिकेतन (मुलांचे व मुलीचे), औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था, कला अकादमी तसेच गावोगावी अनेक माध्यमिक विद्यालये इ. संस्था उभ्या राहिल्या.विखे-पाटील यांनी सहकार, कृषी, औद्योगिक व शैक्षणिक क्षेत्रांत केलेल्या मौलिक कामगिरीबद्दल भारत सरकारने त्यांना १९६१ मध्ये पद्मश्री हा किताब दिला, तर पुणे विद्यापीठाने डी. लिट्. (१९७८) व राहुरी येथील महात्मा फुले कृषी विद्यापीठाने डॉक्टर ऑफ सायन्स (१९७९) या पदव्या प्रदान केल्या.

संदर्भ ग्रंथ

1. 'लोकसत्ता' १ जानेवारी २०१७ या वर्तमानपत्रातील लेख.
2. 'महामेरु' डॉ. राजेंद्र वडमारे, मीरा बुक्स & पब्लीकेशन.
3. 'लढत' शिवाजी सावंत , प्रवरा प्रकाशन , प्रवरानगर
4. 'महाराष्ट्र टाइम्स' ३१ डिसेंबर २०१६, वर्तमानपत्रातील लेख
5. 'नव केसरी' या वर्तमानपत्रातील डॉ.शांताराम चौधरी यांचा लेख.
6. mr.m.wikipedya.org>wiki 27 April 2018.
7. https://www.mahamtb.com>Encyc
8. https://www.thinkmaharashtra.com>... 23 august 2019.
9. https://www.mr. wikipedya.in education 27 December 2019.

डॉ.कुंदा बा

डॉ.कुंदा बाळासाहेब कवडे.

International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.3 No.3 Sept – Oct 2022

राजर्षी शाहू महाराजांचे शिक्षण विषयक विचार व कार्य— एक चिकित्सक अभ्यास

प्रा.डॉ.बिरादार प्रतिभा रंगराव [१] दत्ताराम माधवराव भोसले[२]
[१]समाजशास्त्रविभाग माऊली महाविद्यालय,वडाळा ता.उ.सोलापूर,जि.सोलापूर.
[२]सहशिक्षक जि.प.प्रा.शाळा,चिटमोगरा. ता. बिलोली जि. नांदेड
Corresponding Author- प्रा.डॉ.बिरादार प्रतिभा रंगराव
Email id: prb.mmw7@gmail.com
DOI-10.5281/zenodo.7271412

प्रस्तावना —

आपले आचार, विचार , ध्येय, धोरणाव्दारे समाजासमोर आदर्श ठेवणारे बहूजनसमाजाचा नेता एक आदर्श राजा राजर्षी शाहू महाराज यांनी सर्वसामान्य माणसांचे कल्याण करणे हे आपले कर्तव्य माणून सामाजिक ,आर्थिक ,शैक्षणिक कार्याच्या माध्यमातून जिवनभर कार्य केले. स्वतंत्र्यापूर्वी कैकवर्ष अगोदर समता ,बंधूता ,धर्मनिरपेक्षता सर्व घटकांना विकासाची समानसंधी ही तत्वे राजर्षी शाहू महाराजांनी कोल्हापूर संस्थानात आमलात आणली . आपल्या कार्यामूळे राजर्षी शाहू महाराज हे केवळ आपल्या संस्थानातच नाही तर भारतभर लोकप्रिय झाले.कानपूरच्या कूर्मी क्षेत्रिय समाजाणे १९१९ साली राजर्षी शाहू महाराजांना 'राजर्षी' ही उपाधी दिली. देशभरामध्ये 'महाराजांचे महाराज' असा त्यांचा गौरव केला जातो. त्यांचा जन्मदिवस हा 'सामाजिक न्याय दिवस' म्हणून साजरा केला जातो.आधूनिक काळात महाराष्ट्रात झालेल्या सामाजिक सूधारणेच्या इतिहास पाहतांना राजर्षी शाहू महाराजांचे कार्य हे मोलाचे आहे. सर्वसामान्य लोकांचे कल्याण करणे, बहूजन समाजाची पारंपारीक बंधनातून सूटका करणे ,त्यांना सूशिक्षित व प्रगत बनविणे व त्यांच्यात जागृती घडवून आणणे हे कर्तव्य मानून आयूष्यभर कार्य केले. शाहू महाराजांनी समाजातील वंचित उपेक्षित घटकांचा कैवार घेतला. जातीव्यवस्थेला आव्हान देवून अस्पृश्यतेचे निवारण करण्यासाठी त्यांनी प्रस्तापितांच्या विरूध्द तीव्र संघर्ष केला. 'राजदंड ही शोभेची वस्तू नसून ते सेवेचे साधन आहे'असे मानून आपले कर्तृत्व आणि सिंहासन पनाला लावून आठरापगडी जातीच्या निरक्षर प्रजेच्या शिक्षणासाठी त्यांनी कार्य केले. राजर्षी शाहू महाराजांनी महात्मा फुले यांच्याप्रमाणे सामाजिक सूधारणेच्या कार्यात शिक्षणाला प्रमूख स्थान दिले. शिक्षण हा सर्व विकासाचा पाया आहे तसेच समजिक परिवर्तन घडवून आणण्याचा एकमेव मार्ग आहे असे शाहू महाराज म्हणत. राजर्षी शाहू महाराजांनी गरीब व मागास घटकांना डोळयासमोर ठेवून शैक्षणिक धोरणे निर्माण केली.

- **परिचय :—**

राजर्षी शाहू महाराज हे जन्मत: राजघराण्यातील नव्हते. तर ते कागलच्या घाटगे घराण्यातील होते. २६ जून १८७४ मध्ये त्यांचा जन्म झाला. आईचे नाव राधाबाई आणि वडीलांचे नाव जयसिंगराव उर्फ आबासाहेब असे होते. शाहू महाराजांचे मुळ नाव यशवंतराव असे होते. चौथे शिवाजी यांच्या पत्नी आंनदीबाई यांनी १७ मार्च १८८४ रोजी यशवंतरावास दत्तक घेतले व त्यांचे नाव नंतर शाहू असे ठेवण्यात आले. शाहू महाराजांनी २ एप्रिल १८९४ वयाच्य २० व्या वर्षी कोल्हापूर संस्थानाच्या राज्यकारभाराची सूत्रे हाती घेतली. त्यांना मिळालेल्या अधिकाराचा उपयोग महाराजानीं बहूजनांच्या हितासाठी केला. १९ व्या शतकाच्या सुरवातीलाच प्रज्वलीत झालेले समाज व धर्म सुधारनेची ज्योत सतत तेवत ठेवण्याचे कार्य राजर्षी शाहू महाराजांनी केले. षाहू महाराज हे २८ वर्षे कोल्हापूर संस्थानचे राजे होते. मुबंई येथे ६ मे १९२२ रोजी त्यांचे निधन झाले.२००६ पासून महाराष्ट्रशासणाने शाहू महाराजांचा जन्म

दिवस हा 'सामाजिक न्याय दिन' म्हणून साजरा करण्याचे घोषीत केले आहे.

- **उद्देश :—**

संशोधन पेपरचा उद्देश पुढील प्रमाणे
१. संबंधीत साहित्याचा आढावा घेणे
२. शाहू महाराजांचा शिक्षण विषयक दृष्टीकोण आभ्यासने
३. शाहू महाराजांचे शिक्षणासंदर्भातील कार्य स्पष्ट करणे
४. मिळालेल्या तथ्याच्या आधारे निष्कर्ष मांडणे

- **गृहितकृत्य—**

संशोधन पेपर तयार करतांना मांडलेले गृहितकृत्य हे पुढील प्रमाण......

१. राजर्शीषाहू महाराजांनी आपल्या शैक्षणिक कार्याच्या माध्यमातून समताधिष्ठीत श्क्षिणाची सूरवात केली.
२. राजर्षी शाहू महाराजांचे शैक्षणिक विचार व कार्य आजही प्रेरणादायी आहे.

तथ्य संकलन —

संशोधन पेपर तयार करताना दुय्यम तथ्य संकलनाचा आधार घेण्यात आला.

राजर्षी शाहू महाराजांचे शिक्षण विषयक विचार व कार्य :-

अज्ञान आणि दारिद्र्यामूळे देशातील बहुजन समाज हा विकासापासून वंचित आहे हे महात्मा फुले यांनी जाणले व शिक्षणाचे कार्य हाती घेतले त्यांचे हेच कार्य राजर्षी शाहू महाराजांनी आपल्या राज्यात चालू ठेवले. शिक्षणाचे महत्व सांगतांना शाहू महाराज म्हणतात, ''शिक्षणानेच आमचा तरणोपाय आहे. असे माझे ठाम मत आहे. शिक्षणाशिवाय कोणत्याही देशाची उन्नती झाली नाही असे इतिहास सांगतो. अज्ञानात बूडून गेलेल्या देशात उत्तम मुत्सूद्दी व लढव्या वीर काधीही निपजणार नाही, म्हणूनच सक्तीच्या व मोफत शिक्षणाची हिंदूस्थानाला अत्येंत आवश्यकता आहे. या बाबतीत आमचा गतकाल हा इतिहासातील एक अंधारी रात्र आहे. फक्त एकाच जातीने वि|चा मक्ता घेतल्य होता. मनू आणि त्यांच्या नंतर झालेल्या शास्त्रकारांनी त्या त्या वेळेच्या ध्येयाला अनुसरून निरनिराळया जातीच्या व्यवहारास बंधनकारक असे धर्मगृथं आणि वेद हे सुध्दा वाचण्याची त्यांना मनाई होती''. शिक्षण ही समाजाची खरी संजवनी आहे हे जाणून महात्मा फुल प्रमाणे शिक्षणाचे कार्य केले. शिक्षण हे समतेची गूरूकिल्ली असून लोकांच्या विकासासाठी त्यांच्याकडे असलेल्या उपजत बूध्दिच्या प्रगतीसाठी शिक्षणाचीगंगा समाजातील बहूजन व उपेक्षित घटकापर्यंत पोहचवली.शिक्षण हे समाजपरिवर्तनाचे साधन असून शिक्षणाच्या माध्यमातून शोषणमूक्त समाजनिर्मितीचे ध्येय डोळयासमोर ठेवून समाजातील स्पृश्य व अस्पृश्य यांचा शिक्षणाचा दर्जा समान पातळीवर आणण्यासाठी राजर्षी शाहू महाराजांनी केलेले शिक्षण विषयक कार्य पुढील मुद्दयाच्या आधारे स्पष्ट करण्यात आले.

- **मोफत व सक्तीच्या प्राथमिक शिक्षणाचा कायदा —**

माहात्मा फुले प्रमाणेच शाहू महाराजांनी सक्तीच्या प्राथमिक शिक्षणाचा आग्रह धरला. शाहू माहाराज म्हणताता. ''खालच्या वर्गाच्या लोकांच्या बुध्दीवर व ज्ञानावर हे जे जड आणि जुलमी जू लादले गेले आहे. ते झुगारून देण्याची शक्ती बहुजन समाजाच्या अंगी येण्यास सक्तीच्या व मोफत प्राथमिक शिक्षणाची फार अवश्यकता आहे'' २५ जुलै १९१७ रोजी एक जाहिरनामा काढुन कोल्हापूर संस्थानात प्राथमिक शिक्षण हे सक्तीचे करण्यात आले. सक्तीच्या शिक्षणकायदयानुसार शिक्षणास योग्य वयाची मुले शाळेत पाठविण्याची आईबाबा वर सक्ती करण्यात आली. त्यांनी तशी पाठविली नाही तर त्यांना प्रत्येकी एक रूपया दर महिना दंड करण्याची तरतुद करण्यात आली. साधारणपणे ५०० ते १००० लोकसंख्या असलेल्या प्रत्येक गावात प्राथमिक शाळा सुरू करण्यात आल्या. सक्तीच्या प्राथमिक शिक्षण कायदयाची कार्यक्षमतेने अमलबजावणी व्हावी यासाठी महाराजांनी स्वतंत्र खाते निर्माण केले. या खात्याचे वरिठ अधिकारी म्हणून 'डायरेक्टर' आणि 'एज्युकेशनल इन्स्पेक्टर' अशी पदे निर्माण केली. आणि ही खाते 'खूद आमच्या नजरेखाली राहील' असे सांगीतले.

त्याच प्रमाणे संस्थेतील मामलेदारापासून गावाच्या पाटलापर्यंत सर्वांना त्यांनी प्राथमिक शिक्षणाच्या चळवळीत सहभागी केले होते. शेतक—यांच्या मूलांना शेतातील कामे करून शिकता यावे म्हणून सकाळ आणि संध्याकाळी दोन तास शाळेत येण्याची त्यांना परवानगी देण्यात आली. रयतेचे प्रश्न समजून घेवून निर्णयाची कठोर अमलबजावणी करतांना प्रसंगी लवचिक धोरण अवलंबून सर्वांपर्यंत शिक्षण पोहचविण्याचे अनोख कार्य त्यांनी केले. १९१७,१९१८ या काळात सक्तीच्या प्राथमिक शिक्षणाची योजना कार्यान्वीत झाली. त्यावेळी या योजनेखाली २७ शाळा व १२९६ मुले होती. पाच वर्षाच्या कालावधीत १९२१—१९२२ सालापर्यंत त्यात वाढ होवून शाळांची संख्या ४२० व मुलांची संख्या २२०० अशी झाली. १९२२ पर्यंत या योजणेवर होणारा १ लाखापासुनचा खर्च तीन लाखावर गेला. जेष्ठ शास्त्रज्ञ डॉ. रघूनाथ माशेलकर यांना २०१७ मध्ये कोल्हापूरच्या राजर्षी शाहू मेमोरीयल ट्रस्टचा शाहू पूरस्कार देण्यात आला. त्यांनी आपल्या भाषणात असे सयंगीतले की,'सन १९१७ चा एक रूपया म्हणजे सन २०१७ मधील तब्बल १६ हजार ३९२ रूपय होय'.शाहू महाराजांनी त्या काळात शिक्षणाविना कूनिही वंचित राहू नये म्हणून इतका मोठा दंड ठेवला होता.

- **स्त्री शिक्षणास प्रोत्साहन**

कोल्हापूर संस्थानाचा स्त्री शिक्षणाचा दृष्टीकोण हा मुळातच पुरोगामी स्वरूपाचा होता. संस्थानातील मुलीच्या शिक्षणाची व्यवस्था पाहण्यासाठी एक खास स्त्री शिक्षणाधिकाऱ्याचे पद निर्माण केले गेले होते. रमाबाई केळकर या बुध्दीमान स्त्रीची नेमणुक केली होती संस्थानात मुला— मुलीच्या शाळा असतांनाही खास मुलीसाठी स्वतंत्रशाळा स्थापन केल्या गेल्या. मुलीनी शाळेत यावे मुलांच्या बरोबरीने शिक्षण घ्यावे यासाठी खास उत्तेजन दिले जात असे. मूलिंचे पास होण्याचे प्रमाण वाढावे म्हणून पाय होण्याच्या प्रमाणात शिक्षकांना बक्षिस दिले जात असे. हुशार मुलीनसाठी शिष्यवृत्तीची तरतुद करण्यात आली होती. प्रोढ स्त्रियांच्या शिक्षणाच्या बाबतीत ही शाहू महाराजांनी विशेष लक्ष दिले होते. शाहू महाराजांनी मुलींच्या उच्चशिक्षणाच्या बाबतीत अत्यंत उदार दृष्टी ठेवली होती. राजाराम कॉलेज मध्ये शिकणाऱ्या सर्व मुलींना मोफत शिक्षण केले होते. त्यांनी काही स्त्रीयांना परदेशात शिक्षण घेण्यासाठी पाठविले होते. इंदुमतीदेवी या विधवास्त्रीला शिक्षण देवून तीला स्वावलंबी बनविले स्त्रीशिक्षणामुळे कुटुंबाचा व समाजाचा विकास घडून येतो म्हणून स्त्रिशिक्षणाचा ते आगृह धरत व स्त्रीशिक्षणाचे कार्य केले.

- **विविध शाळेंची व वसतीगृहाची स्थापना :—**

शाहू महाराज गादीवर बसल्यानंतर आपल्या कोल्हापूर संस्थानात जनतेत शिक्षणाचा प्रसार व्हावा म्हणून स्वंतंत्र शिक्षण संस्था स्थापन केल्या. मागासलेल्या व दुर्गम प्रदेशात शाखा काढल्या. प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च शिक्षणांची संधी उपलब्ध असुनही खेडयापाडयातील अनेक या संधीचा फायदा घेता येत नाही यासाठी कोल्हापूरमध्ये सर्व जाती जमातीच्या विद्यर्थ्यांसाठी वसतिगृहाची सोय केली वेगवेगळे वस्तगृह सुरू करून एक नवीन मोहिम सुरू केली होती.त्यामूळे कोल्हापूर हे वसतिगृहांचे आगर बनले. महाराजांनी म्हंटले आहे की की,'ब्रिटिश पार्लमेंटला मदर ऑफ पार्लमेंट्स असे मोठया अभिमानाने म्हणतात. त्याच प्रमाणे कोल्हापूरास मदर ऑफ बोर्डिंग हौसिस म्हणजे विद्यार्थी वसतिगृहांची माता असे सार्थ यश मिळाले आहे.' हा आदर्श निर्माण करणारे त्या वेळी अखिल भारतात महाराज एकटेच होते.त्यांची अनेक वसतिगृह अशी होती की तिथे कोणत्याही जातीच्या व धर्माच्या मूलांना प्रवेश होता. वसतीगृहाची स्थापना करून बहूजनांचे शिक्षण बंद पडणार नाही याची काळजी घेतली. गाव तिथे शाळेचा आग्रह त्यांनी धरला.प्रत्येक ठिकानी प्राथमिक शाळा असावि,लोकांना प्राथमिक शिक्षण मिळावे कूनीही शिक्षणापासून वंचित राहू नये यासाठी गाव तिथे शाळेचा आग्रह धरला. महात्मा फुले यांनी शिक्षणाची बिजे पेरलेली होती त्याचे मळे फुलविण्याचे कार्य राजर्षीशाहुं महाराजांनी केले. या काळामध्ये

उच्चशिक्षणाची स्थिती ही वाईट होती.प्रतिकूल परिस्थिती झगडून मागासवर्गातील काहींनी शिक्षण घेतले असले तरी त्याना उच्चवर्णीयाकडून उपेक्षित ठेवले जात असे दृ त्यामूळे या सर्व परिस्थितीचा विचार करून शाहू महाराजांनी आपल्या संस्थानात त्यांच्यासाठी नैकरीमध्ये ५० टक्के राखीव जागेची सूविधा निर्माण केली होती. शाहूमहाराजांनी महाराष्ट्रात वसतीग्रह सुविधायूक्त शिक्षणाचा पाया रचला.

- **शिक्षणाविषयक विविध उपाययोजना :—**

शिक्षणाचे कार्य आपल्या संस्थानात सुरू करण्यापूर्वी थोर समाजसुधारक रानडे,गोखले,भांडारकर, मुंबई प्रांताचे शिक्षण संचालक मि गाईल्स यांच्याशी विचार विनिमय करून शिक्षणाच्या बाबातीत पुढील उपाय योजना कोल्हापूर संस्थानास सुरू केल्या गेल्या.

१. पहिल्याच वर्षी शिक्षण क्षेत्रातील परिस्थितीचा आढावा घेवून त्यात प्रगती सुचविण्यासाठी शिक्षण सुधारणा समितीची स्थापना केली.

२. बहुजन समाजातील गरिब विद्यार्थ्यांना शिष्यवृत्ती पारितोषिके आदि स्वरूपात शैक्षणिक सवलती उपलब्ध करून दिल्या.

३. देवस्थानांनी शिक्षणकार्याला सर्वतोपरी सहा,य करावे यासाठी खास जाहिरनामा काढला होता.

४. गृंथालयांना अनुदान देण्याची पध्दत सुरू करून गरिब विद्यार्थ्यांना गृंथ पुरविण्यासाठी पुस्तकपेढी योजना आखण्यात आली.

५. शिक्षकांना प्रशिक्षण देण्यासाठी १९१२ मध्ये स्वतंत्र शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र सुरू केले.

६. हुशार विद्यार्थ्यांना उच्चशिक्षण घेण्यासाठी व स्पर्धात्मक परीक्षा देण्यासठी परदेशी पाठविण्यात आले.

७. १९१९—१९२० मध्ये दरबाराच्या प्रयत्नाने कोल्हापूर येथे स्वमॅद्रिक परिक्षेचे सेंटर सुरू करण्यात आले.

- **निष्कर्ष**

मिळालेल्या तथ्याच्या आधारे निघालेली निष्कर्ष हे पुढली प्रमाणे.

महात्मा जोतीराव फूले यांनी सूरू केलेल्या आणि राजर्षी शाहू महाराजांनी चालविलेल्या शैक्षण्कि कार्याची पूर्तता डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी भारतीय राज्यघटनेच्या माध्यमातून केली. राज्यघटनेच्या ४५ व्या कलमात देशातील सर्व मूलामूलिंना सक्तीच्या व मोफत शिक्षणाची तरतूद करण्यात आली. कलम ४६ नूसार समाजातील अनूसूचित जाती जमातीच्या शैक्षणिक व सामाजिक विकासासाठी समान संधी देण्याची तरतूदही करण्यात आली मात्र देशात मोफत व सक्तिच्या प्राथमिक शिक्षणाचा कायदा होण्यासाठी २०१० उतडले. ८६ व्या घटना देरूस्तीने राज्यघटनेमध्ये '२१—अ' या कलमाचा समावेश करून सहा ते चौदा वयोगटातील सर्व मूलामूलींना मोफम व सक्तीच्या प्राथमिक शिक्षणाचा मूलभूत अधिकार देण्यात आला. शाहू महाराजांच्या शैक्षणिक धोरणामूळे सामाजिक परिवर्तनाला चालना मिळाली.सामान्य माणसाच्या जीवनात शिक्षणाच्या माध्यमातून समृध्दी निर्मान करण्यारे कोल्हापूरचे संस्थान हे महत्वाचे ठरले.शाहू महाराजांनी शिक्षणाच्या माध्यमातून समाजाला समानतेच्या पातळीवर आणून ठेवण्याचे कार्य केले. शाहू महाराजांच्या शैक्षणीक कार्यामुळे कोल्हापूर शहर हे केवळ एक राजधाणीचे शहर न राहता ते नवविचाराचे उगमस्थान संस्कृतीचे केंद्र व विदयेचे माहेरघर बनले.आधुनिक महाराष्ट्राच्या सामाजिक इतिहासात कलाटणी देण्याचे प्रामुख श्रेय राजर्षी शाहू महाराजांना दिले जाते. राजर्षी शाहू महाराजांनी आपल्या शिक्षण विषयक विचार व कार्याने अखिल महाराष्ट्राला भारावून टाकले ते स्वत: एक विदयापीठ होते. ब्रम्हणशाहीचा मानसीक व सामाजीक गुलामगीरीतून अस्पृश्यांना मुक्त करण्यासाठी त्यांच्या शिक्षणासाठी विविध योजना सुरू करण्यात आल्या. 'राजदंड ही शोभेची वस्तू नसून ते सेवेचे साधन आहे'असे मानून आपले कर्तृत्व आणि सिंहासन पनाला लावून आठरापगडी जातीच्या निरक्षर प्रजेच्या शिक्षणासाठी त्यांनी कार्य केले. भाषा , जात ,धर्म, वंश या.च्या पलीकडे जावून अज्ञानात अडकलेल्या बहूजन समाजाला जागे करण्याचे कार्य महाराजांनी केले. सर्व जाती धर्माच्या विद्यार्थ्यांसाठी

स्वतंत्र वस्तीगृहाची सोय शाहू महाराजांनी केली.शाहू महाराजांच्या शैक्षणीक कार्याच्या प्रभावातून कोल्हापूर विदयापीठाची स्थापना झाली. जागतिकिकरण, खाजगीकरण, उदारीकरण, या प्रक्रियेणे आधुनिक काळात गरीब जनतेला शिक्षण घेणे अवघड होत चालले आजही राजर्षी शाहू महाराजांचे शैक्षणिक विचार व कार्याची अवश्यकता वाटते.लोकशिक्षण हा लोकशहीचा पाया असून जोपर्यंत सर्व समाज शिक्षणाने समृध्द होत नाही तो पयर्त लोकशाहीला अर्थ नाही हे शाहूमहाराजांचे वाक्य आजही दिशा देणारे आहे.

- **सारांश :—**

आधुनिक महाराष्ट्रच्या सामाजिक इतिहासात कलाटणी देण्याचे प्रमुख श्रेय राजर्षी शाहू महाराज यांना दिले जाते. केवळ शिक्षण देणे शिक्षणाची सुविधा निर्माण करणे शिक्षणाचा विस्तार करणे एवढाच मर्यादित विचार शाहू महाराजांचा नव्हता तर सर्वसामान्य लोकांच्या मनात शिक्षणविषय आवड निर्माण करणे हा त्यांचा प्रयत्न होता. बहूजन समाजाला पत प्रतिठा व स्वतंत्रय सामाजिक दर्जा मिळवून देण्याचा शाहू महाराजांनी प्रयत्न केला होता. छत्रपती शिवरायांच्या विचाराच्या व कार्याचा वारसा मोठया समर्थपने घेवून जाण्याचे कार्य करणारा एक महान मानवतावादी राजा म्हाणून राजर्षी शाहू महाराजांनी आपली ओळख निर्माण केली.आमूलाग्र समाजसूधारणा,समताधिष्ठित समाजरचना आणि सामाजिक न्यायाची प्रस्थापना या ध्येयाने प्रेरीत झालेले ते कृतिशिल समाजसूधारक होते.त्यामूळे ते अधूनिक महाराष्ट्राचे महत्वाचे शिल्पकार ठरले.ब्रिटिश अधिसत्तेच्या नियंत्रनाखाली आपल्या राज्याचाकारभार चालविणारे शाहूछत्रपती हे एक मांडलीक राजा होता. राजर्षी शाहू महाराजांच्या संदर्भात वि रा शिंदे म्हणतात. शाहू राजा नुसता मराठा नव्हता. ब्राम्हनेत्तरी नव्हाता तो नवयूगातला सर्वांगपूर्ण राष्ट्रपुरूष होता. तो महाराष्ट्राच्या विकासाचा एक मोठा स्वाभाविक त रंग होता. राजर्षी शाहू महाराजांच्या अलौकीक कार्यामूळे इतर संस्थानच्या तूलनेत लहान असून देखिल कोल्हापूरचे नाव देशपातळीवर नावरूपाला आले. ब्रिटिशांचे संस्थानिकावर अनेक बंधने असतांना देखिल शाहूमहाराजांनी आपल्या अधिकारांचा वापर रयतेच्या कल्यानासाठी केला. लोककल्याणाची, विकासाची, सामाजिक न्याय प्रस्थापनेची अनेक महत्वाची कामे राजर्षी शाहू महाराजांनी पार पाडली. सन. १८९४ ते १९२२ अवघ्या २८ वर्षाच्या कालखंडामध्ये राजर्षी शाहू महाराजांनी जी कामे केली त्याचे महत्व आज शंभर वर्षानंतरही तेवढेच आहे. काळाच्या पूढे जावून शंभरवर्षापूर्वी त्यांनी केलेले कार्य हे आजही अनेक कामासाठी प्रेरणादायी व स्फूर्तीदायक ठरते.

संदर्भग्रंथ :—

१. शाहू छत्रपती आणि लोकमान्य — य.दी. फडके पुणे.

२. राजर्षी शाहू: एक दृष्टीक्षेप — डॉ जयसिंगराव पवार कोल्हापूर.

३. राजर्षी शाहू: गौरव ग्रंथ — संपादक पी. बी. साळुंखे

४. राजर्षी शाहू: राजा व माणुस — कृ.गो. सुर्यवंशी

५. राजर्षी शाहू छत्रपती जिवन कार्य — डॉ जयसिंगराव पवार कोल्हापूर.

६. राजर्षी शाहू छत्रपती — डॉ. रमेश जाधव

७. समाज क्रांतीकारक राजर्षी शाहू महाराज — डॉ. सुर्वणा नाईक

International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 **Impact Factor – 7.328**
Peer Reviewed **Bi-Monthly**
Vol.3 No.3 **Sept – Oct 2022**

फिनिक्सच्या राखेतून उठला मोर - जयंत पवार यांची जागतिकीकरणाचे प्रखर चित्रण करणारी कथासंग्रह

डॉ. अशोक गौरीशंकर माळगे
मराठी विभाग, सी.बी.खेडगी कॉलेज, अक्कलकोट.
Corresponding Author- **डॉ. अशोक गौरीशंकर माळगे**
Email id: malage79@gmail.com
DOI-10.5281/zenodo.7271453

जागतिकीकरणाचा महानगरीय जीवनावर झालेला परिणामांचा प्रखर चित्रण करणारी एक महत्वाची कथासंग्रह म्हणजे जयंत पवार यांची 'फिनिक्सच्या राखेतून उठला मोर' हा होय. जयंत पवार यांच्या फिनिक्सच्या राखेतून उठला मोर या कथासंग्रहाला निखिलेश चित्रे या प्रतिभावंत, तरुण अभ्यासक समीक्षकाच्या समीक्षात्मक प्रस्तावना लाभला आहे. 'फिनिक्सच्या राखेतून उठला मोर' या कथासंग्रहाच्या ब्लबवर लिहिलेली निखिलेश चित्रे यांचीच दोन-तीन वाक्ये अगदी अगत्याने ध्यानात ठेवावी अशी सुरेख आहेत. चित्रे म्हणतात, "पवारांची कथा वाचकाला जगण्याच्या धुमश्चक्रीत मध्यभागी आणून उभी करते. आयुष्याच्या कोलाहलात एकमेकांमध्ये मिसळलेले आवाज कान देऊन ऐकण्याचा प्रयत्न करते. या कथा म्हणजे व्यक्तीच्या समाजात जगण्याचे दस्तऐवज आहेत."[1] तर चित्रे म्हणतात तसे ही कथा वाचकाला जगण्याच्या धुमश्चक्रीच्या मधे आणते. याचे कारण जयंत पवार यांच्या कथेच्या मध्यभागी असणारा माणूस आपण असू शकतो ही भावना. मग तो रेल्वेच्या डब्यात डोळ्यासमोर एखाद्या तरुण मुलीवर अत्याचार होताना पाहणारा टेंगशे असेल, किंवा आपल्या गिरणीच्या जागी उभारलेला मॉल बघत उध्वस्त झालेला कुणी शाम असो किंवा ऐपत असूनही दुधाचे बिल थकवणारा कुणी भाऊ आवळस्कर असेल.

जयंत पवार हे मुख्यत: ओळखले जातात ते एक प्रायोगिक नाटककार म्हणून. 'अधांतर' सारख्या नाटकामुळे ते सर्वार्थाने गाजले. 'फिनिक्सच्या राखतेन उठला मोर' मधल्या सात कथांमध्येही जगण्यातले नाट्य त्यांनी अचूक पकडले आहे. हे नाट्य पकडताना त्यांनी केलेले 'कथा' या वाङ्मयप्रकारातले निवेदनाचे प्रयोग जबरदस्त आहेत. त्यांचा निवेदक मिस्किलपणा आणि उपरोध यांचे धारदार शस्त्र वापरताना मानवतेचे आणि कारुण्याचे अवधान विसरत नाही. 'छटाकभर चंद्र तुकडाभर रात्र' या कथेच्या निवेदनात तर जयंत पवार विशेष प्रयोगशील होतात. एकूणात ही कथाच मराठी कथेतला एक अद्भुत प्रयोग म्हणून नोंदवायला हवी अशी समर्थ कथा आहे. एकाच वेळी भडक नाट्यमय घटना आणि दुसरीकडे 'दु:ख मोठं का अस्तित्व' असले जीवघेणे प्रश्न कवेत घेणाऱ्या या कथेत पवारांचा निवेदक एक रहस्यकथा लेखक आहे. आणि गोष्ट आहे अरुण आणि भुजंग या दोन कवींची. (इथे अरुण काळे/भुजंग मेश्राम यांचे आठवण सहेतुक आहे आणि निवेदकाचे श्रीकांत असणे आणि रहस्यकथा लोन करणे सिनकरांची आठवण देतेच.) एकीकडे या दोन कवींनी घेतलेला एका बाईच्या रहस्याचा शोध आहे तर दुसरीकडे जगण्याच्या मूलभूत प्रश्नांचा गुंता आहे. आणि ते प्रश्न तरी कसले ? तर उदाहरणार्थ - "कवितेचं प्रयोजन काय ? कविता लिहावीच का ? किंवा काहीही लिहावं ते कशासाठी ? लिहून झाल्यावर मास्टरबेशनचं समाधान मिळतं का पूर्ण संभोगाचा ऑरगॅझम येतो की अर्धवट झाल्यासारखी अतृप्ती येते की रक्ताची शाई होऊन आपल्या अस्तित्वाचा एकेक तुकडा वेगळा टाकत आपण मरणाचा अनुभव घेत असतो की, प्रत्येक तुकड्यातून नवा जन्म घेत असतो ? काय सांगायचं असतं आपलला आणि काय शोधायचं असतं ?...

अस्तित्वाचा आदिम उत्सव की दु:खाचा देठ ?"[2] हे असले मूलभूत प्रश्न आहेत जयंत पवार यांच्या कथेच्या मुळाशी. स्वत: जयंत पवार म्हणतात तसं "नाटकवाल्यांचं जग, साहित्यिकांचं जग, मुंबईतला गिरण्यांचा संप, बाबरीकांड, धार्मिक पुनरुज्जीवनवाद आणि जातीय दंगे, जागतिकीकरणाचे भलेबुरे आघात"[3] या सगळ्याचा परिणाम त्यांच्या जाणीवांवर आणि पर्यायाने लेखनावर झालेला आहे. पिचलेला सामान्य माणूस या कथांच्या केंद्रस्थानी आहे. तो फार तर टेंगशेसारखा 'कृतिशील' लेखक होतो अन् लेखन हीच कृती करु शकतो. पण प्रतयक्षात टेंगशेचं दु:ख आहे की ट्रेनमध्ये समोर एका पोरीवर बलात्कार होताना बघूनही आपण काहीच करु शत नाही. जयंत पवार हेच रुपक वाढवतात आणि शेवटी हीच ट्रेन बलसाड, वापी करत प्रवास करते आणि एका व्यापक दहशतवादाचे रुपक बनते, तिथेही हा सामान्य माणूस धर्मांध दहशतीपुढे काहीच करु शकत नाही.

'फिनिक्सच्या राखेतून उठला मोर' ही कथा मुंबईतल्या गिरण्यांच्या संपातून जन्म घेत जागतिकीकरणाच्या वरवंट्याच्या दहशतीपर्यंत येऊन ठेपते. सुरुवातीला फिनिक्स मिलच्या जागत उभ्या राहिलेल्या एका प्रचंड मॉलमध्ये निरुद्देश हिंडणाऱ्या शाम हडकरवर असलेला कॅमेरा लॉंग शॉटमध्ये मानवी जगणेच कव्हर करतो. तीन पातळयांवर निवेदनाचा घाट घालत जयंत पवार शाम हडकरबरोबरच त्याच्या बापाची आणि आज्याची कथा सांगतात. मॉलमध्ये हिंडणारा शाम एक पस्तीस रुपयेवाली अंडरवेअर चोरतो आणि त्याच्या बदल्यात चोर चोर म्हणवून घेत आपले प्राण गमावतो. याच मोरासारख्या चमचमत्या देखण्या मॉलच्या जागी एकेकाळी असणाऱ्या गिरणीत शामच्या आज्याने अन् पंजीने केलेल्या संपाच्या हकिकती जयंत पवार उलगडतात आणि शामच्या बापाने केलेल्या गद्दारीची कहाणीही सांगतात. यशस्वी झालेल्या अन् फसलेल्या संपांच्या कहाण्यांना साक्ष असलेली ही फिनिक्स मिल एके दिवशी आगीच्या भक्ष्यस्थानी पडते (की पाडली जाते?) आणि मग तिथे उभा राहतो हा पंचतारांकित मॉल. नकळत फिनिक्स गिरण होत जाते रुपक आपल्या समाजाचं, जीवनशैलीचं, चंगळवादाच्या रेट्याचं. अतिशय अस्वस्थ करणाऱ्या या कथेतलं जयंत पवार यांचं उपहासगर्भ निवेदन मनावर चरे उमटवतं. पण त्या उपहासामागचा धुमसत असलेला प्रचंड राग समजण्यासारखा आहे. कारण हा निवेदक ओसरत गेलेल्या मूल्यांचं प्रतीक आहे, तर हकनाक बळी गेलेला शाम प्रतिनिधी आहे. आजच्या संवेदनाहीन तरुणाईचं. मॉलच्या चकचकाटाला अन् चंगळवादाला आंदण गेलेल्या पिढीचं. इथे मूळच्या फिनिक्स मिलच्या जागी फिनिक्स हायस्कूल, फिनिक्स हॉस्पिटल असं काही असतं तरी हेच झालं असतं ही जाणीव चटका बसावी तशी वाचकांच्या मनाला होते. हे जयंत पवार यांचे कथाकार म्हणून घवघवीत यश होय. कारण ही कथा कुणा पंढरी हडकरची नाही किंवा एका गिरणीची फक्त नाही, ही सार्वत्रिक मूल्यऱ्हासाची कथा आहे.

जयंत पवार अशा मूलभूत मूल्यांच्या अन् मूल्यऱ्हासाच्या कथा लिहितात. किंवा मूल्यांच्या शोधाच्या. मग त्या कथा त्याच माणसांच्या किंवा त्याच वेळेच्या केवळ असायला हव्या असे नव्हे. उदाहरणार्थ, 'टेंगशेंच्या स्वप्नात ट्रेन' कथेत ते एके ठिकाणी म्हणतात, "आणि ही परवाची गोष्ट. कणकण, थंडीताप, हाय बीपी किंवा अशाच काही त्रासाने टेंगशे चार दिवस घरी होते"4. इथे जयंत पवार यांची शैली स्पष्ट होते. टेंगशे कशानं आजारी होते हे महत्वाचं नाही. तिथे तुम्ही कोणतेही तपशील भरा. ही कथाकार म्हणून पवार यांची भूमिका आहे. यात पवार यांच्या लेखनाचे आणखी एक वैशिष्ट्य आहे. या कथा एकाच वेळी दोन्ही पातळयांवर आस्वादता येतात. उदाहरणार्थ, 'साशे भात्तर रुपयांचा सवाल अर्थात युध्द आमचे सुरु' अशा लांबलचक नावाच्या कथेत दूधवाला बळी जंगम आणि सुखवस्तू आवळस्कर यांच्यातला एका महिन्याच्या दुधाच्या बिलावरुन झालेला संघर्ष जयंत पवार अगदी तपशीलता लिहितात पण त्याचवेळी त्यात काहीतरी व्यापकही जाणवत राहतेच. या दोन्ही जाणीवांचे एकमेकावाचून तसे काही अडत नाही, पण वाचकाच्या मनात जेव्हा या दोन्ही जाणीवांची लय जुळते तेव्हा उच्च प्रतीचा आनंद लाभतो. प्रतिकात्म किंवा प्रातिनिधिक लेखनात निवेदनाचा तोल फार काळजीपूर्वक सांभाळावा लागतो. सांगायचे ते तर तन्मयतेने सांगायचेच पण सुचवायचे तेही न सांगता सुचवायचे अशी ही कसरत असते. बहुतेक वेळा हा

तोल जयंत पवार यांनी उत्तम सांभाळल्याने जयंत पवारांचा हा पहिलाच कथासंग्रह लक्ष वेधून घेतो.

अर्थात हा तोल किंचित ढळल्याने नुसतीच गमतीदार झालेली कथा म्हणजे 'चंदूच्या लगनाची गोष्ट अर्थात सड्डम ते तड्डम' ही कथा चमकदार, शिवराळ आणि भन्नाट निवेदनाने आकर्षक आणि वाचनीय झाली आहे, पण गोंधळल्यासारखी होते. अर्थात प्रत्येकवेळी कथेने मौलिकतेचे माणिक तळहातावर ठेवावे ही अपेक्षाही बरी नव्हेच. पण या कथेतला निवेदनाचा तोल कसा ढासळतो हे बघण्यासारखं आहे. खरे तर ही कथा राजेश्वरी या "तुम सब मरद लोंगोको घोडा लगाउंगी... सबका लंड काटके खाउंगी"5 असे आत्यंतिक संतापाने पुरुषजातीला कोसणाऱ्या वेश्येची व्हायला हवी होती, कारण तिची व्यथा आहेच जीवघेणी. पण संपूर्ण कथाभर चंदूच्या अंगात शिरलेल्या 'काम' आणि त्याने केलेल्या लैंगिक आणि शिवराळ उचापती इतक्या अस्ताव्यस्त पसरल्या आहेत, की शेवटी चंदूचा राग यायचे राहूनच जाते. खरे तर कोचरेकर मास्तर (चंदूचे वडील) आणि राजेश्वर या दोघांच्या वतीने चंदूचा रीतसर तिरस्कार वाटायला हवा, पण आकर्षक भाषा आणि भन्नाट निवेदनाच्या भरात ते राहूनच जाते. अर्थात हे आवर्जून लिहावेसे वाटले त्याअर्थी ते थोडेफार नकळत झाले असावे, पण या व्दिकेंद्री कथेचा मध्य मात्र थोडासा सरकलेला राहतो. वाचताना मजा वाटणारी ही भन्नाट कथा अस्वस्थ मात्र जरुर करते. चंदूने मुस्काटात मारताच राजी फुत्कारते, "ये मर्द हे या हैवान. भडवा. उधर हात उठाता तो जूतेसे मारती. साली शादी क्या की, भडवे का भगवान बन गया..."6 या एका वाक्यात जयंत पवार खूप काही सांगून जातात. पुरुषाविषयी, बाईविषयी आणि लग्नसंस्थेविषयी. अशा या खूप काही सांगणाऱ्या अन् त्याहूनही खूप काही सुचवणाऱ्या कथा. ब्लर्बवर निखिलेश चित्रे म्हणतात त्याप्रमाणे जयंत पवार यांची उपस्थिती आश्वासक आणि अपेक्षा निर्माण करणारी आहे. आपल्या नाटकांमधून मानवी व्यथेच्या 'कथा' सांगणारे पवार इथे आपल्या कथांमधून जगण्यातले 'नाट्य' तर पकडतातच पण कथाकार म्हणून त्यावर मर्मभेदी भाष्यही करतात. अशा प्रकारे जयंत पवार यांनी 'फिनिक्सच्या राखेतून उठला मोर' या कथासंग्रहात जागतिकीकरणानंतर महानगरात झालेल्या बदलांचा एकूण सात कथांतून घेतला आहे. जागतिकीकरणाने मानवी जीवनापुढे अनेक प्रश्न उपस्थित केले. या त्यांचा वेध घेण्याचा प्रयत्न करणाऱ्या या संग्रहातील 'टेंगशेंच्या स्वप्नात ट्रेन', 'साशे भात्तर रूपयांचा सवाल अर्थात युद्ध आमुचे सुरू।' 'फिनिक्सच्या राखेतून उठला मोर' 'जन्म एक व्याधी...' 'चंदूच्या लग्नाची गोष्ट अर्थात सड्डम में टड्डम...' 'एका रोमहर्षक लढ्याचा गाळीव इतिहास' 'छटाकभर रात्र तुकडा तुकडा चंद्र' या सर्वच कथा उल्लखनीय आहेत. जन्म, मृत्यू, दुःख, कौर्य व हिंसा या मानवी जीवनाला पछाडणाऱ्या गोष्टींचा सदर कथातून लेखकाने घेतलेला शोध त्यांची चिंतनशील वृत्ती अधोरेखीत करते.

निष्कर्ष :

जागतिकीकरणाचे मानवी जीवनावरील परिरणाम दर्शविणा-या कथांचा काळजीपूर्वक अभ्यास केल्यानंतर पुढील निष्कर्ष नोंदविले आहेत.

1. जागतिकीकरणाचे परिणाम 1990 नंतर सर्वच घटकांवर जाणवू लागले. त्याचे पडसाद मराठी कथा वाङ्मयावर उमटलेले दिसून येतात.
2. जागतिकीकरणानंतर महानगरामध्ये बहुराष्ट्रीय कंपन्या आणि मॉलसंस्कृती निर्माण झाले.
3. जागतिकीकरणानंतर महानगरामध्ये निर्माण झालेला मल्टीपल रिलेशन, लिव्ह इन रिलेशनशिप, स्त्रीकडे बघण्याचा दृष्टीकोन बदलेला दिसते.
4. 1990 नंतर महानगरामध्ये निर्माण आलेला मॉलसंस्कृती, चंगळवाद, मुंबईतल्या गिरण्यांचा संप, बाबरीकांड, धार्मिक पुनरुज्जीवनवाद आणि जातीय दंगे, साहित्यिक जग, जागतिकीकरणाचे आघात याचे चित्रण जयंत पवार यांनी 'फिनिक्सच्या राखेतून उठला मोर' या संग्रहात वेध घेतला आहे.
5. जागतिकीकरणानंतरच्या विज्ञान-तंत्रज्ञानातील झालेला बदल, विज्ञान-

तंत्रज्ञानाच्या प्रगतीचा सृजनशीलता, परस्परातील भावबंध, विज्ञान-तंत्रज्ञानातील वापराचा बरे-वाईट परिणाम याचा वेध घेतला आहे.

6. 1990 नंतर जागतिक पातळीवर अनेक चांगले-वाईट घटना घडले. अनेक बदल घडून आले. विज्ञान-तंत्रज्ञानाचा मोठ्या प्रमाणात वापर, माध्यमांचा वापर, नवीन निर्माण झालेली संधी व आवाहन, मूल्ये-माणुसकी, परस्परसंबंध शोषण, सामाजिक वास्तव या संग्रहात याचा वेध घेतला आहे.

संदर्भ व टीपा

1. निखिलेश चित्रे 'प्रस्तावना', 'फिनिक्सच्या राखेतून उठला मोर' - जयंत पवार, लोकवाङ्मय गृह, मुंबई, प्र.आ. जुलै 2010, पृ. 22
2. जयंत पवार 'फिनिक्सच्या राखेतून उठला मोर' उनि., पृ. 164
3. जयंत पवार, ऋणनिर्देश उनि.,
4. तत्रैव. पृ. 28
5. तत्रैव. पृ. 129
6. तत्रैव. पृ. 127

International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 **Impact Factor – 7.328**
Peer Reviewed **Bi-Monthly**
Vol.3 No.3 **Sept – Oct 2022**

आभासी चलन : वास्तव आणि आव्हाने

डॉ. लिलाधर डी. खरपुरिये
बॅरि. शेषराव वानखेडे महाविद्यालय, मोहपा तह.- कळमेश्वर, जिल्हा- नागपूर- ४४१५०२
Corresponding Author- **डॉ. लिलाधर डी. खरपुरिये**
Email id: ldkharpuriye@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.7271468

प्रस्तावना-

आधुनिक काळात चलनाचा एक नवा प्रकार उदयास आला, तो म्हणजे आभासी चलन. आभासी चलन म्हणजेच बिटकॉइन. बिटकॉइन हे एक डिजिटल चलन आहे. या डिजिटल चलनाद्वारे पैसे जगभरात कोठेही पाठवीत येतात. ही एक क्रिप्टोग्राफी प्रकारातील हॅशींग कल्पना वापरून तयार केलेली योजना आहे. बिटकॉइन जागतिक सुरक्षित करमुक्त आभासी चलन आहे. अलीकडे बिटकॉइन सारखी अनेक आभासी चलने अस्तित्वात आली आहे. जसे लाईटकॉइन, रिपल, इथेरिअम, डॉजकॉइन, कॉइन्ये, नेम, डॅश, मोनेरो, ब्लॅककॉइन इत्यादी. आभासी चलनावर नियंत्रण ठेवण्यासाठी आजपर्यंत जगात कुठलीही केंद्रीय यंत्रणा तयार झाली नाही. व्यवहारांच्या संख्येवरून लेझर नावाचे यंत्र बिटकॉइनची किंमत, तिच्या मागणी व पुरवठ्यावरून ठरवीत असते. वस्तूची खरेदी व विक्री करण्याकरिता बिटकॉइनचा वापर केला जातो. एखाद्या वस्तूच्या विक्रीनंतर त्या वस्तूच्या किमती इतके बिटकॉइन पॉईंट वस्तू विक्रेत्याच्या खात्यात जमा होते. तसेच विक्रेत्याला एखादी दुसरी वस्तू खरेदी करायची असेल तर तो या बिटकॉइन पॉईंट मधून खर्च करतो. बिटकॉइन कोणत्याही एका देशाची करन्सी नाही. बिटकॉइनलाच क्रिप्टोकरन्सी असेही म्हणतात. क्रिप्टो म्हणजे गुप्त आणि करन्सी म्हणजे चलन या दोन शब्दांतून क्रिप्टोकरन्सी हा शब्द तयार झाला आहे. क्रिप्टोकरन्सी सामान्यतः फियाट चलन असतात. कारण त्याला कोणतेही आंतरिक किंवा निश्चित मूल्य नसते. शिवाय सोने किंवा चांदी सारख्या कोणत्याही मूर्त धातूचा आधार नसतो. आभासी चलनाची संपूर्ण कार्यपद्धती ब्लॉकचेन प्रणालीवर चालते. जी केवळ ऑनलाइन पद्धतीतच अस्तित्वात आहे. बिटकॉइन हे पहिले जागतिक विकेंद्रीत चलन आहे.

शोधनिबंधाची उद्दिष्टे-

१) आभासी चलनाचा उगमाचा आढावा घेणे.

२) आभासी चलनाला पर्यायी सरकारी डिजिटल चलनाचा आढावा घेणे.

३) आभासी चलनाची वास्तविकता व आव्हानांचा अभ्यास करणे.

४) आभासी चलनाचा जागतिक अर्थव्यवस्थेवर पडणाऱ्या प्रभावाचा अभ्यास करणे.

सातोशी नाकामोटो यांनी ३ जानेवारी २००९ ला बिटकॉइन तयार केले असे म्हटले जात होते. मात्र सातोशी नाकामोटो ही काल्पनिक व्यक्ती असल्याचे स्पष्ट झाल्यानंतर मार्टी मलमी यांनी बिटकॉइन विकसित केले असे म्हणतात. शिवाय बिटकॉइन बाजारात येण्यापूर्वीही अनेक आभासी चलन अस्तित्वात होती. डिजिटल अल्टरनेटिव्ह करन्सी, ई-गोल्ड अशा स्वरूपाच्या आभासी चलन बाजारात आली होती. अमेरिकेत १९८० च्या

दशकात डेव्हिड चाऊम यांनी ब्लाईडिंग नावाचे अल्गोरिदम तयार केले. यामुळे बिना अडथळा माहितीच्या संवहनाचा मार्ग सुकर झाला. याचाच वापर पुढे इलेक्ट्रॉनिक करन्सी ट्रान्सफरसाठी होऊ लागला. या करन्सी ट्रान्सफरला 'ब्लाइंडेड मनी' म्हणून संबोधायला लागले. तसेच डेव्हिड चाऊम ला 'डिजिटल कॅश' संकल्पनेचेही शोधकर्ता असेही म्हणतात. त्यांनी इंटरनेट वापरकर्त्यांची ओळख गुप्त ठेवून रोखीचे व्यवहार करता येणारी प्रणाली विकसित केली. मात्र या प्रक्रियेत डिजिटल कॅशचे नियंत्रण वापरकर्त्याकडे नव्हते. नंतर १९९० ते २००० या दशका दरम्यान ई-गोल्डने बाजारात धुमाकूळ घातला होता. याही व्यवहारात व्यवहारकर्त्याकडे चलनाचे नियंत्रण नव्हते. पैशाच्या व्यवहारांचे नियंत्रण प्रत्येक व्यवहार कर्त्याकडे येणे ही आभासमान किंवा डिजिटल चलनाची पुढची पायरी म्हणजे बिटकॉइन.

जगातल्या काही देशांनी आभासी चलनाला मान्यता दिली असली तरी बहुसंख्य देशांनी या चलनाला अर्थव्यवस्थेपासून दूर ठेवणेच पसंत केले आहे. अमेरिकेच्या फेडरल बँकेची अरेरावी संपावी असे वाटणाऱ्या देशात आभासी चलन वेगाने विस्तारत आहे. जगात ज्या पद्धतीने या चलनाच्या खरेदी विक्रीच्या माध्यमातून नवीन गुंतवणुकीचा पर्याय उपलब्ध झाला आहे, ते पाहता अर्थतज्ञ व सरकार चिंतित झाले आहे. दिवसागणित बिटकॉईनची लोकप्रियता वाढू लागल्यामुळे वेगवेगळया ठिकाणच्या सरकारांना आणि मध्यवर्ती बँकांना एक प्रकारची भीती वाटू लागली. ती म्हणजे अर्थव्यवस्थेमधला पैसा या आभासी चलनाने शोषून घेतला आणि लोकांनी जास्तीत जास्त पैसा अशा चलनांमध्ये गुंतवण्यास सुरुवात केली तर त्यातून विचित्र आर्थिक समस्या निर्माण होऊ शकते.

आज आभासी चलनात गुंतवणूक करणाऱ्यांचे प्रमाण अत्यल्प असल्यामुळे परिस्थिती नियंत्रणात आहे. पण, भविष्यात बिटकॉईनची किंमत वाढणार आहे असे वाटल्यास मोठ्या प्रमाणावर लोक त्याकडे वळण्याची शक्यता नाकारता येत नाही. कारण, मुदत ठेवी किंवा तत्सम गुंतवणूक योजनांमधून मिळणारा नफा, त्यावर आकारण्यात येणारा कर यापेक्षा बिटकॉईनचा पर्याय अधिक किफायतशीर आहे, असा समज होण्यास पूर्ण वाव आहे. अशा स्थितीत वैध-अवैध मार्गाने लोक या आभासी चलनांकडे वळू शकतात. परिणामतः अर्थव्यवस्थेतील चलनाचे प्रमाण कमी होऊ शकते. मागील काळात जेव्हा ५०० व १००० रुपयाचा नोटबंदीचा निर्णय घेतला गेला. तेव्हा मोठ्या प्रमाणावर पैसा बिटकॉईनमध्ये वळवला गेल्याचे समोर आले होते. तसेच जागतिक पातळीवर बिटकॉईनचा वापर हा अवैध गोष्टी करण्यासाठी होतो, असे मानले जाते. यात अमली पदार्थांची तस्करी, मानवी तस्करी, चाईल्ड पोर्नोग्राफी, शस्त्रास्त्रांची चोरटी खरेदी यांसारखे बेकायदेशीर व्यवहार करण्यासाठी बिटकॉईनचा वापर मोठ्या प्रमाणावर होत असतो. कारण या चलनाची कुठेही नोंद होत नसल्याने अशा आर्थिक व्यवहारांमध्ये पकडले जाण्याची शक्यताच राहत नाही. म्हणून उपरोक्त सर्व धोके प्रकर्षाने दिसू लागल्यामुळे यासंदर्भात धोरणात्मक किंवा उपाययोजनात्मक पाऊल उचलणे गरजेचे ठरू लागले आहे.

या आभासी चलनालाच "आधुनिक काळातील महामारी" म्हटले आहे. याचे कारण हे चलन सरकारी नियंत्रणाबाहेर आहे आणि या चलनाच्या किमती अतिशय धोकादायकपणे चढतात आणि कमी होतात. भारतात २०१८ मध्ये रिझर्व्ह बँकेने क्रिप्टोकरन्सीमध्ये व्यवहार करण्यावर बंदी घातली होती. बँकांना अशा व्यवहारांमध्ये भाग

घेण्यावर निर्बंध घातले आणि अशा चलनामधील व्यवहार बेकायदा ठरविले होते. परंतु सर्वोच्च न्यायालयाने २०२० मध्ये ती बंदी उठविण्याचा निर्णय दिला. यात त्यांनी एखादे नवे तंत्रज्ञान किंवा प्रवाह थोपविता येत नाही असे निरीक्षण नोंदविले. सर्वोच्च न्यायालयाच्या निर्णयानंतर असे व्यवहार करण्यास आता सूट मिळालेली आहे. म्हणून अशा व्यवहारावर बंदी न घालता गुंतवणूकदारांना तसाच डिजिटल पर्याय देण्याचा विचार भारत सरकार करीत आहे. म्हणून २०२२- २३ च्या अर्थसंकल्पात भारताच्या अर्थमंत्री निर्मला सीतारामन यांनी डिजिटल चलन आणण्याची घोषणा केली. नवीन आर्थिक वर्षात रिझर्व बँक ऑफ इंडिया मार्फत हे डिजिटल चलन व्यवहारात आणले जाणार आहे. रिझर्व बँकेने 'सेंट्रल बँक डिजिटल करन्सी' (सीबीडीसी) आणण्याचे प्रयत्न सुरू केले आहे. अर्थसंकल्पानंतर भारताचे पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांनी म्हटले की, डिजिटल चलन सध्याच्या चलनामध्ये रूपांतरित करता येईल. या डिजिटल व्यवस्थेमुळे ऑनलाइन पेमेंट अधिक सुरक्षित आणि जोखीममुक्त होईल. तसेच जागतिक पातळीवर डिजिटल पेमेंट व्यवस्था अधिक सरल व सुलभ होईल. शिवाय रोख रक्कम छापण्याचा, हाताळण्याचा आणि वितरणाचा खर्च सुद्धा कमी होईल. चलनाचे नाव निश्चित झाले नसले तरी 'डिजिटल रुपी' असे नाव पुढे येऊ शकते, असा अंदाज आहे. नवे डिजिटल चलनाचे मूल्य आणि रुपयाचे मूल्य एक सारखे राहणार नाही. या डिजिटल चलनावर ३० टक्के कर आकारले जाईल. क्रिप्टो चलन आणि डिजिटल चलन हे दोन्ही आभासी स्वरूपाचे असले तरी ते अजिबात एक सारखे राहणार नाही. कारण डिजिटल चलन हे अधिकृत सरकारी चलन असेल. या चलनाचा सर्वच प्रकारच्या आर्थिक व्यवहारांसाठी वापर करता येईल. घाऊक (ठोक) आर्थिक व्यवहार करणाऱ्या बँका व संस्थांसाठी, विशेषतः आंतरराष्ट्रीय बँकिंग व्यवहारांसाठी डिजिटल चलन फार उपयोगी ठरणार आहे. या चलनाच्या मदतीने आयात निर्यातदारांना कोणत्याही मध्यस्थी यंत्रणेचा वापर न करता तत्काळ डिजिटल स्वरूपात पैसे चुकते करता येईल. घाऊक व्यवहारांसाठी ही डिजिटल चलनाची व्यवस्था एक वरदान ठरेल. मात्र भारतासारख्या देशात किरकोळ व्यापार मोठ्या प्रमाणात रोख स्वरूपात होत असताना डिजिटल चलनाचा वापर कसा सुलभ होऊ शकतो हा मुद्दा समोर आला आहे. तेव्हा रिझर्व बँकेने घाऊक आणि किरकोळ अशा दोन्ही व्यवहारांसाठी स्वतंत्र डिजिटल चलन आणण्याची तयारी केली आहे. मोठ्या प्रमाणावर आर्थिक व्यवहार करणाऱ्या बँका व संस्थांच्या आर्थिक व्यवहारांसाठी घाऊक डिजिटल चलन तर इतर लहान व मध्यम स्वरूपाचे आर्थिक व्यवहार करणाऱ्या संस्थांसाठी रिटेल डिजिटल चलन असेल. ज्याचा मोबाईल व तत्सम उपकरणाच्या मदतीने वापर करता येऊ शकेल.

या आभासी चलनावर रिझर्व बँकेचे नियंत्रण असल्याने या चलनाच्या माध्यमातून होणारे सर्व व्यवहार हे बिटकॉईनप्रमाणे गुप्त राहणार नाहीत. त्यामुळे सरकारची नजर चुकवून कुणी या चलनामध्ये गुंतवणूक केली तर त्याची सर्व माहिती रिझर्व बँकेकडे जाणार आहे. यामध्ये फरक म्हणजे सध्याचे सर्व आर्थिक व्यवहार हे एक बँक ते दुसरी बँक अशा खात्यांदरम्यान होतात. तर आभासी चलनाचे एक वॉलेट ते दुसरे वॉलेट अशा प्रकारे हे व्यवहार होतील. थोडक्यात, पेटीएम, पे फोन, गुगल पे यांसारख्या आज वापरात असणाऱ्या वॉलेट प्रमाणेच याची कार्यपद्धती असेल. फक्त ती राष्ट्रीय पातळीवर रिझर्व्ह बँकेच्या नियंत्रणाखाली चालवीली जाईल. तसेच त्या व्यक्तीने केलेल्या व्यवहारांची नोंदही सार्वजनिकरीत्या त्यामध्ये केली जाईल. यामागचा उद्देश असा की, एखाद्याने जर या व्यवहाराबाबत काही तक्रार केली

किंवा घोटाळा झाल्याचा आरोप केला तर त्याची खातरजमा सहजगत्या करता येते.

थोडक्यात, लोकांना खऱ्याखुऱ्या आभासी चलनापासून दूर करून देशपातळीवरील आभासी चलनाचा वापर करा, असे सांगून देशप्रेम जागवण्याचाही एक हेतू असण्याची शक्यता आहे. त्यामुळे या प्रस्तावित चलनाच्या माध्यमातून केल्या जाणाऱ्या व्यवहारांसाठी काही सवलतीही दिल्या जाऊ शकतात, पण जर हा प्रयोग यशस्वी ठरला तर आणखी काही वर्षांनी बँकांची गरज कितपत आहे, असा प्रश्नही यातून निर्माण होऊ शकतो. कदाचित बँकांचे कामाचे स्वरूप पूर्णतः बदलून जाऊ शकते.

आज जगात सर्वच देशांमध्ये क्रिप्टोकरन्सी सारखी आपली डिजिटल चलन निर्माण करण्याचे प्रयत्न केले जात आहे. काही देशांनी तर अशा प्रकारचे डिजिटल चलन सुरू सुद्धा केले आहे. जसे कॅरिबियन दीपसमूहातील बहामास या देशाने २०२० मध्ये आपले डिजिटल चलन आणले आहे. जापान, चीन, सिंगापूर, स्वीडन यासारखे प्रगत देश डिजिटल चलनाची उपयुक्तता पडताळून पाहत आहे. अमेरिकेमध्येही डिजिटल चलनाविषयी विचार विनिमय सुरू झाला आहे. जवळजवळ जगात ७४ देशांमध्ये डिजिटल चलनावर विचारमंथन सुरू झाला आहे.

भ्रष्टाचार, काळा पैसा याद्वारे उपद्रव करणाऱ्यांना डिजिटल चलनामुळे चाप बसणार आहे, असे वाटत असले तरी डिजिटल चलनाचे सर्वसामान्यांच्या आयुष्यात का स्थान आहे, हे तपासणे तितकेच महत्वाचे आहे. कारण सरकारला डिजिटल चलनाची गरज वाटत असली तरी सर्वसामान्यांना त्याची तितकी गरज आहे काय, हे पाहणेही गरजेचे आहे. कारण नोटबंदीच्या काळात चलनाच्या फेरबदलाची झळ लोकांनी चांगलीच अनुभवली आहे. नंतर कॅशलेस व्यवहारात काही प्रमाणात वाढ सुद्धा झाली असली तरी पुन्हा बाजारात रोखीचे प्रमाण वाढताना दिसते आहे. कारण बहुतेक लोक डिजिटल व्यवहार करण्यास घाबरतात. ज्येष्ठ नागरिकांचा तर डिजिटल बँकिंग बरोबर एटीएमवरही भरवसा राहिलेला नाही. म्हणून डिजिटल चलनाने लोकांची चिंता वाढू नये एवढीच अपेक्षा आहे.

सारांश-

बिटकॉइन जागतिक करमुक्त आभासी चलन असून या चलनाच्या वापरावर कोणतेही नियमन किंवा कोणतीही बंदी नाही. शिवाय या चलनावर कोणत्याही देशाचे किंवा यंत्रणेचे नियंत्रण नाही. अलीकडे बिटकॉइन सारखी अनेक आभासी चलने अस्तित्वात आली आहे. यामुळे भ्रष्टाचार व गैरमार्गाने मिळविलेला पैसा या चलनात गुंतविण्यास वाव आहे. तसेच या चलनाच्या माध्यमातून मिळालेला नफा देश विघातक प्रवृत्तींना प्रोत्साहित करण्याकरिता वापरला जात आहे, अशी शंका आहे. शिवाय देशात आर्थिक अस्थिरता पसरविण्याकरिता सुद्धा या चलनाचा वापर होऊ शकतो अशी भीती सर्वच देशातील सरकारांना आहे, असे दिसून येते. भारत सरकार महागाईला नियंत्रित करण्याकरिता रिझर्व बँकेचा मार्फत रेपो दरात वाढ करून व्यापारी बँकेच्या माध्यमातून व्याजदर वाढविण्याचा प्रयत्न करीत आहे. परिणामतः लोकांजवळील पैसा कमी होऊन किमती नियंत्रणात येतील असा मानस आहे. मात्र पैसा आभासी चलनात गुंतविला असेल तर त्याचा प्रतिकूल परिणाम या विधायक कार्यावर होईल, असे वाटते. मात्र अलीकडे या चलनाला पर्यायी सरकारी डिजिटल चलन असावं याविषयी जगभर चर्चा सुरू झाली आहे. भारतात २०२२- २३ च्या अर्थसंकल्पात भारताच्या अर्थमंत्री निर्मला सीतारामन यांनी डिजिटल चलन आणण्याची घोषणा सुद्धा केली आहे. नवे डिजिटल चलनाचे मूल्य आणि रुपयाचे मूल्य एक सारखे राहणार नाही. या डिजिटल चलनावर ३० टक्के कर

आकारले जाईल. मात्र बिटकॉइन सारख्या आभासी चलनापासून गुंतवणूकदारांना दूर करून देशपातळीवरील सरकारी आभासी चलनाचा वापर करा, असे सांगून देशप्रेम जागवण्याचाही एक हेतू सरकार जवळ असण्याची शक्यता आहे. त्यामुळे या प्रस्तावित चलनाच्या माध्यमातून केल्या जाणाऱ्या व्यवहारांसाठी काही सवलतीही दिल्या जाऊ शकतात. तेव्हाच हा प्रयोग यशस्वी ठरला जाऊ शकतो.

संदर्भ-

१) https://pudhari.news
२) https://www.esakal.com
३) https://mr.wikipedia.org
४) https://maharashtratime.com
५) https://www.mahamtb.com
६) https://www.google.com
७) https://www.esakal.com
८) https://tumbe.org

International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.3 No.3 Sept – Oct 2022

विधार्थ्यांच्या स्व संकल्पनेचा अभ्यास

प्रा.डॉ प्रकाश जगताप
सहयोगी प्राध्यापक टिळक शिक्षण महाविद्यालय पुणे
Corresponding Author- **प्रा.डॉ प्रकाश जगताप**
Email id: profprakashJagtap1gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.7271471

सारांश –

स्व संकल्पना हा व्यक्तिमत्वाचा एक महत्वाचा भाग आहे.ज्या मुळे व्यक्तीला त्याच्या स्व ची ओळख आणि जाणीव होते.व्यक्तीच्या यशस्वी जीवनासाठी स्वसंकल्पना ओळख असणे महत्वाचे आहे. प्रस्तुत संशोधन लेखात विधार्थ्यांच्या स्व संकल्पनेचा अभ्यास केला आहे. यात विधार्थ्यांच्या स्वसंकल्पनेची सद्य स्थिती , पुरुष व स्त्री विधार्थी ,मराठी व इंग्रजी मध्यम विधार्थी यांच्या स्व संकल्पनेचे सर्वेक्षण संशोधन पद्धतीचा वापर करून शोध घेऊन निष्कर्ष काढले आहे.

प्रस्तावना –

मनुष्य हा समाजप्रिय प्राणी आहे. समाजात वावरत असताना तो सर्वांशी मिळूनमिसळून वागण्याचा प्रयत्न करत असतो. समाजात वावरत असताना तो इतरांचे वर्तन समजून घेण्याचा प्रयत्न करते व स्वतः मध्येही बदल घडवून आणतो, स्वतःतील गुणवैशिष्ट्ये, मर्यादा शोधण्याचा, ओळखण्याचा प्रयत्न करतो . संस्कृतमध्ये आपण 'सोऽहम्' असे म्हणतो. तसेच इंग्रजीत 'Know Thyself' असे म्हटले जाते. स्वतःच स्वतःची ओळख करून घेणे, स्वत:बद्दलची जाणीव करून घेणे म्हणजे स्वसंकल्पना. व्यक्तीच्या स्वतःबद्दल काही कल्पना, भावना असतात. काही विश्वास, मूल्ये असतात. या सर्वांचा संकल्पनेत समावेश होतो.

स्वसंकल्पना –

व्यक्तीने स्वत:च्या भावना, विश्वास, मूल्ये, कल्पना इ.ओळख करून घेणे म्हणजे स्वसंकल्पना होय.स्वसंकल्पना व्यक्तिमत्त्व विकासात हातभार लावतात. स्वसंकल्पनेमुळे व्यक्तीला स्वत:ची ओळख होते, आपण कोण आहोत याची जाणीव होते. सामाजिक संबंध सुधारण्यासाठी स्वसंकल्पना हातभार लावतात. स्वसंकल्पनेमुळे व्यक्तीच्या जीवनाला स्वयंदिशा प्राप्त होते.स्वसंकल्पनेत व्यक्तीच्या शारीरिक, मानसिक आणि सामाजिक स्वप्रतिमांचा समावेश होतो.

शारीरिक स्वसंकल्पना –

शारीरिक स्वसंकल्पनेत स्वतःच्या शरीराबद्दलच्या जाणिवेचा समावेश होतो. यात व्यक्तीचे दिसणे, शरीरयष्टी, आकर्षकता इ. गोष्टी समाविष्ट आहेत. या गोष्टींमुळेही व्यक्तीला समाजमान्यता, लोकप्रियता मिळत असते.

मानसिक स्वसंकल्पना -

मानसिक स्वसंकल्पनेत व्यक्तीच्या भावना, व्यक्तीची गुणवैशिष्ट्ये, मर्यादा, समायोजनक्षमता इ.चा समावेश होतो. यामध्ये माझ्यात काय गुण आहेत आणि काय दोष आहेत हे स्वतःच समजून घेणे आवश्यक असते. तसेच त्याचा स्वीकार करणे महत्त्वाचे असते.

सामाजिक स्वसंकल्पना –

शारीरिक व मानसिक स्वसंकल्पनेतून सामाजिक स्वसंकल्पना तयार होत जाते. ही स्वसंकल्पना तयार होण्यासाठी समाजातील व्यक्ती हातभार लावत असतात. लोक मला काय समजतात ? माझा कसा विचार करतात ? या भावनेतून ही स्वसंकल्पना विकसित होत जाते.

स्वसंकल्पना विद्यार्थ्यांमध्ये विकसित होण्यासाठी पालक, शिक्षक, समवयस्क मित्र हातभार लावत असतात. पालक-आई-वडील, नातेवाईक यांच्याकडून विद्यार्थ्याला कसे अनुभव येतात याचा त्याच्या स्वप्रतिमेवर मोठा परिणाम होतो व त्यानुसार स्वसंकल्पना विकसित होत जाते.पालकांचे मुलांशी बोलणे, वागणे, मुलांची भावंडांशी केलेली तुलना यांनुसार मुलांच्या स्वसंकल्पना बदलत जातात. पालकांनी मुलांबद्दल वास्तव अपेक्षा बाळगल्या तर स्वप्रतिमा उंचावते, अवास्तव अपेक्षा बाळगल्या तर अपयश येते, आत्मविश्वास कमी होतो, न्यूनगंड निर्माण होतो व स्वप्रतिमा दुणावते.

एखादे पालक मुलांचा सतत पाणउतारा करत असतात, टीका करत असतात. यातूनही मुलांच्या वागणुकीवर विपरीत परिणाम होतो. विद्यार्थ्याचा जन्मक्रम, लिंग, कुटुंबाची आर्थिक-सामाजिक परिस्थिती, शरीरव्यंग यानुसार विद्यार्थ्याला कुटुंबातून जे अनुभव मिळत असतात त्यानुसार स्वसंकल्पना बनत जातात.शिक्षक- बरेचदा शिक्षकांच्या वागणुकीतून व्यक्तिनिष्ठता असते. शिक्षकांकडून कळत नकळत काही मुलांची प्रशंसा केली जाते तर काही मुलांची निंदानालस्ती खरे तर प्रशंसा व निंदा या व्यक्तिवर्तनात अपेक्षित बदल व्हावा म्हणूनच केल्या जातात. परंतु निंदेचा विपरीत परिणाम दिसून येतो, यातून न्यूनगंड वाढत जाऊन स्वसंकल्पना दुणावते. याउलट शिक्षकांनी केलेले कौतुक, दिलेले प्रोत्साहन यामुळे आत्मविश्वास वाढतो व स्वसंकल्पना उंचावते.स्वसंकल्पना विकसित झाल्यामुळे व्यक्तिमत्त्वविकास होण्यास मदत होते

समस्या विधान :

माध्यमिक स्तरावरील विद्यार्थ्यांच्या स्व संकल्पनेचा अभ्यास करणे.

- **कार्यात्मक व्याख्या :**

१. माध्यमिक स्तर - शालेय स्तरावरील इयत्ता ९ वी आणि १० वी चे वर्ग माध्यमिक स्तरावर असतात.या स्तरावरील विधार्थ्यांचे वय १५ ते १६ या वयोगटातील असते.

२. विद्यार्थी- माध्यमिक स्तरावरील इयत्ता नववी आणि दहावी इयत्तेत शिकणारे विद्यार्थी.

३. विद्यार्थी स्व संकल्पना –विधार्थ्यांच्या शारीरिक ,मानसिक,सामाजिक, भावनिक,शेक्षणिक इ. त्यांच्या स्व्चा समावेश होतो.

४. संशोधनाची उदिष्टे :

उदिष्टे पुढीलप्रमाणे निश्चित केली आहेत.

१. माध्यमिक स्तरावरील विधार्थ्यांच्या स्व संकल्पनेचा शोध घेणे .

२.माध्यमिक स्तरावरील विद्यार्थ्यांच्या स्व संकल्पने ची खालील घटकाप्रमाणे तुलना करणे अ.पुरुष विधार्थी व स्री विद्यार्थी ब.मराठी व इंग्रजी माध्यम विधार्थी.

- **शून्य परिकल्पना :**

विद्यार्थी व विद्यार्थिनीच्या **स्व संकल्पने च्या** प्राप्तांकामध्ये सार्थ फरक आढळत नाही.

१. **मराठी व इंग्रजी माध्यम** विद्यार्थ्यांच्या स्व संकल्पने च्या प्राप्तांकाच्या मध्यमानामध्ये कोणताही सार्थ फरक आढळत नाही.

संशोधन कार्यपद्धती पद्धती :

सदर संशोधनात संशोधकाने माध्यमिक स्तरावरील विधार्थ्यांच्या स्व संकल्पनेच्या सद्यस्थितीचा स्तर जाणून घेण्यासाठी सर्वेक्षण पध्दतीचा वापर केला आहे.प्रश्नावली द्वारे माहिती संकलित केली .माहितीचे अर्थ निर्वचन करण्यासाठी मध्यमान,प्रमाण विचलन ,टी परिक्षीका इ.वापर केला आहे.

माहितीचे विश्लेषण व अर्थनिर्वचन :

सदर संशोधनात माध्यमिक स्तरावरील विधार्थ्यांच्या स्व संकल्पनेच्या सद्यस्थितीचा स्तर जाणून शोध घेऊन ग्रामीण व शहरी विद्यार्थी व विद्यार्थीनी मराठी माध्यम व इंग्रजी माध्यम विधार्थी यांचा तुलनात्मक अभ्यास करण्यात आला.

अ. क्र.	नमुना	संख्या	मध्यमान	विद्यार्थी स्व संकल्पना स्तर
१.	विद्यार्थी	२२	१७३.	चांगला
२.	विदयार्थीनी	१९	१७४	चांगला
3.	मराठी माध्यम	२९	१७४.५	चांगला
४ .	इंग्रजी माध्यम	२१	१७३.०४	चांगला

• वरील कोष्टकनुसार विद्यार्थ्यांचा स्व संकल्पना स्तर चांगला असून लिंगभाव, शाळेचे स्थान, यानुसारही विद्यार्थी स्व संकल्पना स्तर चांगला आहे.

शून्य परिकल्पना -विद्यार्थी व विद्यार्थीनीच्या स्व संकल्पना प्रश्नावली च्या प्राप्तांकाच्या मध्यमानामध्ये सार्थ फरक आढळत नाही. सदर शून्य परिकल्पना तपासण्यासाठी विद्यार्थी व विद्यार्थ्यांना स्व संकल्पना प्रश्नावली मध्ये मिळालेल्या प्राप्तांकांच मध्यमान प्रमाण विचलन काढण्यात आले. तसेच टी परीक्षिका च्या मदतीने दोन्ही मध्यमानातील फरकाची सार्थकता तपासण्यात आली.

नमुना	नमुना संख्या	मध्यमान	प्रमाण विचलन		शून्यपरिकल्पना स्वीकार/ त्याग
विद्यार्थी	२२	१७३.५४	४.९८	-०.९०	स्वीकार
विद्यार्थिनी	१९	१७४	५.९९		

- कोष्टकातील टी.०मूल्य :०५ सार्थकता स्वाधीनता मात्रा : ३९

वरील कोष्टकातील टी मूल्य -०.०५ सार्थकता स्तर स्वाधीनता मात्रा ३९ कोष्टक वरून असे दिसून येते की, विद्यार्थी व विद्यार्थिनी यांना स्व संकल्पना शलाकेमध्ये मिळालेल्या प्राप्तांकाची तुलना केली असता येणारे -०.९० .मूल्य इतके आहे. ०.०५ या सार्थकता स्तरावर कोष्टक टी १.९८ मुल्ये इतके आहे. गणन केलेले टी मूल्य हे कोष्टक टी मूल्यापेक्षा कमी असल्याने शून्य परिकल्पना चा स्वीकार करण्यात आला. म्हणजेच विद्यार्थी व विद्यार्थिनी यांच्या स्व संकल्पना मध्ये सार्थ फरक नाही. यावरुन विद्यार्थी व विद्यार्थिनी स्व संकल्पना सारखीच आहे. शून्य परिकल्पना - २. मराठी व इंग्रजी माध्यम विद्यार्थ्यांच्या स्व संकल्पने च्या प्राप्तांकाच्या मध्यमानामध्ये कोणताही सार्थ फरक आढळत नाही. सदर शून्य परिकल्पना तपासण्यासाठी मराठी व इंग्रजी माध्यम विद्यार्थ्यांना स्व संकल्पना शलाकेमध्ये मिळालेल्या प्राप्तांकांचे मध्यमान, प्रमाण विचलन काढण्यात आले. तसेच टी परीक्षिकेच्या दोन्ही मध्यमानातील फरकांची सार्थकता तपासण्यात आली.

मराठी व इंग्रजी माध्यम विद्यार्थ्यांच्या स्व संकल्पना, मध्यमान, प्रमाण विचलन आणि टी मूल्य

नमुना	नमुना संख्या	मध्यमान	प्रमाण विचलन	टी मूल्य	शून्य परिकल्पना
मराठी माध्यम	२०	१७४.५	५.७७	-२.०३	स्वीकार
इंग्रजी माध्यम	२१	१७३.०४	५.०७		

- कोष्टकातील टी.०मूल्य :०५ सार्थकता स्वाधीनता मात्रा : ३९

वरील कोष्टक वरून असे दिसून येते की, मराठी व इंग्रजी माध्यम विधार्थी यांना स्व संकल्पना शलाकेमध्ये मिळालेल्या प्राप्तांकाची तुलना केली असता येणारे टी मूल्य -२.०३ इतके आहे. ०.०५ या सार्थकता स्तरावर कोष्टक टी १.९८ मुल्ये इतके आहे. गणन केलेले टी मूल्य हे कोष्टक टी मूल्यापेक्षा कमी असल्याने शून्य परिकल्पना चा स्वीकार करण्यात आला. म्हणजेच मराठी व इंग्रजी माध्यम विद्यार्थी यांच्या स्व संकल्पना मध्ये सार्थ फरक नाही. यावरून मराठी व इंग्रजी माध्यम विद्यार्थी यांची स्व संकल्पना सारखीच आहे.

निष्कर्ष :

मिळालेल्या माहितीचे वर्गीकरण, विश्लेषण आणि अर्थनिर्वचनकरून पुढील निष्कर्ष सदर संशोधनातून काढले आहेत.

१. विद्यार्थ्याचा स्व संकल्पना स्तर चांगला आहे.

२. विद्यार्थी आणि विद्यार्थिनी यांचा स्व संकल्पना स्तर चांगला आहे.

३. मराठी व इंग्रजी माध्यम विद्यार्थ्याचा स्व संकल्पना स्तर चांगला आहे .

४ . विधार्थ्यांचा स्व संकल्पना पैलु प्रमाणे शारीरिक स्वसंकल्पना स्तर चांगला ,सामाजिक स्वसंकल्पना स्तर समाधानकारक ,मानसिक स्वसंकल्पना स्तर समाधानकारक ,शिक्षणिक स्वसंकल्पना स्तर चांगला ,नैतिक स्वसंकल्पना स्तर चांगला ,बौद्धिक स्वसंकल्पना स्तर चांगला आहे.

संदर्भग्रंथ

1. नानकर प्र.शिरोडे स.(२००९) सुबोध शैक्षणिक व प्रायोगिक मानसशास्त्र , नित्यनूतन प्रकाशन, पुणे
2. दांडेकर वा (२०१०) शैक्षणिक मूल्यमापन व संख्याशास्त्र, पुणे, श्रीविदया प्रकाशन
3. दांडेकर वा. ना., शैक्षणिक व प्रायोगिक मानसशास्त्र, नरेंद्र प्रकाशन, पुणे
4. भिताडे वि (२००७) शैक्षणिक संशोधन पध्दती, नित्यनूतन प्रकाशन, पुणे
5. भोसले अ डोणे उ. (२००९) शिक्षणातील बदलते विचारप्रवाह, कोल्हापूर, फडकेपब्लिकेशन्स

International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.3 No.3 Sept – Oct 2022

पुणे शहराच्या शिवाजीनगर भागातील बांधकाम महिला मजुरांच्या सामाजिक समस्या

डॉ. राजेश्री गोखले [1] सुधीर रा. भालेराव[2]
[1]प्राध्यापक बी.एम.सी.सी.वाणिज्य महाविद्यालय पुणे - ४११००४.
[2]सहाय्यक प्राध्यापक डॉ.डी.वाय .पाटील कला,वाणिज्य,विज्ञान महाविद्यालय, ताथवडे ,पुणे -४११०३३.
Corresponding Author- डॉ. राजेश्री गोखले
Email id: sudhirbhalerao.bsp@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.7271478

प्रस्तावना :

पुणे शहर हे मुख्यत्वे कर्मचारी व कामगारांचे शहर म्हणून पुर्वीपासून प्रसिद्ध आहे. पुणे शहरात सरकारी, निमसरकारी व खाजगी संस्थांचे प्रमाण खूप असल्यामुळे आजूबाजूच्या जिल्ह्यातून फार मोठ्या प्रमाणात कामगारांचे स्थलांतरण होत असते. या पुणे शहरात मजुरांची संख्या देखील लक्षणीय प्रमाणात आहे. कारण 1972 च्या दुष्काळापासून विशेषत: मराठवाड्यातील जिल्ह्यांतून फार मोठया प्रमाणात मजुरांचे स्थलांतर पुण्यात झाले आहे. हे मजुर विविध क्षेत्रातील उद्योगात, संस्थांमध्ये काम करीत असतात. विशेषत: या शहरात होणाऱ्या नवनव्या बांधकामाच्या ठिकाणी हे मजुर काम करीत असतात आणि विशेष म्हणजे या मजुरांमध्ये स्त्रीयांचे प्रमाणसुध्दा लक्षणीय प्रमाणात असल्याचे आढळते.

हे सर्व मजुर हे स्त्री व पुरुष दोन्हीही रोजंदारीवर व अनियमित स्वरुपात काम करीत असतात व हे मजुर मिळविण्यासाठी पुण्याच्या भागात उदा. वडारवाडी, कामगार पुतळा, गाडीतळ, पांडवनगर, पाटील इस्टेट, कुसाळकर पुतळा चौक, गोलंदाज चौक, इ. मजुर अड्डे उपलब्ध आहे. येथे विशेष म्हणजेया मजुरांची कोठेही नोंदणी व माहिती उपलब्ध नसल्याने हे सर्व असंघटीत स्वरुपाचे असतात.

तज्ञांच्या मते विशेषत: या मजुरांमध्ये देखिल स्त्रियांचे प्रमाण लक्षणिय असून त्या प्रमाणात त्यांना सोयीसुविधा असल्याचे कोठेही दिसत नाही त्यामुळे या स्त्रियांना आरोग्यविषयक समस्यांना आयुष्यभर तोंड द्यावे लागते. या मजुर स्त्रियांना त्यांच्या मेहनतीच्या मानाने कोणतेच लाभ त्यांच्या मालकाकडून व शासनाकडून सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक स्तरावर मिळत असल्याचे जाणवत नाही. महिला बांधकाम मजुर रोज नवनवीन अडचणींना सामोरे जात असतात. त्यांच्या अडचणी ह्या विविध प्रकारच्या असतात. उदा. आरोग्यविषयक, सामाजिक, आर्थिक व शैक्षणिक इ. त्यामध्ये सुद्धा त्यांचे आरोग्यविषयक समस्या तर भयानक असतात, त्यांच्याकडून जे काम करुन घेतले जाते मुळात ते त्यांचा क्षमतेपेक्षा खुपच अधिक असल्याने त्यांचा त्यांच्या स्वास्थ्यावर विपरीत परिणाम होत असतात. त्यामुळे ते निकामी होण्याची दाट शक्यता असते.त्या महिला मजुर जिथे राहतात ते प्रामुख्याने झोपडपट्टी क्षेत्र असल्याने तेथे दुर्गंधी, व्यसनाधिनता, अपुऱ्या सोयीसुविधा, यांचा भस्मासूर उभा असतो. त्यांचा सामाजिक प्रभावसुद्धा त्यांच्यावर पडतो त्यामुळे लहानपणीच व्यसनाधिनता, शिक्षणाचा अभाव इ. अडचणींना त्यांना सामोरे जावे लगते. जिथे त्या राहतात तेथेच आसपास दारुचे अड्डे असल्यामुळे सहाजिकच त्यांच्या घरात व्यसनी व्यक्तींचे व गुन्हेगारीचे प्रमाण् जास्तच असते. त्यातच मोठी अडचण ही कि, शासन स्तरावर ज्या योजना राबविल्या जातात त्या त्यांच्यापर्यंत पुरेशा पोहोचत नाहीत असे येथील जनते बरोबर चर्चा केल्यावर समजते. शासनाचे उपक्रम त्यांच्या आरोग्यविषयक अडचणी व सामाजिक

अडचणी सोडविण्यास पुरेशा नसतात. ह्या महिलांची सर्वात मोठी अडचण ही असते कि त्यांच्याकडून श्रम तर पुरुष मजुराप्रमाणेच करुन घेतले जातात, परंतु त्यांना जी मजुरी दिली जाते ती पुरुषापेक्षा निम्मीच असते ही त्यांची आर्थिक पिळवणुकच असते. पुरेसे अर्थविषयक धोरण नसल्यामुळे मेहनत करून त्यांना व त्यांच्या कुटुंबियांना पुरेशा सोयीसुविधा सुद्धा ते प्राप्त करु शकत नाहीत. ह्या महिला मजुरांच्या बाबतीत निश्चित धोरण नसल्यामुळे ते असंख्य समस्यांना तोंड देत असतात.

कीवर्ड: आरोग्य समस्या, बांधकाम महिला

अभ्यासाची उद्दीष्टे :

1. पुणे शहरातील बांधकाम क्षेत्रातील महिला मजुरांच्या सामाजिक समस्यांचा अभ्यास करणे.
2. कौटुंबिक पार्श्वभूमी आणि समस्यांचा अभ्यास करणे.

संशोधन पद्धत :

या संशोधनासाठी नोंदणी असलेले मजुर व त्यांचे नमुने घेतले आहेत व त्याचबरोबर विविध बांधकाम व्यावसायिकांकडे असलेल्या मुकादमाकडून त्यांच्याकडून असलेली नोंदणीकृत व अनोंदणीकृत महिला मजुरांची महिती संशोधनाच्या उद्देशाच्या अनुषंगाने घेतली आहे. या संशोधनासाठी आवश्यकता असल्यास राष्ट्रीय स्तरावरील, राज्य स्तरावरील, शहर स्तरावरील नमुने संकलित केले आहे. या क्षेत्रातील कामगारांशी या संशोधनापुर्वी चर्चा केली असता असे निदर्शनास येते की, या एकूण मजुरांत स्त्रीयांचे प्रमाण हे 3:1 असे आहे. या संशोधनासाठी प्रामुख्याने quota sampling चा वापर करण्यात आला आहे.

तथ्य संकलनाचे स्त्रोत/ तथ्य संकलनाची पद्धत :

या संशोधनासाठी प्रामुख्याने प्रश्नावलीचा वापर करण्यात आला आहे. काही महिला मजुरांची माहिती अधिकृतरित्या उपलब्ध असल्यामुळे वैयक्तिक मुलाखती साचेबध्द् प्रश्नावलीचा जास्तीत जास्त वापर केला आहे. याबरोबरच संशोधनासाठी आवश्यक असणारी माहिती मिळविण्यासाठी शासकीय अहवाल, विविध लेख, पुस्तकातील माहिती, मुलाखतींचा वापर केला आहे. या संशोधनासाठी सोपी सांख्यिकी पद्धती (simple statistical technique) केला आहे. या मध्ये प्रामुख्याने (mean, median, mode, ratio, etc.)चा समावेश आहे. ही मिळविलेली माहिती दर्शविण्यासाठी विविध पद्धतीचे तख्ते व आलेख (Diagrams & Charts) यांचा वापर करण्यात आला आहे.

संदर्भ साहित्याचा आढावा :

पुनुस्वामी बी (2016) : हा अभ्यास चेन्नई शहरातील बांधकाम कामगारांची सर्वसमावेशक लोकसंख्याशास्त्रीय, सामाजिक आणि आर्थिक पार्श्वभूमी देतो. यात शहरी बांधकाम कामगारांच्या त्यांच्या जीवनाशी संबंधित परिस्थिती आणि पर्यावरणाविषयीच्या समजुतींसंबंधीच्या बहुआयामी समस्यांचा समावेश आहे. असे दिसून आले आहे की मोठ्या प्रमाणात कामगारांना तुलनेने चांगले वेतन मिळत आहे. तामिळनाडू सरकारने कामगारांच्या राहणीमानात सुधारणा करण्यासाठी काही महत्त्वाच्या उपाययोजना केल्या असल्या तरी, बहुसंख्य प्रतिसादकर्त्यांना याची माहिती नव्हती. परिणामी, त्याचा थेट परिणाम त्यांच्या जीवनावर होतो. कामगार अत्यंत असंघटित होते कारण त्यांचा युनियनमध्ये कमी सहभाग दिसून येतो. त्यांना उपलब्ध कल्याणकारी उपायांची माहिती नसल्यामुळे ते सर्व प्रकारच्या दुःखांनी ग्रस्त आहेत आणि जीवनातील विविध धोक्यांमधून जातात. कामगारांच्या राहणीमानात आणि कामाच्या परिस्थितीत कामगारांची जागरूकता आणि कौशल्य महत्त्वपूर्ण भूमिका बजावते. रोजगाराची परिस्थिती, रोजगारक्षमता आणि नोकरीच्या संधी यांचा समाजातील त्यांच्या भूमिकेवर आणि स्थितीवर प्रत्यक्ष किंवा अप्रत्यक्षपणे परिणाम होतो.

प्रियांका (२०१२) : या अभ्यासाच्या संशोधन निष्कर्षांचे महत्त्व लिंग वेतन फरक नसल्याचा पुरावा प्रदान करण्यात आहे. अभ्यासात असे दिसून आले आहे की समान प्रकारच्या कामासाठी कोणतेही लिंग वेतन

फरक नाही. लैंगिक आणि इतर प्रकारच्या छळाची अनुपस्थिती ही इतर भागांनी शिकण्याची गरज आहे.देशाच्या काही बांधकामाच्या ठिकाणी मूलभूत सुविधांचा अभाव ही चिंतेची बाब आहे. त्यामुळे, बांधकामाच्या ठिकाणी पाणी, शौचालय आणि प्राथमिक आरोग्य सेवा यासारख्या मूलभूत सुविधा पुरविण्याबाबत अभ्यास सुचवतो. bafc आरोग्य सुविधा प्रदान करणे आणि त्यांना सामान्य आरोग्य समस्यांबद्दल जागरुक करणे ही बाब गांभीर्याने घेण्याची गरज आहे. मासिक पाळीशी संबंधित आरोग्य समस्यांबद्दल जागरूकता जास्त महत्त्वाची आहे. पॉलिसीमध्ये मुलांशी संबंधित मुद्द्याला प्राधान्य द्यावे लागेल

अकुशल कामगारांना नोकरीच्या संधी उपलब्ध करून देणारी मुख्य क्षेत्रे. Howev या क्षेत्रात काम करताना अपघात, आरोग्य धोके आणि तणावाचा धोका असतो. कामगार. लिंग आधारित हिंसाचार आणि शौचालय सुविधा पिण्याच्या पाण्यासारख्या योग्य सुविधा आणि पायाभूत सुविधांचा अभाव आणि या क्षेत्रात काम करणाऱ्या महिलांच्या सुरक्षेसाठी शेवटची परंतु किमान योग्य सुरक्षा नसल्यामुळे महिला कामगारांना जास्त धोका आहे.

या पार्श्वभूमीवर महिला बांधकाम कामगारांच्या कामाच्या स्थितीचे विश्लेषण करण्याचा प्रयत्न सध्याच्या अभ्यासात करण्यात आला आहे. कामाच्या ठिकाणी त्यांची आणि त्यांच्या मुलांची आरोग्य स्थिती आणि मूलभूत सुविधा-पिण्याच्या पाण्याची उपलब्धता पाहून हे केले जाते. स्वच्छता, प्राथमिक आरोग्य सेवा इ. हा अभ्यास गुजरात राज्यातील गांधीनगर शहरात करण्यात आला. यासाठी 100 बांधकाम महिला कामगारांच्या मुलाखती घेण्यात आल्या आणि विविध संबंधित माहिती संकलित करण्यात आली.

याच्या पूर्वार्धात, आम्ही गुजरातमधील विविध क्षेत्रातील महिला कामगारांच्या वितरणाचे मॅक्रो चित्र मिळविण्यासाठी २०११ च्या जनगणनेच्या डेटाचे विश्लेषण केले आहे. विश्लेषण प्रकरण -3 मध्ये सादर केले आहे. या विश्लेषणातून असे समोर आले आहे की, शेतमजूर म्हणून काम करणाऱ्या महिलांचा सर्वात मोठा वाटा आहे आणि त्यानंतर शेतकरी आहे. गुजरातमधील एकूण महिला कामगारांपैकी जवळपास 65% महिला कामगार शेती आणि संबंधित कामांमध्ये गुंतलेल्या आहेत. कृषी क्षेत्रात काम करणाऱ्या महिलांचे प्रमाण 'इतर' सामाजिक गटापेक्षा अनुसूचित जाती आणि जमातीसाठी जास्त असल्याचे आढळून आले. हे देखील लक्षात येते की कोमलचा वाटा, गुदद्वाराच्या नासेकरा शा वयमच्या पुरुषांमध्ये डिव्हिल्टुन जे हिंकरमध्ये काम करतो.

कुंभार दिलीप राजाराम (२०१२) : खाजगी बड्या बिल्डर्स आणि कंत्राटदारांच्या हातातून बांधकामाची सुटका करण्यासाठी प्रयत्न केले पाहिजेत.तांत्रिक-व्यावसायिक व्यवहार्यतेचा अवलंब केल्याने स्थिर मालमत्तेचा वापर होईल आणि व्यवसायात नफा वाढेल.वर्षभर चालणाऱ्या ऑपरेशन्स v ला वार्षिक रोजगार उपलब्ध करून देतील आणि त्यांची राहणीमान सुधारेल.परवानगी घेण्याची प्रक्रिया सोपी आणि स्वस्त असावी.घराचा लहान संभाव्य मालक वेळेत पूर्ण करू शकतोलवकरच त्याची घरबांधणीची प्रक्रिया सुरू होईल. या क्षेत्रातील घरबांधणी क्रियाकलापांची व्याप्ती लक्षात घेता, घर परवानगी विभागांची संख्या वाढवायला हवी. अभ्यास क्षेत्रातील बांधकाम उद्योगाचे स्वरूप खंडित आणि असंघटित. ते आयोजित केले पाहिजे आणि केंद्रीकृत केले पाहिजे.

लोकांची सामाजिक स्थिती सुधारली तर समाजाचा विकास होतो असे म्हणतात. या संदर्भात, अभ्यास क्षेत्रात नमुना बांधकाम कामगारांची सामाजिक स्थिती समाधानकारक आढळली नाही. नमुना कुशल, अकुशल आणि महिला गृहनिर्माण कामगारांची सामाजिक स्थिती सुधारण्यासाठी शिफारशी विशेषतः खालीलप्रमाणे केल्या आहेत. अभ्यास क्षेत्रातील साक्षरतेची टक्केवारी कमी असल्याचे आढळून आले. साक्षरतेची टक्केवारी सुधारण्यासाठी, विशेष लक्ष दिले पाहिजे. अभ्यास

क्षेत्रात प्रौढ शिक्षण मोहिमेची अंमलबजावणी आवश्यक आहे आणि मैदानावर सर्व सुविधांसह रात्रशाळा निर्माण केल्याने साक्षरता दर वाढेल/सुधारेल. बांधकाम कामगारांची राहणीमान अत्यंत हलाखीची आहे.

बालकामगारांचा पुरावा हा अभ्यास क्षेत्रातील बांधकाम क्षेत्रातील सामान्य घटना होत्या. ओबीसी, एससी आणि एसटी जातींमध्ये बालकामगार आढळले. त्यामुळे बालकामगार प्रतिबंध व नियमन कायद्याची अंमलबजावणी काटेकोरपणे करावी.त्यांच्या निवासी भागात अत्यावश्यक आणि पुरेशी आरोग्य सेवा पुरविण्यात यावी. आरोग्य सेवेचा पुरवठा घरमालकांनी किंवा इमारत कंत्राटदारांनी किंवा कामगार कंत्राटदारांनी केला पाहिजे. विन सक्रिय करा .कोणतीही सामाजिक सुरक्षा योजना मालकाकडून किंवा कॉन्ट्रॅक्टर्सने सेटिंग्ज राबवली नाहीत, त्यामुळे त्याची अंमलबजावणी करणे काळाची गरज आहे. सामाजिक सुरक्षा योजना सरकारद्वारे प्रदान केल्या जाऊ शकतात आणि देऊ शकतात.

महिला कामगारांशी संबंधित शिफारसी :

घरबांधणीच्या कामात गुंतलेल्या महिला कामगारांची संख्या लक्षणीय आहे, परंतु त्या केवळ कुली प्रकारच्या अकुशल कामात गुंतलेल्या आहेत. त्यांना कुशल नोकरीत गुंतवून ठेवण्यासाठी प्रयत्न केले पाहिजेत.समान प्रकारच्या अकुशल कामासाठी महिला कामगारांना त्यांच्या पुरुष सहकाऱ्यांच्या तुलनेत कमी वेतन मिळत आहे. त्यामुळे 'समान कामासाठी समान वेतन' हे तत्त्व पाळले पाहिजे.महिला कर्मचारी तिहेरी कर्तव्ये पार पाडत आहेत. एक गृहिणी म्हणून, आई म्हणून आणि एक कामगार म्हणून. तरीही त्यांना त्यांच्या कुटुंबात आणि समाजात मानाचा दर्जा मिळत नाही. हे दयनीय चित्र बचत गटाने बदलायला हवे.बहुतेक नोकरदार महिलांना तंबाखू चघळणे, दारू पिणे इत्यादी वाईट सवयी लागल्या होत्या, त्या त्यांच्या आरोग्यासाठी हानिकारक आहेत. त्यामुळे त्यांना अशा वाईट सवयीपासून परावृत्त करण्यासाठी सामाजिक उपक्रम आणि बचत गट इत्यादींमधून पावले उचलली पाहिजेत.जास्तीत जास्त महिला कामगार आपली बचत त्यांच्या कंत्राटदारांकडे ठेवतात, त्यांना त्यांची अल्प बचत स्थानिक महिला बचत गट किंवा जवळच्या बँकांकडे ठेवण्याबाबत जागरुक केले पाहिजे. बँका, कायदा बचत गट आणि सहकारी संस्था यांच्या प्रतिनिधींनी जनजागृती केली पाहिजे.

पुराणी रूत्विक (२०२१): या अभ्यासातून असे दिसून आले आहे की बहुतेक कामगारांना वन्य वन्य आरोग्याशी संबंधित पेड्सचा त्रास होतो. कामाशी संबंधित विकार मोठ्या प्रमाणात आढळतात, ज्यामुळे या शारीरिक आरोग्यामध्ये लक्षणीय बिघाड होतो. , आणि alder sype कफच्या कालावधीत श्वसन लक्षणांचे प्रमाण 54.9% आढळले, त्यानंतर सोफ (49.7%), घरघर (40.7%), मणीचा मुलगा (392) ks ऑफ चोले (83%) आढळला. ही लक्षणे फाइनरी फंक्शन चाचण्यांशी निगडीत आहेत, जे बांधकाम कामात फुफ्फुसाचे कार्य बिघडल्याचे सूचित करतात. 454 द्वारे लिखित वेदनांच्या बाउट्समध्ये वरच्या टोकाची कमतरता 23% पर्यंत कमी आहे आणि खालच्या टोकाला 169% ने कमी होऊ शकते. अशा कामगारांवरील कोणत्याही जोखमीची आणि/किंवा आजाराची लक्षणे लवकर ओळखणे आवश्यक आहे जेणेकरून घटना कमी करण्यासाठी आणि बांधकाम कामांमुळे कामाशी संबंधित आजारांचे कायमस्वरूपी आरोग्य नुकसान टाळण्यासाठी सतत हस्तक्षेप कृती केली जावी. या पूर्वावलोकनामध्ये, एर्गोनॉमिस्ट आणि एर्गोनॉमिक्स संशोधन यांनी बांधकाम क्षेत्रातील एर्गोनॉमिक्सचे महत्त्व वाढवले पाहिजे कारण त्यांना बांधकाम क्रियाकलापांदरम्यान कामगारांच्या शरीर प्रणालीला बिघडवणाऱ्या धोक्यांपासून कर्मचाऱ्यांचे संरक्षण करणे आवश्यक आहे. जेव्हा अभियांत्रिकी, कामाचा सराव आणि प्रशासकीय नियंत्रणे व्यवहार्य नसतात किंवा पुरेसे संरक्षण देत नाहीत, तेव्हा नियोक्त्यांनी त्यांच्या कर्मचाऱ्यांना वैयक्तिक

संरक्षणात्मक उपकरणे (PPE) प्रदान करणे आणि त्याचा वापर सुनिश्चित करणे आवश्यक आहे.

बेलिंडा आर (२०१८) : हे लक्षात घेतले पाहिजे की असंघटित क्षेत्रातील स्थलांतरित महिला बांधकाम कामगार हे केवळ ग्रामीण भागाकडे दुर्लक्ष करण्याचे आणि ग्रामीण भागातील गरीब लोकांच्या दडपशाहीचे लक्षण आहेत. खेड्यातील त्यांच्या शक्तीहीनतेमुळे त्यांना स्थलांतर करून शहरी असंघटित क्षेत्रात सामील होण्यास भाग पाडले आहे. तेथे त्यांची हालचाल आणि संघटना नसल्यामुळे ते आणखी शक्तीहीन झाले आहेत. त्यामुळे सरकार आंतरराज्यीय स्थलांतरित मजुरांसाठी भत्ते, मुलांसाठी क्रेच आणि सक्तीचे शिक्षण, बंधपत्रित मजूर निर्मूलन इत्यादींबाबत कायदे करत असले तरी, शोषणाच्या बळींना वाटाघाटी करण्याची शक्ती आणि संघटना नसते. परिणामी, ते स्वत: त्यांच्या अधिकारांची अंमलबजावणी करू शकत नाहीत आणि सरकार आणि इतर अंमलबजावणी संस्था निहित स्वार्थाने काम करतात. औद्योगिक असंघटित कामगार बाजारपेठेतील स्थलांतरित मजुरांच्या परिस्थितीची गंभीरता लक्षात घेता, केवळ औपचारिक, नाममात्र कायदेशीर संरक्षण नसून, असुरक्षितता कमी करण्यासाठी धोरण निर्मात्यांनी सक्रिय भूमिका बजावणे आवश्यक आहे.

या अभ्यासातील धक्कादायक निष्कर्ष म्हणजे स्थलांतरित महिला बांधकाम कामगारांमधील लैंगिक छळाचे प्रमाण. असंघटित क्षेत्रातील लैंगिक छळाचे प्रमाण उघड करणारे यापूर्वीचे अभ्यास आणि अहवाल आले आहेत, तरीही फारसे काही झालेले नाही. विशाखा मार्गदर्शक तत्त्वे देखील ही समस्या कमी करण्यासाठी फारसे योगदान देत नाहीत. लैंगिक छळाच्या मुद्द्याला सर्व स्तरातून समज, आकलन, संवेदनशीलता आणि वचनबद्धता आवश्यक आहे परंतु मुख्यतः वरिष्ठ व्यवस्थापकीय अधिकाऱ्यांकडून त्यांच्या कामाच्या ठिकाणी छळवणूक आणि लैंगिक अनुकूल, भेदभाव मुक्त कार्यस्थळ. गैरवर्तनाचे चक्र खंडित करण्यासाठी शिक्षक, आरोग्य-सेवा अधिकारी, आमदार, न्यायव्यवस्था आणि प्रसारमाध्यमांसह सरकारी आणि गैर-सरकारी कलाकार यांच्यात एकत्रित सहकार्य आणि कृती आवश्यक आहे. स्थलांतरित स्थिती, स्थानिक भाषेचे ज्ञान नसणे आणि कमी संघटन यामुळे अधिक असुरक्षित बनलेल्या स्थलांतरित महिला बांधकाम कामगारांना सामाजिक कार्यकर्त्यांनी हस्तक्षेप करून त्यांना मदत करण्याची वेळ आली आहे.

यातील सर्वात महत्त्वाचे म्हणजे शिक्षण आणि कौशल्य विकासाच्या संधी. महिलांमध्ये त्यांच्या कायदेशीर हक्क आणि कर्तव्यांबद्दल जागरुकता निर्माण करणे आणि त्यांचे कौशल्य स्तर सुधारण्यासाठी त्यांना पुरेशा संधी उपलब्ध करून देणे हा उपाय आहे. किमान वेतन कायदा, 1948 आणि समान मोबदला कायदा, 1976 च्या प्रभावी अंमलबजावणीवर भर देण्यात यावा, या कायद्यांची योग्य अंमलबजावणी केल्यास महिला कामगारांसाठी सक्षम वातावरण निर्माण होईल. या संरक्षणात्मक उपायांव्यतिरिक्त, महिलांमध्ये शिक्षण, कौशल्य विकास आणि प्रशिक्षण यांना प्रोत्साहन देणाऱ्या धोरणांनाही प्राधान्य देणे आवश्यक आहे. सामाजिक कार्यकर्त्यांनी धोरणकर्ते आणि समुदायांसोबत वकिली उपक्रम राबवणे, व्यापक समुदाय आधारित प्रतिबंध आणि हस्तक्षेप कार्यक्रम आखणे आणि या स्थलांतरित महिला बांधकाम कामगारांसोबत वैयक्तिक गट आणि समुदाय स्तरावर काम करणे आवश्यक आहे जेणेकरून त्यांना प्रतिकूल परिस्थितीतही सामना करण्यास आणि टिकून राहण्यास मदत होईल. स्थलांतरित महिला बांधकाम कामगारांच्या सक्षमीकरणासाठी काम करण्याची मोठी जबाबदारी आहे .

मुथुकुमारन आर (२०२१) : महिला कामगारांना घर आणि कामाची दुहेरी जबाबदारी असते आणि असंघटित क्षेत्रातील महिलांच्या दयनीय परिस्थितीसाठी लिंगभेद, दारिद्र्य, मूलभूत ज्ञानाचा अभाव, सरकारचे अज्ञान, अपुरे कायदे यामुळे ते टाळण्यासाठी बिघडत चाललेली विविध कारणे आहेत. बांधकाम उद्योगातील महिलांच्या प्रगतीसाठी सरकारने नोकरदार महिलांच्या

माहितीच्या नोंदी तयार करणे आवश्यक आहे. या सांख्यिकी नोंदीच्या आधारे सरकारला महिलांना त्यांच्या हक्कांसाठी शिक्षित करण्यासाठी कार्यक्रम तयार करावे लागतील. केंद्र आणि राज्य सरकारने महिलांना आधार देण्यासाठी अनेक योजना सुरू केल्या होत्या, परंतु त्या हार घालण्यासाठी पुरेशा नाहीत.महिला कामगारांच्या समस्या. महिला कामगारांच्या सक्षमीकरणासाठी या योजना आणि कायदे प्रभावीपणे कार्यान्वित करण्याची गरज आहे. राज्य आणि केंद्र सरकार कामगारांच्या कल्याणासाठी अनेक धोरणे आखू शकतात. त्यामुळे हा अभ्यास बांधकाम उद्योगातील महिला कामगारांच्या सामाजिक-आर्थिक परिस्थितीमध्ये वाढ सुचवण्यास मदत करतो.

नाडकर्णी एस.ए (२०१७) : या अभ्यासातून पुणे शहरातील बांधकाम उद्योगातील SCICS ची काही महत्त्वाची वैशिष्टे मिळतात. शहरातील बांधकाम उद्योगाचे एक महत्त्वाचे वैशिष्ट्य म्हणजे ते स्थलांतरित कामगारांवर मजूर पुरवठ्यासाठी अवलंबून आहे. बहुतांश स्थलांतरित महाराष्ट्र आंध्र प्रदेश आणि कर्नाटकातून आले आहेत. तथापि, कॅली द वूस कामगारांची मुलाखत घेण्यात आली. स्थलांतरावर परिणाम करणारे प्रमुख घटक पुश घटक आणि इतर घटक होते. त्यांच्या संबंधित पतींनी एल्ग्रेस केल्यामुळे भोवरे स्थलांतरित झाले आहेत. काही कामगारांनी स्थलांतर केले आहे कारण स्थानिक ठिकाणी परिस्थिती इतकी वाईट होती की ते नोकरीच्या शोधात मूळ ठिकाणाहून बाहेर पडतात. अर्थातच इतर घटकांमागे (जसे workace algrated bec R नवरा sigratad) पुश घटक देखील महत्त्वपूर्ण भूमिका बजावतात पतींना देखील नोकरीच्या मार्चमध्ये बाहेर ढकलले गेले. www phys वर त्यांच्या लहान जमिनीवर अवलंबून असलेल्या शेतमजुरांवर काम करणारे कामगार कामगार या उद्योगाला मजूर म्हणून जोडत होते कारण ते इतर पूर्ण पाण्यात काम करू शकतात. त्यांना सुरक्षित वाटते आणि त्यांच्या कुटुंबालाही या उद्योगात काम करण्यास हरकत नाही

1 या उद्योगाचे वैशिष्टय़ असे आहे की या उद्योगातील मजूर विक्रेत्याच्या फायद्यासाठी प्रयत्न करतात, परंतु एक बेरर मार्केट आहे. श्रमशक्तीचे खरेदीदार विक्रेत्यांना (कामगारांना) टॅम ठरवू शकतात. वैशिष्ट्य म्हणजे कामगार संघटनांची संपूर्ण अनुपस्थिती. या उद्योगातील कामगार विखुरलेले आहेत. त्याचप्रमाणे नोकरीही तात्पुरती असते. त्यामुळे सामूहिक सौदेबाजी शक्य नाही. वेतन निश्चित करणे अद्याप मालकाच्या हातात आहे आणि कामगार मालकाने निश्चित केलेले वेतन स्वीकारतात. मालकांना असे वाटते की ते "बाजार" मजुरी दरापेक्षा कमी देत नाहीत. तथापि, असे आढळून आले की "बाजार वेतन हा शब्द बाजारातील मागणी आणि पुरवठा शक्तींद्वारे निश्चित केलेल्या मजुरीच्या दराशी संबंधित नाही; परंतु नियोक्त्यांद्वारे निश्चित केलेल्या वेतन दराशी संबंधित आहे. सर्वेक्षणात असेही आढळून आले की बाजारातील वेतन दर किमान वेतनाच्या दरापेक्षा खूपच कमी.शासनाने ठरवून दिलेले किमान वेतनही कामगारांना दिले गेले नाही.कायद्याचा घोर अनादर झाला.

महिला कामगारांना विविध कायद्यांद्वारे संरक्षण दिले जाते. महत्त्वाचा कायदा म्हणजे मातृत्व लाभ कायदा, 1961. एक कायदा असे सांगतो की गर्भधारणा, बंदिवास या संदर्भात, मातृत्व लाभ वैद्यकीय सेवा असेल. त्यात (अ) प्रसूतीपूर्व, बंदिवास आणि प्रसवोत्तर काळजी एकतर वैद्यकीय व्यवसायी किंवा पात्र सुईणींद्वारे आणि (ब) जेव्हा आवश्यक असेल तेव्हा हॉस्पिटलायझेशन यांचा समावेश असेल. नियोक्ता प्रसूतीच्या अगोदरच्या आणि त्यानंतरच्या सहा महिन्यांसाठी सरासरी दैनंदिन वेतनाच्या दराने मातृत्व लाभ देण्यास जबाबदार असेल. या उद्योगात महिला दिसून आल्या 8व्या महिन्यापर्यंत किंवा 9व्या महिन्यापर्यंत किंवा प्रसूतीच्या तारखेपर्यंत काम करतात आणि ते 7/8 दिवस ते 1 महिन्यानंतर कामावर परत

येतात. या महिलांना कायद्याचे संरक्षण मिळत नाही. त्याचप्रमाणे, कायदा असेही नमूद करतो की जर महिला कर्मचाऱ्याने नियोक्त्यासाठी 160 दिवसांपेक्षा जास्त काळ काम केले असेल आणि तिच्या प्रसूतीचा दिवस आणि त्या दिवसानंतर लगेच सहा आठवडे असतील तर तिला संरक्षण मिळण्यास पात्र आहे. या उद्योगात, कामाच्या तात्पुरत्या स्वरूपामुळे, नियोक्ता नेहमी असे म्हणण्याच्या स्थितीत असतो की कामगाराने 160 दिवस काम केले नाही आणि त्यामुळे तो असे फायदे सोयीस्करपणे टाळू शकतो.

या संदर्भात राष्ट्रीय स्वयंरोजगार महिला आणि अनौपचारिक क्षेत्रातील महिला आयोगाच्या शिफारसी लक्षात घेण्यासारख्या आहेत. आयोगाने म्हटले आहे की, "बांधकाम क्षेत्रासाठी धोरणात्मक विचार जवळजवळ केवळ गैर-कामगार समस्यांशी संबंधित आहेत. उदाहरणार्थ, इमारत बांधकामासाठी योग्य तंत्रज्ञान, मनुष्यबळ नियोजन पैलू यासारख्या समस्यांवर अनेक अभ्यास केले गेले आहेत. , कुशल मनुष्यबळाची संभाव्य कमतरता किंवा बांधकाम क्रियाकलापांच्या वित्तपुरवठा आणि संस्थेशी संबंधित विचार. हे अभ्यास पूर्णपणे आर्थिक पैलू किंवा खर्च परिणामकारकता यावर जोर देतात. हे निःसंशय महत्त्वाचे मुद्दे आहेत परंतु येथे आमच्या केंद्रीय चिंतेचे काय होते ते ते पूर्णपणे बायपास करतात 1.e. कमी पगार, शोषित, अकुशल कामगार. कारण अकुशल कामगार हे शून्य संधी खर्चावर उपलब्ध आहे, असे दिसते की हेड-लोड वाहून नेणे किंवा स्टोन क्रशिंगचे काम देऊ शकेल अशा तंत्रज्ञानाच्या विकासावर चर्चा करण्यासाठी कोणतेही प्रयत्न केले गेले नाहीत. साधारणपणे आमच्या 100 टक्के महिला बांधकाम कामगार आहेत.

शिवकुमार सी (२०२०) : भारतातील बांधकाम सुरक्षा हा भारतातील एक उदयोन्मुख टप्पा आहे आणि 1996 पासून नियम आणि नियम लागू केल्यानंतर आणि त्याची अंमलबजावणी झाल्यानंतर बांधकाम साइट्समधील प्रगती वाढत चालली आहे. बांधकाम उद्योग सुरक्षितता सुनिश्चित करण्यासाठी बांधकाम सुरक्षा आणि अग्नि धोक्याचे मूल्यांकन स्वीकारण्याच्या दिशेने वाटचाल करत आहे. आणि निरोगी कार्यस्थळे. बहुभाषिक पार्श्वभूमी असलेल्या स्थलांतरित मजुरांना बांधकाम सुरक्षा आणि आगीच्या जोखमीचे मूल्यांकन सुनिश्चित करण्यासाठी सर्वसमावेशक आणि सर्वांगीण प्रणाली विकसित करणे आवश्यक आहे. पुढे, निवासी आणि व्यावसायिक बांधकाम साइट्समधील बांधकाम सुरक्षितता आणि अग्नि जोखीम मूल्यांकनासाठी नियामक आणि बाजार आवश्यकता.

भारत सरकारच्या श्रम व रोजगार मंत्रालयाचे वेळोवेळी विविध प्रकारचे कायदे महिला मजुरांच्या संदर्भात अमलात आणले आहेत. Register General And Censor Commissioner Of India च्या अधिकृत माहितीनुसार Census 2011 नुसार भारतामध्ये एकूण महिला मजुर हे 149.8 मिलीयन आहेत. त्यात ग्रामीण भागात 121.8 मिलीयन व शहरात 28.0 मिलीयन आहेत. Director General Of Employment And Training (DGE&T) या शासकीय संस्थेच्या मते 31 मार्च 2011 पर्यंत एकूण 59.54 लाख महिला कामगार या संघटीत क्षेत्रात (खाजगी व सरकारी) क्षेत्रात आणि जवळ जवळ 32.14 लाख या असंघटीत, सामाजिक व वैयक्तिक सेवा क्षेत्रात काम करीत आहेत.

भारत सरकारने महिला कामगारांच्या हितार्थ त्यांची सुरक्षा व आरोग्य संदर्भात SEC.22(2) of the Factories Act 1948 मध्ये उपाय योजना केल्या आहेत. त्यांच्या कामाच्या वेळेसंबंधित SEC.66(1) नुसार कडक निर्बंध घातले आहेत. बीडी कामगारांसाठी SEC.25 Of Bidi and Sigar Workers Act 1966 तर खाण कामगारासांठी Sec.46 (1)(b) of The Min Act 1952 बनवला आहे. महिला कामगारांना त्यांच्या गरोदरपणाच्या सांयी सुविधासांठी The Maternity Act 1961 केला आहे. बांधकाम मजुरांसाठी महाराष्ट्र सरकारने The Building & Other

Construction Act 1996 बनवला आहे. परंतु त्या कायद्याप्रमाणे जमीनीवर उपाय योजना व अंमलबजावणी झालेली दिसत नाही. या कायद्यान्वये कामगार आयुक्त, असंघटीत क्षेत्रांसाठी Development Commissioner, औद्योगिक सुरक्षा व आरोग्य महासंचालक, कामगार संशोधन संस्था, कामगार कल्याण मंडळची तरतूद आहे.

या कायद्याव्दारे सरकार या असंघटीत कामगारांसाठी योजना बनविणे, महासंचालक/आयुक्तांवर नियंत्रण ठेवणे, त्यांना सेवा अधिकार पुरविणे/ असंघटीत कामगारांसाठी नविन सुधारणा व उपक्रम घडवून राबविणे अशी कामे करण्यासाठी सांगण्यात येते. असंघटीत कामगारांसाठी Development Commissioner च्या सुरक्षा समितीने 1000 बांधकाम मजुरांसाठी 1 सुरक्षा अधिकारी, 2000 बांधकाम मजुरांसाठी 2 सुरक्षा अधिकारी, 5000 बांधकाम मजुरांसाठी 3 सुरक्षा अधिकारी, 10000 बांधकाम मजुरांपेक्षा जास्त 4 सुरक्षा अधिकारी नेमले आहेत. तसेच बांधकामाच्या ठिकाणी अपघात झाल्यास बांधकाम व्यावसायिकाला नोटीस देणे बंधनकारक आहे.

Indian Labour, Prospects & Problems या पुस्तकाचा अभ्यास केला असता या पुस्तकात National Labour Commission ने जी माहीती विस्तृतपणे दिली आहे ती प्रामुख्याने संघटीत क्षेत्राशी संबंधीत आहे. यात प्रामुख्याने औद्योगिक कामगार, त्यांचे पगार, भत्ते, हक्क, अडचणी, अंमलबजावणी यांची प्रामुख्याने चर्चा केली आहे. या पुस्तकात 1961 च्या गणनेनुसार संघटीत व असंघटीत क्षेत्रात काम करीत असलेल्या महिलांची संख्या व प्रमाण देण्यात आले आहे, त्यात प्रामुख्याने

1. Cultivator 33,103,198 55.73 %
2. Agricultural Labour 14,170,831 23.86 %
3. Construction 242,619 0.41 %
4. Household Industry 4,665,437 7.85 %

अशी संघटीत क्षेत्रातील महिलांची माहिती उपलब्ध केली आहे.

Labour problems & social welfare या पुस्तकात महिला कामगारांविषयी व त्यांच्या अडचणीबाबत चर्चा केली आहे. यामध्ये 1957 साली कारखान्यांनी सादर केलेल्या माहितीनुसार 3,00,152 महिला कामगार होत्या. त्यानंतर 1964 नुसार 4,08,524 ची वेगवेगळया पदार्थांच्या व सेवा देणाऱ्या कारखान्यानुसार विभागणी केली आहे. परंतु यात कोठेही बांधकाम क्षेत्रातील महिला मजुरांचा तपशील दिलेला नाही. या पुस्तकात संघटीत

महिला कामगारांना मिळणाऱ्या कायदेशीर फायदे व नियम यांचा उल्लेख केला आहे. Labour Problems in India या पुस्तकात महिला कामगारांची 1901 पासून आकडेवारी विस्तृतपणे घेण्यात आली आहे. यात महिला कामगारांची संख्या कशी वाढत गेली यांची माहिती देण्यात आली आहे. उदा. 1901 – 33.5 %, 1911 – 34.5 %, 1921 – 34 %, 1931 – 31 %, 1951 – 29 %, 1961 – 31.5 % या पुस्तकात चहाच्या मळयातील व कारखान्यातील महिला मजुरांच्या नकाशावर माहिती देण्यात आलेली आहे. खाणीत काम करणाऱ्या महिलांची सुद्धा नकाशावर माहिती देण्यात आलेली आहे परंतु या पुस्तकात कोठेही बांधकाम क्षेत्रातील महिला मजुरांची कसलीही माहिती देण्यात आली नाही.

माहितीचे विश्लेषण :

- बांधकाम महिला मजुरांमध्ये राज्याच्या व राज्याबाहेरून मजुर आलेले असतात असे निदर्शनास आल्याने त्याची सत्यता पडताळण्यासाठी पुढील प्रश्नांची मदत घेवून पुढीलप्रमाणे अहवाल तयार केला.

	पाटील इस्टेट	कुसाळकर पुतळा	कामगार पुतळा	पांडव नगर	गोलंदाज चौक	जुनी वडारवाडी	एकूण

	वसाहत	चौक	वसाहत	वसाहत	वसाहत	वसाहत	
स्थानिक	6	2	3	6	2	0	19
परप्रांतीय	0	13	4	12	19	21	69
विस्थापीत	19	10	18	7	4	4	62
एकूण	25	25	25	25	25	25	150

वरिल माहितीचा अभ्यास केला असता असे आढळले कि, बांधकाम मजुर महिला मजुरांची मुळ गावाची पाहणी केली असता असे समजले कि, 41 % बांधकाम मजुर महिला या 1972 च्या दुष्काळावेळी विस्थापित होवून आल्या आहेत. तर 46 % बांधकाम मजुर महिला या परराज्यातून रोजगारासाठी येथे आल्या आहेत. व 13 % बांधकाम मजुर महिला या मुळच्या याच जिल्ह्यातील आहेत.

- बांधकाम महिला मजुरांमध्ये शिक्षणचे प्रमाण अत्यल्प असते त्यामुळे त्यांना हा रोजगार करावा लागतो त्याची सत्यता पडताळणी केली असता पुढील माहीती मिळाली.

	पाटील इस्टेट वसाहत	कुसाळकर पुतळा चौक	कामगार पुतळा वसाहत	पांडव नगर वसाहत	गोलंदाज चौक वसाहत	जुनी वडारवाडी वसाहत	एकूण
हो	15	7	12	16	14	14	78
नाही	10	18	13	9	11	11	72
	25	25	25	25	25	25	150

या बांधकाम मजुर महिलांशी वैयक्तिक चर्चा केली असता असे आढळले कि, 52% बांधकाम महिला मजुर या साक्षर आहेत तर 48% बांधकाम महिला मजुर या निरक्षर आहेत.

- बांधकाम महिला मजुरांचे लग्न कमी वयामध्ये झालेली असल्याने त्यांना शारीरिक व्याधीचे प्रमाण जास्त असते याची पडताळणी केली असता खालील माहिती मिळाली.

	पाटील इस्टेट वसाहत	कुसाळकर पुतळा चौक	कामगार पुतळा वसाहत	पांडव नगर वसाहत	गोलंदाज चौक वसाहत	जुनी वडारवाडी वसाहत	एकूण
हो	1	0	4	0	1	3	9
नाही	24	25	21	25	24	22	141
	25	25	25	25	25	25	150

या बांधकाम मजुर महिलांशी प्रत्यक्ष बोलले असता त्यांनी सांगितले कि, 94% महिलांना गंभीर आजार नाही. या महीलांमध्ये व्यसनाचे प्रमाण अत्यल्प व कष्टाचं प्रमाण जास्त असल्यामुळे त्यांना B.P. – शुगर वा तत्सम आजार नाही. पण तंबाखु व मिस्रीमुळे 6% बांधकाम मजुर महिला या गंभीर आजारी आहे.

- बांधकाम महिला मजुरांच्या राहण्याचा परिसर अस्वच्छ व कोणत्याही सोयी सुविधा नसलेला असतो याची पडताळणी केली असता खालील माहिती मिळाली.

	पाटील इस्टेट	कुसाळकर पुतळा चौक	कामगार पुतळा	पांडव नगर वसाहत	गोलंदाज चौक	जुनी वडारवाडी	एकूण

	वसाहत		वसाहत		वसाहत	वसाहत	
स्वच्छ पाणी	25	25	25	25	25	25	150
स्वच्छतागृह	25	25	25	25	25	25	150
शौचालय	25	25	25	25	25	25	150
सांडपाणी व्यवस्था	25	25	25	25	25	25	150
दवाखाना	25	25	25	25	25	25	150
शाळा	25	25	25	25	25	25	150
वाहनतळ	0	0	0	0	0	0	0
	150	150	150	150	150	150	900

या बांधकाम मजुर महिलांच्या वस्तीत जावून पाहणी केली असता तेथे पिण्याचे 100% पाणी स्वच्छ आढळले, सार्वजनिक स्वच्छतागृह, शौचालय, सांडपाणी व्यवस्था, घराजवळ दवाखाना, शाळा इत्यादी सोयी सरकारने केल्या आहेत. परंतु, कोठेही वाहनतळ उपलब्ध असल्याचे दिसले नाही.

- बांधकाम महिला मजुर अशिक्षीत असतानासुद्धा नियमित मतदान करीत असतात याची पडताळणी केली असता खालील माहिती मिळाली.

	पाटील इस्टेट वसाहत	कुसाळकर पुतळा चौक	कामगार पुतळा वसाहत	पांडव नगर वसाहत	गोलंदाज चौक वसाहत	जुनी वडारवाडी वसाहत	एकूण
हो	25	15	25	25	25	25	140
नाही	0	10	0	0	0	0	10
	25	25	25	25	25	25	150

या बांधकाम मजुर महीलांमध्ये शिक्षणाचे प्रमाण जरी अत्यल्प असले तरी 93% बांधकाम मजुर महिला ह्या राजकीय व सामाजिक दृष्टया जागरूक असल्याचे आढळले. 93% महीलांनी मतदार यादीत नोंद केली असून दरवेळी मतदान सुद्धा करीत असतात.

- बांधकाम महिला मजुर अशिक्षीत असल्याने त्यांना कौटुंबिक समस्या खूप असतात त्यांना मदतीची आवश्यकता असते याची पडताळणी केली असता खालील माहिती मिळाली.

	पाटील इस्टेट वसाहत	कुसाळकर पुतळा चौक	कामगार पुतळा वसाहत	पांडव नगर वसाहत	गोलंदाज चौक वसाहत	जुनी वडारवाडी वसाहत	एकूण
हो	7	9	7	3	1	8	35
नाही	18	16	18	22	24	17	115
	25	25	25	25	25	25	150

या बांधकाम मजुर महीलांमध्ये कौटुंबिक समस्यांचे प्रमाण पाहीले असता 76% महिलांना कौटुंबिक समस्या निवारणासाठी मदत हवी आहे कारण यांच्यामध्ये शिक्षणाचे प्रमाण कमी आहे. तर 23% महिलांना या समस्या निवारणासाठी मदत नको आहे.

- बांधकाम महिला मजुर अशिक्षीत असल्याने त्यांना वाचन व लिहीण्याची अडचण असते याची पडताळणी केली असता खालील माहिती मिळाली.

	पाटील इस्टेट	कुसाळकर पुतळा चौक	कामगार पुतळा	पांडव नगर	गोलंदाज चौक	जुनी वडारवाडी	एकूण

	वसाहत		वसाहत	वसाहत	वसाहत	वसाहत	
बोलता येते	8	19	15	9	11	12	74
लिहीता वाचता येते	17	6	10	16	14	13	76
	25	25	25	25	25	25	150

या बांधकाम मजुर महिलांच्या वस्तीत जावून त्यांच्याशी प्रत्यक्ष् बोलले असता 49% महिलांना फक्त बोलता येते. पण 51% महिलांना बोलताही येते त्यासोबत लिहीता वाचताही येते. पूर्वी लिहीण्या-वाचण्याचे प्रमाण अत्यल्प होते. परंतू आता प्रमाण वाढत आहे.

- बांधकाम महिला मजुर अशिक्षीत असल्याने त्यांना कामगार नोंदणी संदर्भात माहिती नसते याची सत्यता पडताळणी केली असता पुढील माहीती मिळाली.

	पाटील इस्टेट वसाहत	कुसाळकर पुतळा चौक	कामगार पुतळा वसाहत	पांडव नगर वसाहत	गोलंदाज चौक वसाहत	जुनी वडारवाडी वसाहत
हो	0	0	4	0	1	0
नाही	25	25	21	25	24	25

या बांधकाम मजुर महिलांशी संपर्क केला असता फक्त 3% महिलांना कामगार नोंदणी संदर्भात माहीती असल्याचे आढळले. 97% महिलांना यासंदर्भात कोणतीही माहीती नसल्याचे आढळले.

- कामावर एखादी दुर्घटना झाल्यानंतर बांधकाम महिला मजुरांना मुळगावी पाठवितात का याची सत्यता पडताळणी केली असता पुढील माहीती मिळाली.

	पाटील इस्टेट वसाहत	कुसाळकर पुतळा चौक	कामगार पुतळा वसाहत	पांडव नगर वसाहत	गोलंदाज चौक वसाहत	जुनी वडारवाडी वसाहत	एकूण
हो	16	1	14	25	19	16	91
नाही	9	24	11	0	6	9	59
	25	25	25	25	25	25	150

जर या बांधकाम मजुर महिलांना कामावर काही दुर्घटना झाली तर त्यांची कोठेच नोंद नसते त्यामुळे सरकारी योजनांचा उपयोग होत नाही. त्यामुळे 61% महिलांना त्यांचे मुकादम, मालक गावी पाठवून देतात तर 39% महिलांना गावी पाठविले जाते.

- बांधकाम महिला मजुरांच्या कामाच्या ठिकाणी पुरुषवर्गाकडून त्रास होतो का याची पडताळणी केली असता पुढील माहीती मिळाली.

	पाटील इस्टेट वसाहत	कुसाळकर पुतळा चौक	कामगार पुतळा वसाहत	पांडव नगर वसाहत	गोलंदाज चौक वसाहत	जुनी वडारवाडी वसाहत	एकूण
हो	4	2	12	4	11	4	37
नाही	21	23	13	21	14	21	113

	25	25	25	25	25	25	150

पुरुषवर्गाकडून होणाऱ्या त्रासाबद्दल विचारले असता असे निर्दशनास आले कि, 73 % बांधकाम मजुर महिलांना कोणताही त्रास नव्हता. पण 27 % बांधकाम मजुर महीलांनी पुरुषांकडून त्रास होत असल्याचे सांगितले.

निष्कर्ष :

असे निदर्शनास येते कि, दुसऱ्या राज्यात व राज्यातील दुसऱ्या भागात रोजगाराची व पाण्याची सोय केली गेली तर हे विस्थापित होण्याचे प्रमाण खुप कमी होवू शकते. जरी या महिलांचे उत्पन्न अल्प असले तरी त्यांच्या घरात त्यांचे सर्व नातेवाईक वास्तव्य करतात त्यामुळे त्यांच्या गरजा भागु शकत नाही, व घरे लहान असल्यामुळे जीवनमान उंचावत नाही, सरकारने या महिलांसाठी शहराच्या जवळ वेगळया वसाहती निर्माण केल्या पाहिजेत. सरकारने जर गांभीर्याने या महिलांसाठी योजना राबविल्या तर यांचे शिक्षणाचे प्रमाण वाढून त्यांना नोकऱ्या मिळून त्यांचे जीवनमान उंचावू शकते. रोजंदारीवर असल्यामुळे पगार नियमित नसतो त्यामुळे त्यांच्या गरजा वेळेवर पुर्ण होवू शकत नाही. सरकारने त्यांचे पगारासाठी व यांच्या सोयीसाठी महिलांसाठी स्वतंत्र महामंडळ सुरु करुन पगार बँक खात्यात जमा केली पाहिजे. या महिलांसाठी सरकारने ग्रामीण भागाप्रमाणे रोजगार हमी योजना लागू केली पाहिजे म्हणजे त्यांना वर्षातुन काही महिने तरी नियमित काम मिळू शकते व ते संसाराला हातभार लावू शकतील.या बांधकाम मजुर महिला दहा तास बाहेर काम करून देखील घरात काम करतात तेव्हा याचा परिणाम त्यांच्या शरीरावर होत असतो.

सरकारने त्यांच्यासाठी दरमहिना आरोग्यकार्ड तयार करुन यांना जीवनसत्व पुरवणारे खाद्यपदार्थ (सकस आहार योजना) लागू करावी म्हणजे त्यांचे आयुर्मान वाढू शकेल.जर सरकारने या महिलांसाठी घरात पाणी व्यवस्था, लावली व त्यांच्या मुलांना मोफत शिकवणी वर्ग चालवले तर या महिलांचा वेळ वाचवून तो वेळ त्यांच्या स्वत:साठी ठेवून आरोग्याकडे लक्ष देवू शकते. महिलांवर घराचे बरेचसे उत्पन्न हे व्यसनी व्यक्तिवर व त्यांच्या आजारपणावर खर्च होतो. सरकारकडे यांच्यासाठी नियमित जागरुकता कार्यक्रम करुन व्यसनमुक्ती केंद्रे यांच्या परिसरात सुरु ठेवली पाहिजे.या बांधकाम मजुर महिला जरी मोठया प्रमाणात आपल्या नवऱ्यासोबत राहत असतील तरी व्यसनी नवऱ्यांमुळे यांना रोज मारहाण व छळ होत असतो व दुर्देव हे कि पोलीस प्रशासन पुरेसे त्यांच्याकडे लक्ष देत नाही. यासाठी त्यांच्या वस्तीत चौक्या उभारुन त्यांच्या नवऱ्यांना कायद्याचा धाक दाखविला पाहिजे.

जर सरकारने त्यांची नोंद करुन त्यांना ओळखपत्र दिले तर त्यांच्या मुलांना बाहेरगावी गेल्यावर शाळेत प्रवेश मिळून त्यांच्या शिक्षणात खंड पडणार नाही. ही योजना केंद्र शासनाच्या कर्मचाऱ्यांना लागू असते. या मजुरांची शासकीय पातळीवर कोठेही नोंद नसल्यामुळे पगारासंदर्भात योग्य ती अंमलबजावणी होत नाही. ते होण्यासाठी सदर मजुरांसाठी स्वतंत्र महामंडळ तयार करुन त्यांचे पगार त्यांच्या खात्यात शासनामार्फत जमा केले पाहिजे. या महिलांचे तंबाखू व मिसरीचे प्रमाण खूप आहे असते. शासनाने त्यांच्या वस्त्यांमध्ये प्रत्यक्ष जावून व्यसनमुक्तीसाठी प्रबोधन केले पाहिजे.या मजुरांच्या वस्तीत सरकारने जावून मोठ्या प्रमाणात आवास योजना राबवावी कारण बाकीच्या सुविधांप्रमाणे वाहनतळसुद्धा शहरात आवश्यक असते. त्यामुळे वाहनचोरीचे प्रमाण कमी होवू शकते.या बांधकाम मजुर महिला सरकारी मदतीच्या अपेक्षेने मतदारयादीत नाव नोंद करतात. परंतु सरकारी योजना व अधिकारी क्वचितच त्यांच्यापर्यंत पोहचतात. त्यामुळे एक प्रकारे त्यांची फसवणूक चालू असते.

या महिलांच्या कौटुंबिक समस्या निवारण्यासाठी सरकारने काही योजना तयार करुन त्यांच्या वस्तीत समस्या निवारण केंद्र चालु केली पाहिजे. कारण त्या

सरकारपर्यंत सहसा पोहचू शकत नाही. त्यामुळे सरकारने सामाजिक संस्थांनी त्यांच्यापर्यंत पोहचले पाहिजे.या वस्त्यांमध्ये सरकारने रात्रशाळा, शिकवणी वर्ग जर नियमित पणे चालु केले तर या बांधकाम मजुर महिला खुप प्रमाणात शिक्षण घेवू शकतील व आपली प्रगती करु शकतील.

सरकार नियमितपणे यांच्यासाठी योजना राबवत असते परंतु त्यांना कामगार नोंदणीची माहितीच नसल्यामुळे त्यांना त्याचे लाभ मिळू शकत नाही. जर यांच्यासाठी महामंडळ करुन जर यांची केंद्र यांच्या वस्तीत तयार केली तर हे सत्र लाभ या बांधकाम मजुर महिला घेवु शकतील.शासनाने एखादा कृती कार्यक्रम ठरवून काही सामाजिक संस्थांची मदत घेवून त्यांच्या पर्यंत प्रत्यक्ष पोहचले पाहिजे. सरकारी पातळीवरची उदासीनतेमुळे या योजना यशस्वी होत नाही. याचा सरकारने गांभीर्याने विचार केला पाहिजे.

या लोकांपर्यंत सरकार प्रत्यक्ष जात नाही व कार्यक्रम राबवत नाही. जर असे कार्यक्रम राबवले तर नक्कीच यांना सुद्धा विमा संरक्षण सुविधा मिळू शकते व त्यांना काही प्रमाणात मदत होवू शकते.जर सरकारने महामंडळ करुन नियमितपणे कामाचे वाटप रोजगार हमी योजने प्रमाणे केले तर सर्व कामगारांना कामाचे समान वाटप होवून कोणावरही अन्याय होणार नाही व किमान रोजगार उपलब्ध होईल. सरकारने जरी कागदावर या संरक्षण सुविधा पुरविल्या असल्या तरी प्रत्यक्षात काहीच नसते. त्यासाठी संबधित विभागाच्या अधिकाऱ्याने साईटवर जावून नियमित पाहणी केली पाहिजे व जे यात कसूर करीत असतील त्यांच्यावर कठोर कारवाई केली पाहिजे.

या महिलांची नोंद नसल्यामुळे यांनी कोणतीही अधिकृत मदत योजना असतानाही करता येत नाही यासाठी सरकारने महामंडळाव्दारे व बांधकाम व्यावसायिक व मुकादम यांच्या मदतीने त्यांना सरकारी मदत करुन त्यांच्या कुटुंबाने पुनर्वसन केले पाहिजे.जर या महिलांची नोंद झाली तर बांधकाम व्यावसायिक कडून आपण एक ठराविक रक्कम आपत्कालीन निधी म्हणून जमा करु शकते. तो निधी अशा अपघातांमुळे मृतांच्या नातेवाईकांना मदत म्हणून पुरवू शकते. कुठेही नोंद नसल्यामुळे ही सुविधा देता येत नाही. जर महामंडळ नोंद करील तर ही सुविधा सुद्धा देणे शक्य होईल. आपण वृद्ध कामगारांना काही रक्कम पेंन्शन म्हणून पुरवून त्यांना आधार देवू शकतो.

आपण सामाजिक संस्था व सरकारी विभागांव्दारे जनजागृती करुन या योजना त्या कामगारांपर्यंत पोहचवू शकतो परंतु त्यासाठी सरकारने एखादा कार्यक्रम जाहीर केला पाहिजे. जर या महिलांमध्ये जागरुकता वाढली तर नक्कीच कामगार संघटनांव्दारे आपण त्यांना त्यांचे हक्क व अधिकार प्राप्त करुन देवु शकू. जर त्यांना कामाच्या ठिकाणी स्वयंपाकाची जागा उपलब्ध करुन दिली तर ते ताजे अन्न खावू शकतील. त्यांना बाहेरचे अन्न खायची गरज पडणार नाही. पहरणामी त्यांची बचत सुद्धा होवू शकते व ते आजारी पडणार नाहीत.

सरकारने रोजगार हमी योजना जशी ग्रामीण भागात राबविली जाते तशीच योजना शहरात या कामगारासाठी लागू केली पाहिजे. जर आपण कौशल्य विकासाची सोय केली तरी या क्षेत्रात महिलांना प्रगती करण्याची संधी मिळू शकते व त्यामुळे त्यांची आर्थिक प्रगती सुद्धा होवू शकेल. जर यांची नोंदणी झाली तर कामगार संघटना त्यांच्या पाठीशी उभ्या राहू शकतील व त्यांना न्याय मिळू शकेल व त्यांची साताजिक व आर्थिक प्रश्न सोडविण्यास मदत होईल. कामाचे तास हे एकसारखे नसल्यामुळे कामात अनियमितता असते त्यामुळे जर सरकारी योजना कार्यान्वित झाली तर कामाचा जो असमतोल आहे तो दूर होण्यास मदत होईल व सर्वांना काम मिळू शकेल. जर या बांधकाम मजुर महिला दिवसभर जवळ जवळ 10 तास काम करतात तर त्यांना कमीत कमी जेवण व नाष्ट्यासाठी तरी सुट्टी मिळणे अपेक्षित असते. ही तर त्यांची पिळवणूकच असते. सरकारने सुट्टी न देण्याचा त्यांच्या मालकावर कायदेशीर कारवाई केली पाहिजे. त्यांचे

उत्पन्न आधीच अल्प असते. त्यावर हा खाण्यापिण्याचा खर्च म्हणजे उत्पन्नात घटच होते. वास्तविक हा सर्व खर्च बांधकाम व्यावसायिक अथवा मुकादम यांच्याकडून होणे अपेक्षित आहे. जर सरकारने व प्रशासनाने या महिलांमध्ये जनजागृती केली व कायद्याचे यांना ज्ञान दिले तर नक्कीच होणाऱ्या त्रासावर प्रतिबंध लावता येणे शक्य आहे.

सूचना :

महाराष्ट्र शासनाने बांधकाम महिला मजुरांसाठी :

1. स्वतंत्र महामंडळ स्थापन करून या मजुरांची नोंद करावी.
2. स्वतंत्र वसाहती निर्माण करून प्राथमिक सुविधा द्याव्यात.
3. ग्रामीण भागाप्रमाणे रोजगार हमी योजना राबवाव्यात.
4. ओळखपत्र व आरोग्यकार्ड देण्याची व्यवस्था करावी.
5. कौटुंबिक समस्या निवारण केंद्र सुरु करावीत.
6. रात्र शाळा व शिकवणी वर्ग सुरु करावीत.
7. सामाजिक संस्थांच्या मदतीने विकासासाठी नियोजनबध्द कार्यक्रम राबविला पाहिजे.
8. मुलांसाठी कामाच्या ठिकाणी बालसंगोपन केंद्र किंवा पाळणाघराची व्यवस्था करावी.

संदर्भसूची :

1. पुनुस्वामी बी (2016) "शहरी अनौपचारिक क्षेत्रातील कामगारांची सामाजिक आर्थिक परिस्थिती चेन्नई शहरातील बांधकाम कामगारांचा अभ्यास"
2. प्रियांका (२०१२) "गांधीनगर शहरातीलमहिला बांधकाम कामगारांच्या परिस्थितीचा केस स्टडी कुंभार दिलीप राजाराम (२०१२) "कोल्हापूर शहरातील घरबांधणी कामगारांची आर्थिक परिस्थिती." पुराणी रूत्विक (२०२१) "बांधकाम कामगारांच्या विकृती प्रोफाइलचा अभ्यास."
3. बेलिंडा आर (२०१८) "चेन्नईच्या उपशहरीतील स्थलांतरित महिला बांधकाम कामगारांवर एक अभ्यास."
4. मुथुकुमारन आर (२०२१) "बांधकाम उद्योगातील महिला कामगारांचा सामाजिक आर्थिक दृष्टीकोन तामिळनाडूच्या चेन्नई शहराच्या संदर्भात एक अभ्यास."
5. नाडकर्णी एस.ए (२०१७)" पुणे शहरातील १९८५-८६ च्या सर्वेक्षणानुसार इमारत बांधकाम महिला कामगारांचे सामाजिक, आर्थिक सर्वेक्षण"
6. शिवकुमार सी (२०२०) "बांधकाम साइट्ससाठी बांधकाम सुरक्षा आणि अग्नि जोखीम मूल्यांकन प्रणालीची रचना आणि अंमलबजावणी यावर संशोधन अभ्यास " .
7. भारतीय श्रम संभावना आणि समस्या (लेखक-व्ही.बी. कर्णिक)
8. कामगार समस्या आणि समाज कल्याण (लेखक-एस.आर. सक्सेना)
9. भारतातील कामगार समस्या (लेखक-एस.एम. मेहरोत्रा)
10. श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार
11. सेन्सर कमिशन ऑफ इंडीया, भारत सरकार.
12. महिला व बालकल्याण विभाग, महाराष्ट्र शासन.
13. सामाजिक न्याय विभाग, महाराष्ट्र शासन

संकेत स्थळ

1. Director General of Employment & Training.
2. Factories Act 1948.
3. Bidi & Sugar Workers Act 1966.
4. The Mine Act 1952.
5. The Maternity Act 1961.
6. The Building & Construction Act 1961.
7. National Labour Commission.
8. Development Commissioner, Indian Security.

International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.3 No.3 Sept – Oct 2022

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना: एक अध्ययन

रघुबर प्रसाद सिंह[1] **प्रो. (डॉ.) विजय कुमार यादव** [2]
[1]शोधार्थी, विश्वविद्यालय अर्थशास्त्र विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा
[2]विभागाध्यक्ष, विश्वविद्यालय अर्थशास्त्र विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा
***Corresponding Author*- रघुबर प्रसाद सिंह**
Email id: rrajji4@gmail.com

DOI- 10.5281/zenodo.7312711

सारांश:-

भारत में कृषि क्षेत्र को सूखे, बाढ़ और अन्य प्राकृतिक आपदाओं के कारण नुकसान के जोखिम का सामना करना पड़ता है और इसलिए किसानों को किसी भी तरह के नुकसान से बचाना और उन्हें अगले फसल के मौसम के लिए अपनी वित्तीय स्थिति बनाए रखने में सक्षम बनाना अनिवार्य है। कृषि और संबद्ध गतिविधियाँ भारतीय अर्थव्यवस्था के सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से हैं, जो भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का लगभग 16 प्रतिशत है और देश के लगभग आधे कर्मचारियों को रोजगार प्रदान करती है। कृषि क्षेत्र के महत्व को समझते हुए, सरकार द्वारा देश में किसानों के हित में आजादी के बाद से विभिन्न योजनाएं शुरू की गई हैं। हाल ही में शुरू की गई योजना प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई) है, जो 2016 में शुरू की गई "एक राष्ट्र, एक योजना" का एक प्रकार है। पीएमएफबीवाई फसलों की विफलता के खिलाफ व्यापक बीमा कवर प्रदान करती है और बीमाधारक किसान की आय को स्थिर करने में मदद करती है। यह आलेख वर्तमान योजना के वैचारिक ढांचे का अध्ययन करने और देश में पीएमएफबीवाई के लाभों की पहचान करने का एक प्रयास है। यह एक प्रकार का वर्णनात्मक शोध है जो योजना की ख़ासियत और भारतीय किसानों की बेहतरी पर इसके संभावित प्रभावों पर प्रकाश डालता है।

मुख्यशब्द :- पीएमएफबीवाई, प्राकृतिक, रोजगार, योजना, जोखिम, बीमाधारक।

परिचय :-

यह एक निर्विवाद सत्य है कि जो कुछ भी बनाया गया है वह निश्चित रूप से नष्ट हो जाएगा। जिस तरह सृजन या तो "सर्वोच्च शक्ति" या मनुष्यों का कार्य हो सकता है, विनाश भी ईश्वर या मनुष्य का कार्य हो सकता है, चाहे वह जानबूझकर या आकस्मिक हो। निर्माण अनिवार्य रूप से विनाश के बाद होता है। इसलिए जीवन और संपत्ति दोनों में जोखिम मौजूद है। बीमा का मूल उद्देश्य, चाहे वह जीवन बीमा हो या सामान्य बीमा, बीमाधारक को प्रत्याशित जोखिमों की एक श्रृंखला से बचाना है। जो व्यक्ति अपने लिए या अपनी संपत्ति के लिए सुरक्षा लेता है उसे बीमित कहा जाता है, और दूसरा व्यक्ति (मूल रूप से एक पब्लिक लिमिटेड कंपनी) जो नुकसान का भुगतान करने का वादा करके जोखिम लेता है, उसे बीमाकर्ता या आश्वासनकर्ता कहा जाता है। "क्विड प्रो क्वो" का एक कानूनी कहावत है, अर्थात, बदले में कुछ, और बीमित और बीमाकर्ता के बीच यह व्यवस्था एक छोटे से विचार पर आधारित है जिसे पूर्व द्वारा बाद वाले को भुगतान किया जाता है, जिसे प्रीमियम कहा जाता है।

उपरोक्त व्यवस्था को "बीमा के अनुबंध" के रूप में जाना जाता है, जिसे "एक अनुबंध के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसके तहत एक व्यक्ति, जिसे "बीमाकर्ता" कहा जाता है, सहमत प्रतिफल के बदले में, जिसे "प्रीमियम" कहा जाता है, दूसरे को भुगतान करने का वचन देता है। व्यक्ति, जिसे "बीमाकृत" कहा जाता है, किसी निर्दिष्ट घटना के घटित होने पर धन की राशि या उसके समकक्ष। निर्दिष्ट घटना के घटित होने में बीमित व्यक्ति को कुछ नुकसान अवश्य होता है, जिसे बीमा की शब्दावली में "जोखिम" कहा जाता है।

सामान्य बीमा एक ऐसा तंत्र है जिसके द्वारा कुछ लोग जो अपनी संपत्तियों को नुकसान या विनाश के समान स्तर के जोखिम के संपर्क में हैं, जो दुर्घटनाओं,

आग, बाढ़, भूकंप आदि जैसे खतरों के कारण होने की संभावना है, एक साथ आते हैं और सदस्यों में से किसी एक को हुए नुकसान को साझा करने के लिए सहमत हैं। दूसरे शब्दों में, सदस्यों का नुकसान उन सभी के बीच फैला हुआ है।

पीएमएफबीवाई बीमा उद्योग के सामान्य बीमा क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले किसानों के लाभ के लिए एक अभिनव योजना है। यह योजना पैनल में शामिल सामान्य बीमा कंपनियों द्वारा कार्यान्वित की जाती है। कार्यान्वयन एजेंसी (आईए) का चयन संबंधित राज्य सरकार द्वारा बोली की प्रक्रिया के माध्यम से किया जाता है। पीएमएफबीवाई फसल ऋण सुविधा प्राप्त करने वाले या अधिसूचित फसलों के लिए किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) खाता खोलने वाले किसानों के लिए आवश्यक है। पीएमएफबीवाई को कृषि मंत्रालय द्वारा प्रशासित किया जा रहा है। पीएमएफबीवाई एक ऐसी योजना है जो बीमा उद्योग के सामान्य बीमा क्षेत्र के दायरे में आती है।

पीएमएफबीवाई: योजना का अवलोकन

पीएमएफबीवाई को 18 फरवरी, 2016 को वर्तमान एनडीए सरकार द्वारा अपने पहले कार्यकाल में लॉन्च किया गया था। इस योजना को वर्ष 2016-17 के लिए 5,500 करोड़ रुपये का प्रारंभिक बजट आवंटित किया गया था। इसी तरह, वर्ष 2017-18 और 2018-19 में इस योजना के लिए क्रमशः 9,000 करोड़ रुपये और 13,000 करोड़ रुपये की राशि आवंटित किए गए थे। वर्ष 2019-20 के अंतरिम बजट में 14,000 करोड़ रुपये वर्ष रुपये आवंटित किए हैं। इस योजना में पिछली सभी योजनाओं, अर्थात राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना (एनएआईएस)और संशोधित एनएआईएस (एमएनएआईएस) के लाभ शामिल हैं और इसे किसानों पर फसल बीमा के बोझ को कम करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

पीएमएफबीवाई योजना के उद्देश्य:-

विभिन्न प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों और अन्य आपदाओं के कारण फसलों का नुकसान भारतीय कृषि क्षेत्र का एक दुर्भाग्यपूर्ण हिस्सा था। हमारे किसानों, विशेष रूप से सीमांत और भूमिहीन किसानों को इन जोखिमों और अनिश्चितताओं से बचाने के लिए, उन्हें कुछ संस्थागत सरकारी व्यवस्थाओं के तहत कवर करना एक आवश्यक कदम था। कमाई की न्यूनतम लागत पर उनके जीवित रहने के लिए भी उनकी कृषि उपज से एक गारंटीकृत आय की आवश्यकता होती है। इन सब को ध्यान में रखते हुए उक्त योजना की शुरुआत भारत सरकार द्वारा की गई थी।

योजना के मुख्य उद्देश्यों का संक्षेप में वर्णन करने वाले बिंदु निम्नलिखित हैं:

1. प्राकृतिक आपदाओं, कीटों या बीमारियों के परिणामस्वरूप अधिसूचित फसलों में से किसी की विफलता की स्थिति में किसानों को बीमा कवरेज और वित्तीय सहायता प्रदान करना।
2. खेती में निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए किसानों की आय को स्थिर करने के लिए।
3. किसानों को नवीन और आधुनिक कृषि पद्धतियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना।
4. कृषि क्षेत्र को ऋण का प्रवाह सुनिश्चित करना।

पीएमएफबीवाई की विशेषताएं:-

योजना की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं:

1. **किसानों का कवरेज:** इस योजना में किसान क्रेडिट कार्ड आदि के माध्यम से संस्थागत ऋण प्राप्त करने वाले किसानों को शामिल किया गया है और उन्हें "ऋणी किसान" कहा जाता है, जो किसान स्वैच्छिक आधार पर बीमा कवर का लाभ उठाते हैं और उन्हें "गैर-ऋणी किसान" कहा जाता है। कर्जदार किसान, और बटाईदार किसानों के लिए यह योजना अनिवार्य है।
2. **फसलों का कवरेज:** फसलों को अधिसूचित करने की जिम्मेदारी रबी और खरीफ दोनों मौसमों के लिए राज्य सरकारों की होती है। फसलों को प्रमुख फसलों और अन्य फसलों में वर्गीकृत किया जाएगा।
3. **प्रीमियम दरें:** खरीफ फसलों के लिए बीमा राशि का 2 प्रतिशत एक समान प्रीमियम और रबी फसल के लिए बीमा राशि का 1.5 प्रतिशत निर्धारित किया गया है। वार्षिक वाणिज्यिक और बागवानी फसलों के लिए प्रीमियम की दर बीमा राशि का 5 प्रतिशत या बीमांकिक दर, जो भी कम हो।
4. **बीमा इकाई:** यह योजना क्षेत्र आधारित दृष्टिकोण पर कार्य करती है। बीमा इकाई एक गांव या एक ग्राम पंचायत या समकक्ष इकाई हो सकती है, जैसा कि राज्य सरकार की अधिसूचना में अधिसूचित है।
5. **नवीन प्रौद्योगिकी का उपयोग:** योजना में प्रौद्योगिकी के उपयोग को प्रोत्साहित किया गया है। किसानों के लिए दावा निपटान में देरी को कम करने के लिए डेटा को अपलोड करने के लिए स्मार्ट फोन का उपयोग करने का प्रस्ताव किया गया है। फसल काटने के प्रयोगों (सीसीई) की संख्या को कम

करने के लिए रिमोट सेंसिंग और ड्रोन का उपयोग किया जाएगा और किसानों के लिए दावा निपटान में देरी को कम करने के लिए कवरेज में विसंगतियों को दूर करने और डेटा अपलोड करने के लिए भी उपयोग किया जाएगा। रिमोट सेंसिंग और ड्रोन का उपयोग फसल काटने के प्रयोगों (सीसीई) की संख्या को कम करने और किसी क्षेत्र के कवरेज में विसंगतियों को दूर करने के लिए भी किया जाएगा।

6. **बीमा कंपनी के लिए क्लस्टर दृष्टिकोण:** योजना के तहत एक क्लस्टर दृष्टिकोण अपनाया जाएगा, जिसमें प्रतिस्पर्धी बोली प्रक्रिया के माध्यम से तीन साल की अवधि के लिए एक बीमा कंपनी को जिलों का एक समूह आवंटित किया जाएगा।

निष्कर्ष:-

विभिन्न प्राकृतिक और मानव निर्मित आपदाओं और कृषि उत्पादन के लिए इनपुट के वित्तपोषण के कारण किसानों की आय हानि की भरपाई के लिए एक कुशल फसल बीमा योजना बहुत जरूरी है। फसल बीमा किसानों की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है, जो बदले में अर्थव्यवस्था के कृषि क्षेत्र को बढ़ावा देगा। उक्त योजना, पीएमएफबीवाई, निश्चित रूप से किसानों को इसकी कम प्रीमियम दरों और बीमा फसलों के पर्याप्त कवरेज से लाभान्वित करेगी। यह योजना फसल कटाई के बाद के नुकसान के लिए भी कवरेज प्रदान करती है, जो पूर्ववर्ती योजनाओं में पूरी तरह से कवर नहीं थे। एक तुलनात्मक अध्ययन से पता चलता है कि फसल बीमा के क्षेत्र में पीएमएफबीवाई निस्संदेह पहले की तुलना में बेहतर योजना है। लेकिन, भारत जैसे देश में, पीएमएफबीवाई जैसी योजना को डिजाइन करना और लॉन्च करना देश में किसानों की भलाई के लिए अंतिम अंत नहीं है। योजना का फल उसके सफल क्रियान्वयन के बाद ही लिया जा सकता है। कृषि के क्षेत्र में मौजूदा और अनसुलझी समस्याएं, जैसे त्रुटिपूर्ण भूमि शीर्षक, खराब भूमि रिकॉर्ड, और दावों के निपटान में भ्रष्टाचार, कुछ परिचित चुनौतियां हैं जो लंबे समय से मौजूद हैं और उक्त योजना का कार्यान्वयन सफल होने में बाधाएं पैदा करेंगी। इसलिए, सरकार की ओर से योजना की कड़ी निगरानी और पर्यवेक्षण की आवश्यकता है, जिससे किसान समुदाय के हर कोने को उक्त योजना का पूरा लाभ उठाने में सक्षम बनाया जा सके।

संदर्भ सूची:-

1. घोष, रंजन कुमार (2018), "प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई) का प्रदर्शन मूल्यांकन," भाग I, कृषि प्रबंधन केंद्र, आईआईएम-ए।
2. इंद्रजीत (2016), "किसानों के लिए फसल बीमा योजना के लाभों पर अध्ययन"
3. घंघास, भरत सिंह (2018), "हरियाणा राज्य के किसानों के बीच प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की जागरूकता"
4. राय, रुचिबाह (2019), "प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना: भारत की फसल बीमा योजना का एक आकलन," ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन।
5. आईआरडीएआई द्वारा प्रकाशित भारतीय बीमा सांख्यिकी 2016-17 पर हैंडबुक
6. https://pmfby.gov.in
7. https://financialservices.gov.in
8. https://data.gov.in

Chief Editor

P. R. Talekar

Secretary,

Young Researcher Association, Kolhapur(M.S), India

Editorial & Advisory Board

Dr. S. D. Shinde	Dr. M. B. Potdar	Dr. P. K. Pandey
Dr. L. R. Rathod	Mr. V. P. Dhulap	Dr. A. G. Koppad
Dr. S. B. Abhang	Dr. S. P. Mali	Dr. G. B. Kalyanshetti
Dr. M. H. Lohgaonkar	Dr. R. D. Bodare	Dr. D. T. Bornare